F:\ Final\IPCC-CA\ Account Vol. I (Hindi)\Chp-11.pmd.\Ist\13-07-2011/ Ramendra
K:\IPCC-CA\ Account Vol. I (Hindi)\Chp-11.pmd\IInd\15-7-11\C_SKChauhan
F:\Final\IPCC-CA\ Account Vol. I (Hindi)\Chp-11.pmd\IIIrd\18-7-11\Ramendra

11

किराया क्रय एवं किश्त विक्रय सौदे

[HIRE PURCHASE AND INSTALMENT SALE TRANSACTIONS]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- किराया क्रय सौदों की प्रकृति एवं उनकी प्रमुख विशेषताएं समझने में।
- किराया क्रय प्रविष्टियों को किराया खाता एवं किराया विक्रेता दोनों की पुस्तकों में अभिलिखित करने में।
- किराया क्रय के लिए लेखांकन की विभिन्न विधियां जैसे देनदार विधि एवं स्कन्ध एवं देनदार विधि का अध्ययन करने में।
- दी गई सूचना के आधार पर विभिन्न वांछित विलुप्त मूल्यों का पता लगाने में जब किराया क्रय सौदों का लेखा करना हो।
- पुनर्अधिकृत माल के मूल्य की गणना एवं अभिलेखन करने में तथा ऐसे माल के पुनः विक्रय पर लाभ की भी गणना करने में।
- किराया क्रय व्यापारिक खाता बनाने एवं ऐसे सौदों पर लाभ की गणना करने में।
- छोटे मूल्य के माल के किराया क्रय पर लाभ का मूल्यांकन करने में।
- किश्त भुगतान पद्धति, एवं यह कैसे किराया क्रय सौदों से भिन्न है, को भी समझने में।

1. प्रस्तावना
(INTRODUCTION)

बेहतर जीवन के लिए बढ़ रही मांग के साथ ही माल की खपत सापेक्षित आकार में बढ़ गयी है। परन्तु पर्याप्त क्रय शक्ति द्वारा प्रोत्साहन न मिलने पर इसके प्रभावी मांग के रूपान्तरण अर्थात् वस्तु की वास्तविक बिक्री या तय किए गए मूल्य पर की जाती हैं। इसी के लिए बनाए गए बाजार को किराया क्रय कहते है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

जब कोई व्यक्ति एक सम्पत्ति प्राप्त करना चाहता है लेकिन एक निर्धारित अवधि के अन्तर्गत भुगतान कर पाने के लिए निश्चत नहीं होता वह विक्रेता की सहमति से किश्तों में भुगतान कर सकता है। यह क्रेता को सम्पति के प्रयोग के लिए योग्य बनाता है जब एक सहमत निर्धारित अवधि में किश्तों में भुगतान होता है। व्यापार के इस प्रकार के व्यवहार को किराया क्रय सौदों के नाम से जाना जाता है। यहां, ग्राहक पूरी राशि का भुगतान मासिक, त्रैमासिक, अर्ध-वार्षिक या वार्षिक किश्तों में करता है, जबकि सम्पति पर विक्रेता का अधिकार तब तक बना रहता है जब तक की क्रेता अपने पूरे दायित्व राशि का भुगतान न कर दें। विक्रेता के लिए समस्त किश्तों की राशि, जिसमें क्रेता को उधार दी गई सम्पत्तियों पर ब्याज की राशि शामिल है, प्राप्त होती हैं। अतएवं निर्धारित अवधि के अन्दर किश्तों में भुगतान की गई सम्पूर्ण राशि निश्चित रूप से नकद भुगतान राशि से अधिक होती है क्योंकि उसमें ब्याज लगाया जाता है।

स्पष्टतः दोनों पार्टी ही इससे लाभ उठाती हैं। इस प्रकार से क्रेता को सम्पत्ति के प्रयोग का अधिकार तत्काल किया जाता है। इस प्रकार वह एक ही विक्रेता से उत्पाद एवं उधार दोनों प्राप्त कर लेता है। विक्रेता के दृष्टिकोण से वह विक्रय में वृद्धि करने के साथ ही अपने उधार को भी वसूल कर लेता है।

2. किराया क्रय अनुबन्ध की प्रकृति
(NATURE OF HIRE PURCHASE AGREEMENT)

किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत, किराया क्रेता आउटसेट माल का अधिकार लेकर उसे प्रयोग कर सकता है, जब इसका भुगतान भुगतान अनुबन्ध के अनुसार निर्दिष्ट समयावधि में किश्तों में करता है। यद्यपि माल का स्वामित्व किराया विक्रेता के पास तब तक रहता है जब तक कि पूरी किश्तों का भुगतान न कर दे।

किराया क्रेता द्वारा भुगतान की गई प्रत्येक किश्त सम्पत्ति के प्रयोग हेतु किराये की वसूली की तरह समझी जाती है। यदि वह किसी भी किश्त (आखिरी किश्त भी) का भुगतान करने में असफल रहता है, तो किराया विक्रेता अपने माल को बिना किसी क्षतिपूर्ति दिये वापिस ले लेगा अर्थात् किराया विक्रेता क्रेता से चूक की तिथि तक किश्तों में प्राप्त किसी भी राशि के पूरे या एक भाग को वापस करने का दायी नहीं है।

3. किराया क्रय अनुबन्ध की प्रमुख विशेषताएं
(SPECIAL FEATURES OF HIRE PURCHASE AGREEMENT)

1. **अधिकार** (Possession)—किराया विक्रेता किराया क्रय संविदा करने के तुरन्त बाद ही किराया क्रेता को केवल वस्तु का अधिकार हस्तांतरित कर देता है।

2. **किश्तें** (Instalments)—किराया विक्रेता द्वारा माल की सुपुर्दगी इस शर्त पर की जाती है कि एक किराया क्रेता को एक अवधिगत किश्त में राशि का भुगतान करना चाहिये।

3. **तत्काल भुगतान** (Down Payment)—किराया क्रेता सामान्यतः अनुबन्ध पर हस्ताक्षर पर एक तत्काल भुगतान अर्थात् एक राशि का भुगतान करता है।

4. **किराया क्रय किश्तों का सारभूत अंश** (Constituents of Hire Purchase Instalments)—प्रत्येक किश्त में वित्तीय शुल्क (ब्याज) का कुछ भाग एवं पूँजी भुगतान का कुछ भाग शामिल है।

5. **स्वामित्व** (Ownership)—अनुबन्ध के अधीन उसको प्रदत्त विकल्प के प्रयोग सम्बन्धी अधिकार तथा अन्तिम किश्त भुगतान के बाद किराया क्रेता को वस्तु सम्पत्ति के तौर पर सौंप दी जाती है।

6. **पुनर्स्वामित्व** (Repossession)—किश्त भुगतान के सम्बन्ध में चूक होने पर, चाहे अन्तिम किश्त हो, किराया विक्रेता को बिना कोई क्षतिपूर्ति किये वस्तु को वापस लेने का अधिकार होता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. किराया क्रय सौदों की लेखांकन व्यवस्थाएँ

(ACCOUNTING ARRANGEMENTS OF HIRE PURCHASE TRANSACTION)

किराया क्रय सौदों हेतु लेखांकन की विधि विक्रय के मूल्य पर निर्भर करती है। यदि माल का विक्रय मूल्य अधिक है तो ये लेखांकन विधियाँ अपनायी जा सकती हैं—(i) नकद मूल्य विधि (ii) ब्याज उच्चन्त विधि। माल के छोटे विक्रय मूल्य के लिये ये किराया क्रय लेखांकन हो सकती हैं—(i) देनदार विधि, (ii) स्कन्ध एवं देनदार विधि।

किराया क्रय आधार पर ली गई सम्पत्ति को सामान्य क्रय की तरह माना जाना चाहिये। फिर भी यह आवश्यक है कि वर्गीकरण द्वारा इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया जाए कि ''किराया क्रय पर सम्पत्ति''। इसके अनुसार किराया विक्रेता सम्बन्धी शेष भुगतान राशि भी उसकी पुस्तकों में दायित्व में ''किराया क्रय किश्त देय हुई एवं किराया क्रय किश्त जो अभी देय न हुई हों'' की राशि को वर्गीकरण करके ''किराया क्रय लेनदार'' के रूप में दिखाना चाहिये।

4.1 किराया क्रेता की पुस्तकों में (In the Books of Hire Purchaser)

4.1.1 नकद मूल्य विधि (Cash price method)—इस विधि के अन्तर्गत, सम्पूर्ण नकद मूल्य सम्पत्ति खाते में डेबिट और किराया विक्रेता के खाते में क्रेडिट की जाती है (अदत्त राशि पर ब्याज सहित)। जब किश्त का भुगतान किया जाता है, तो किराया विक्रेता खाते को डेबिट और बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है। अन्तिम खाते तैयार करते समय ब्याज को लाभ–हानि खाते में अन्तरित किया जाता है तथा सम्पत्ति से मूल्य ह्रास घटाकर सम्पत्ति को चिट्ठे में दिखाया जाता है। किराया विक्रेता का अदत्त शेष चिट्ठे में दायित्व के रूप में दिखाया जाता है (वैकल्पिक रूप से सम्पत्ति खाते से कटौती के रूप में दिखाया जा सकता है)।

किराया क्रय पर प्राप्त की गई सम्पत्ति पर मूल्य ह्रास की गणना नकद मूल्य पर की जानी चाहिये।

लेखांकन (Accounting)—समुचित लेखांकन अभिलेख रखने के लिए, प्रत्येक को जानकारी होनी चाहिये—(i) सम्पत्ति की क्रय तिथि, (2) सम्पत्ति का नकद मूल्य, (3) सम्पत्ति का किराया क्रय मूल्य, (4) तत्काल भुगतान की राशि, (5) प्रत्येक किश्त की राशि और संख्या, (6) ब्याज की दर, (7) ह्रास की दर और विधि, (8) प्रत्येक किश्त के भुगतान की तिथि और (9) खाता बही बन्द होने की तिथि।

Journal Entries

1.	*On entering into the agreement*		
	Asset Account	Dr.	[Full cash price]
	To Hire Vendor Account		
2.	*When down payment is made*		
	Hire Vendor Account	Dr.	[Down payment]
	To Cash/Bank Account		
3.	*When an instalment becomes due*		
	Interest Account	Dr.	[Interest on outstanding balance]
	To Hire Vendor Account		

© The Institute of Chartered Accountants of India

4.	*When an instalment is paid*		
	Hire Vendor Account	Dr.	[Amount of instalment]
	To Bank Account		
5.	*When depreciation is charged on the asset*		
	Depreciation Account	Dr.	[Calculated on cash price]
	To Asset Account		
6.	*For closing interest and depreciation account*		
	Profit and Loss Account	Dr.	
	To Interest Account		
	To Depreciation Account		

तथापि एक फर्म किराया क्रय सम्पत्ति खाते में मूल्य ह्रास की प्रभारित राशि दिखाने के स्थान पर मूल्य ह्रास खाते हेतु प्रावधान कर सकती है।

इस मामले में जर्नल प्रविष्टि होगी—

Profit and Loss A/c Dr.

To Provision for Depreciation for Asset on Hire Purchase A/c

और तब किराया क्रय पर सम्पत्ति को उसके ऐतिहासिक मूल्य पर दिखाया जाता है।

चिट्ठे में प्रकट करना

सम्पत्तियाँ—

स्थिर सम्पत्तियाँ

सम्पत्ति (नकद मूल्य पर) .....

घटाया : मूल्य ह्रास .....

.....

लेनदार—

किराया क्रय लेनदार :

किराया विक्रेता खाते में शेष .....

देय किश्तें .....

अभी तक देय न हुई किश्तें .....

उदाहरण (Illustration) **1**

1 जनवरी, 2006 को, एच. पी. एण्ड क. ने एफ. एम. एण्ड क. लिमिटेड ने किराया क्रय पर एक पिक-अप वैन प्राप्त की। संविदा की शर्तें निम्न थीं—

(अ) वैन का नकद मूल्य 1,00,000 ₹ था।

(ब) संविदा के हस्ताक्षर पर 40,000 ₹ भुगतान किये जाने थे।

(स) बकाया का भुगतान 20,000 ₹ में ब्याज जोड़कर वार्षिक राशि में किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(द) अदत्त राशि पर ब्याज 6% वार्षिक जोड़ना था।

(य) मूल्य ह्रास 20% वार्षिक, सीधी रेखा विधि से अपलिखित करना है।

आपसे अपेक्षित है—

(अ) एच. पी. एण्ड क. की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा 1 जनवरी, 2006 से 31 दिसम्बर, 2008 तक सम्बन्धित खाते दीजिये।

(ब) 31 दिसम्बर, 2006 से 2008 तक क्रेता के चिट्ठे में सम्बन्धित मदों को दिखाइये।

समाधान (Solution)

In the Books of HP & Co.

Journal

Date	*Particulars*		*Dr.* ₹	*Cr.* ₹
2006	Pick-up Van A/c	Dr.	1,00,000	
Jan. 1	To FM & Co. Ltd. A/c			1,00,000
	(Being the purchase of a pick-up van on hire purchase from FM & Co. Ltd.)			
Jan. 1	FM & Co. Ltd. A/c	Dr.	40,000	
	To Bank A/c			40,000
	(Being the amount paid on signing the H. P.contract)			
Dec. 31	Interest A/c	Dr.	3,600	
	To FM & Co. Ltd. A/c			3,600
	(Being the interest payable @ 6% on ₹ 60,000			
	FM & Co. Ltd. A/c (₹ 20,000 + ₹ 3,600)	Dr.	23,600	
	To Bank A/c			23,600
	(Being the payment of 1st instalment along with interest)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	10,000	
	To Pick-up Van A/c			10,000
	(Being the depreciation charged @ 10% p.a. on ₹ 1,00,000)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	13,600	
	To Depreciation A/c			10,000
	To Interest A/c			3,600
	(Being the depreciation and interest transferred to Profit and Loss Account)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

2007	Interest A/c	Dr.	2,400	
Dec. 31	To FM & Co. Ltd. A/c			2,400
	(Being the interest payable @ 6% on ₹ 40,000)			
	FM & Co. Ltd. A/c (₹ 20,000 + ₹ 2,400)	Dr.	22,400	
	To Bank A/c			22,400
	(Being the payment of 2nd instalment along with interest)			
	Depreciation A/c	Dr.	10,000	
	To Pick-up Van A/c			10,000
	(Being the depreciation charged @ 10% p.a.)			
	Profit & Loss A/c	Dr.	12,400	
	To Depreciation A/c			10,000
	To Interest A/c			2,400
	(Being the depreciation and interest charged to Profit and Loss Account)			
2008	Interest A/c	Dr.	1,200	
Dec. 31	To FM & Co. Ltd. A/c			1,200
	(Being the interest payable @ 6% on ₹ 20,000)			
	FM & Co. Ltd. A/c (₹ 20,000 + ₹ 1,200)	Dr.	21,200	
	To Bank A/c			21,200
	(Being the payment of final instalment along with interest)			
	Depreciation A/c	Dr.	10,000	
	To Pick-up Van A/c			10,000
	(Being the depreciation charged @ 10% p.a. on ₹ 1,00,000)			
	Profit & Loss A/c	Dr.	11,200	
	To Depreciation A/c			10,000
	To Interest A/c			1,200
	(Being the interest and depreciation charged to Profit and Loss Account)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

Ledger of HP & Co. Ltd.

Dr. **Pick-up Van Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
1.1.2006	To FM & Co.		31.12.2006	By Depreciation A/c	10,000
	Ltd. A/c	1,00,000	31.12.2006	By Balance c/d	90,000
		1,00,000			1,00,000
1.1.2007	To Balance b/d	90,000	31.12.2007	By Depreciation A/c	10,000
			31.12.2007	By Balance c/d	80,000
		90,000			90,000
1.1.2008	To Balance b/d	80,000	31.12.2008	By Depreciation A/c	10,000
			31.12.2008	By Balance c/d	70,000
		80,000			80,000

Dr. **FM & Co. Ltd. Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
1.1.06	To Bank A/c	40,000	1.1.06	By Pick-up Van A/c	1,00,000
31.12.06	To Bank A/c	23,600		By Interest c/d	3,600
31.12.06	To Balance c/d	40,000			
		1,03,600			1,03,600
21.12.07	To Bank A/c	22,400	1.1.07	By Balance b/d	40,000
31.12.07	To Balance c/d	20,000	31.12.07	By Interest A/c	2,400
		42,400			42,400
31.12.08	To Bank A/c	21,200	1.1.08	By Balance b/d	20,000
			31.12.08	By Interest A/c	1,200
		21,200			21,200

Dr. **Depreciation Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
31.12.2006	To Pick-Van A/c	10,000	31.12.2006	By Profit & Loss A/c	10,000
31.12.2007	To Pick-up Van A/c	10,000	31.12.2007	By Profit & Loss A/c	10,000
31.12.2008	To Pick-up Van A/c	10,000	31.12.2008	By Profit & Loss A/c	10,000

Dr. **Interest Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	Date	Particulars	₹
31.12.2006	To FM & Co. Ltd. A/c	3,600	31.12.2006	By Profit & Loss A/c	3,600
31.12.2007	To FM & Co. Ltd. A/c	2,400	31.12.2007	By Profit & Loss A/c	2,400
31.12.2008	To FM & Co. Ltd. A/c	1,200	31.12.2008	By Profit & Loss A/c	1,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

Balance Sheet of Gopinath & Co. as at 31st December, 2006

Liabilities	₹	*Assets*	₹
FM & Co. Ltd.	40,000	Pick-up Van	90,000

Balance Sheet of Gopinath & Co. as at 31st December, 2007

Liabilities	₹	*Assets*	₹
FM & Co. Ltd.	20,000	Pick-up Van	80,000

Balance Sheet of Gopinath & Co. as at 31st December, 2008

Liabilities	₹	*Assets*	₹
FM & Co. Ltd.	20,000	Pick-up Van	70,000

4.1.2. ब्याज उच्चन्त विधि (Interest suspense method)—इस विधि के अन्तर्गत, सम्पत्ति के स्वामित्व के हस्तांतरण के समय कुल अनुपार्जित ब्याज को ब्याज उच्चन्त खाते में हस्तांतरित किया जाता है बाद के वर्षों में जब कभी ब्याज देय होता है तब ब्याज खाते को डेबिट एवं ब्याज उच्चन्त खाते को क्रेडिट किया जाता है।

जर्नल प्रविष्टि
(Journal Entries)

1.	*When the asset is acquired on hire purchase*		
	Asset Account	Dr.	[Full cash price]
	To Hire Vendor Account		
2.	*For total interest payment is made*		
	H. P. Interest Suspense Account	Dr.	[Total interest]
	To Hire Vendor Account		
3.	*When down payment is made*		
	Hire Vendor Account	Dr.	
	To Bank Account		
4.	For Interest of the relevant period		
	Interest Account	Dr.	[Interest of the relevant period]
	To H. P. Interest Suspense Account		
5.	When an instalment is paid		
	Hire Vendor Account	Dr.	
	To Bank Account		
6.	*When depreciation is charged on the asset*		
	Depreciation Account	Dr.	[Calculated cash price]
	To Asset Account		

© The Institute of Chartered Accountants of India

7. *For closing interest and depreciation account*

Profit and Loss Account	Dr.	
To Interest Account		
To Depreciation Account		

उदाहरण (Illustration) **2**

यदि हम इस विधि का प्रयोग उदाहरण 1 से अंकों को लेकर करें; तो किराया क्रय खाता, ब्याज उच्चन्त खाता, ब्याज खाता एवं एफ. एम. एण्ड कं. लिमिटेड खाता एवं चिट्ठा निम्न प्रकार तैयार किया जाएगा—

समाधान (Solution)

H. P. Interest Suspense Account

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
1.1.2006	To FM & Co. Ltd. A/c (Note 1)	7,200	31.12.2006	By Interest A/c	3,600
			31.12.2006	By Balance c/d	3,600
		7,200			7,200
1.1.2007	To Balance b/d	3,600	31.12.2007	By Interest A/c	2,400
			31.12.2007	By Balance c/d	1,200
		3,600			3,600
1.1.2008	To Balance b/d	1,200	31.12.2008	By Interest A/c	1,200

Dr. **Interest Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
31.12.2006	To H. P. Interest Suspense A/c	3,600	31.12.2006	By Profit & Loss A/c	3,600
31.12.2007	To H. P. Interest Suspense A/c	2,400	31.12.2007	By Profit & Loss A/c	2,400
31.12.2008	To H. P. Interest Suspense A/c	1,200	31.12.2008	By Profit & Loss A/c	1,200

Dr. **FM & Co. Ltd. Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
1.1.2006	To Bank A/c	40,000	1.1.2006	By Pick-up Van A/c	1,00,000
31.12.2006	To Bank A/c	23,600	1.1.2006	By H. P. Interest Suspense A/c	7,200
31.12.2006	To Balance c/d	43,600			
		1,07,200			1,07,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

31.12.2007	To Bank A/c	22,400	1.1.2007	By Balance b/d	43,600
31.12.2007	To Balance c/d	21,200			
		43,600			43,600
31.12.2008	To Bank A/c	21,200	1.1.2008	By Balance b/d	21,200

Balance Sheet of HP & Co. Ltd. as at 31st December, 2006

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
FM & Co. Ltd.	43,600		Pick-up Van	1,00,000	
Less : H. P. Interest Suspense	3,600		*Less* : Depreciation	10,000	90,000

Balance Sheet of HP & Co. Ltd. as at 31st December, 2007

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
FM & Co. Ltd.	21,200		Pick-up Van	90,000	
Less : H. P. Interest	1,200	20,000	*Less :* Depreciation	10,000	80,000

Balance Sheet of HP &Co. Ltd. as at 31st December, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
			Pick-up Van	80,000	
			Less : Depreciation	10,000	70,000

Working Notes : (1) Total Interest = ₹ 3,600 + ₹ 2,400 + ₹ 1,200 = ₹ 7,200.

4.2. किराया/विक्रेता की पुस्तकें (Books of the Hire Vendor)

विक्रेता की पुस्तकों में किराया क्रय सौदों को अभिलिखित करने के विभिन्न विधियाँ हैं। इसका चयन, बेची वस्तु के प्रकार व मूल्य, सौदों की मात्रा, क्रय के अवधि की लम्बाई, आदि के अनुसार किया जाता है। विभिन्न विधियों की नीचे चर्चा की गई है—

4.2.1. विक्रय विधि (Sales Method)—एक व्यवसाय जो कि किराया क्रय पर सम्बन्धित बड़ी वस्तुओं को बेचता है, इस विधि को अपना सकता है। इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रय–विक्रय को उधार विक्रय समझा जाता है। इसका केवल ये अपवाद है कि विक्रेता किश्तों में भुगतान स्वीकार्य करने के लिए सहमत होता है तथा इसके लिये वह ब्याज वसूल करता है। सामान्यतः एक विशेष दैनिक विक्रय पुस्तक, किराया क्रय संविदा के अन्तर्गत सूची विक्रय के अभिलेखन हेतु रखी जाती है। वर्ष के अन्त में किराया क्रेता से देय धनराशि चिट्ठे में, किराया क्रय देनदारों के रूप में सम्पत्ति पक्ष में दिखाई जाती है।

जर्नल प्रविष्टियाँ
(Journal Entries)

1.	*When goods are sold and delivered under hire purchase*		
	Hire Purchaser Account	Dr.	[Full cash price]
	To H. P. Sales Account		
2.	*When the down payment is received*		
	Bank Account	Dr.	
	To Hire Purchaser Account		

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. *When an instalment becomes due*

Hire Purchaser Account	Dr.	
To Interest Account		

4. *When the amount of instalment is received*

Bank Account	Dr.	
To Hire Purchaser Account		

5. *For closing interest Account*

Interest Account	Dr.	
To Profit and Loss Account		

6. *For closing Hire Purchase Sales Account*

H. P. Sales Account	Dr.	
To Trading Account		

इस सम्बन्ध में छात्रों को निम्न पर ध्यान देना चाहिये—

(i) किराया क्रय संविदा के अन्तर्गत विक्रय पर पूरे लाभ को जिस वर्ष विक्रय किया गया है उस वर्ष के लाभ–हानि खाते में क्रेडिट किया जाता है।

(ii) प्रत्येक लेखांकन अवधि से सम्बन्धित ब्याज को उस वर्ष के लाभ–हानि खाते में क्रेडिट करना चाहिये।

4.2.2 ब्याज उच्चन्त विधि (Interest Suspense Method)—यह विधि भी ब्याज के लिये लेखांकन को छोड़कर विक्रय विधि की तरह ही है। इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रेता को विक्रय मूल्य जिसमें सम्पूर्ण नकद मूल्य और ब्याज (कुल) सम्मिलित है, से डेबिट किया जाता है। किराया क्रय–विक्रय खाता व ब्याज उच्चन्त खाते को क्रेडिट किया जाता है। जब किश्त प्राप्त होती है, बैंक खाते को डेबिट एवं किराया क्रय खाते को क्रेडिट किया जाता है, उसी समय ब्याज की नियोजित राशि (अर्थात् सम्बन्धित लेखांकन अवधि के लिये ब्याज) को ब्याज उच्चन्त खाते से हटाकर ब्याज खाते में क्रेडिट कर देते हैं। अन्तिम खाते तैयार करते समय, ब्याज को लाभ–हानि खाते के क्रेडिट में हस्तांतरित कर दिया जाता है। ब्याज उच्चन्त खाते की बकाया राशि किराया क्रय देनदार से कटौती के रूप में, चिट्ठे में दिखायी जाती है।

जर्नल प्रविष्टियाँ

(Journal Entries)

1. *When goods are sold and delivered under hire purchase*

Hire Purchase Account	Dr.	[Full cash price + total interest]
To H. P. Sales Account		[Full cash price]
To Interest Suspense Account		[Total Interest]

2. *When down payment/instalment is received*

Bank Account	Dr.	
To Hire Purchaser Account		

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. *For interest of the relevant accounting period*

	Interest Suspense Account	Dr.
	To Interest Account	

4. *For closing interest Account*

	Interest Account	Dr.
	To Profit and Loss Account	

5. *For closing Hire Purchase Sales Account*

	H. P. Sales Account	Dr.
	To Trading Account	

सम्बन्धित पार्टियों के चिट्ठे को इस तरह प्रकट किया जाएगा—

किराया क्रेता का चिट्ठा	**विक्रेता का चिट्ठा**
सम्पत्तियाँ	सम्पत्तियाँ
स्थायी सम्पत्तियाँ	चालू सम्पत्तियाँ
किराया क्रय पर ली सम्पत्तियाँ	किराया क्रय देनदार
जोड़ें : ब्याज उच्चन्त खाते का शेष	घटाएँ : ब्याज उच्चन्त खाते का शेष
घटाएँ : मूल्य ह्रास	

उदाहरण (Illustration) **3**

X लिमिटेड ने किराया क्रय पद्धति पर प्रत्येक 75,000 ₹ लागत की 3 मिल्क वैन्स सुपर मोटर्स से खरीदीं। भुगतान इस प्रकार किया जाता था—45,000 ₹ तत्काल तथा बकाया 9% ब्याज सहित 3 समान किश्तों में। X लि. घटती शेष पर 20% से मूल्य ह्रास अपलिखित करता है। वह पहले वर्ष के अन्त में किश्त भुगतान कर देता है पर अगली किश्त का भुगतान नहीं कर सका। सुपर मोटर्स क्रेता के पास एक मिल्क वेन छोड़ने पर इसकी दो मिल्क वैनों की देय राशि में समायोजित करने पर सहमत हो गई। मिल्क वैन का अपलिखित मूल्य आधार पर 30% वार्षिक की दर से मूल्य ह्रास का मूल्यांकन किया गया। X लि. ने विक्रेता के देयों का तीन महीने बाद भुगतान कर दिया।

समाधान (Solution)

In the Books of X Ltd.

		Dr. (₹)	*Cr.* (₹)
I Year			
Milk Vans purchased :			
Milk Vans A/c	Dr.	2,25,000	
To Vendor A/c			2,25,000
On down payment :			
Vendor A/c	Dr.	45,000	
To Bank			45,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

I Year end			
Interest A/c	Dr.	16,200	
(₹ 1,80,000 @ 9%)			
To Vendor A/c			16,200
Vendor A/c	Dr.	76,200	
To Bank A/c			76,200
Depreciation @ 20%			
Depreciation A/c	Dr.	45,000	
To Milk Vans A/c			45,000
II Year end			
Depreciation @ 20%			
Depreciation A/c	Dr.	36,000	
To Milk Vans A/c			36,000
Interest A/c	Dr.	10,800	
(1,20,000 @ 9%)			
To Vendor A/c			10,800
Return of goods			
Vendor A/c	Dr.	73,500	
To Milk Vans A/c			73,500
For Loss in Repossession			
Profit/Loss A/c	Dr.	22,500	
To Milk Vans A/c			22,500
IIIrd Year Depreciation			
Depreciation A/c	Dr.	9,600	
To Milk Vans A/c			9,600
Settlement of A/cs			
Vendor A/c	Dr.	57,300	
To Bank			57,300

Milk Vans Account

Year		₹	*Year*			₹
1	To Super Motors A/c	2,25,000	1 end	By	Depreciation A/c	45,000
			1 end	By	Balance c/d	1,80,000
		2,25,000				2,25,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

2	To Balance b/d	1,80,000	2 end	By	Depreciation	36,000
				By	Super Motors (value of 2 vans after depreciation for 2 years @ 30%)	73,500
				By	P & L A/c (balancing figure)	22,500
				By	Balance c/d (one van less depreciation for 2 years)	48,000
		1,80,000				1,80,000

Super Motors Account

Year		₹	*Year*			₹
1	To Bank	45,000	1	By	Milk Vans A/c	2,25,000
	To Bank	76,200		By	Interest @ 9%	
	To Balance c/d	1,20,000			on ₹ 1,80,000	16,200
		2,41,200				2,41,200
2	To Milk Van A/c	73,500	2	By	Balance b/d	1,20,000
	To Balance c/d	57,300		By	Interest	10,800
		1,30,800				1,30,800
3	To Bank	57,300	3	By	Balance b/d	57,300

उदाहरण (Illustration) **4**

एक फर्म ने किराया क्रय संविदाओं के अन्तर्गत दो ट्रेक्टर लिये। जिनका विवरण निम्नांकित है—

	ट्रैक्टर A	**ट्रैक्टर B**
क्रय की तिथि	1 अप्रैल, 2007	1अक्टूबर, 2007
	₹	₹
नकद राशि	14,000	19,000
जमा	2000	2,680
ब्याज (अनुबन्ध अवधि पर अर्जित माना गया)	2,400	2,680

दोनों ही संविदाओं में भुगतान हेतु चौबीस मासिक किश्तों में व्यवस्था है जोकि खरीद की तिथि के बाद महीने के आखिरी दिन से प्रारम्भ होगी। सभी किश्तों का भुगतान निर्धारित देय तिथियों पर किया जाना है। 30 जून, 2008 को, ट्रैक्टर B आग से बिल्कुल नष्ट हो गया। पूर्ण भुगतान में, 10 जुलाई, 2008 को एक बीमा कम्पनी में पारिग्राही पॉलिसी के अन्तर्गत 15,000 ₹ का भुगतान किया जिसमें से 10,000 ₹ की राशि संविदा के समाप्त करने हेतु किराया क्रय कम्पनी को भुगतान की गई। इन सौदों के सम्बन्ध में किराया क्रय कम्पनी के खाते में बचे शेष को अपलिखित किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

फर्म अपने खाते 31 दिसम्बर को बनाती है तथा उनमें ट्रैक्टर्स पर स्ट्रेट लाइन विधि के आधार पर मूल्य ह्रास 20 प्रतिशत वार्षिक की दर से खरीद की तिथि से डिस्पोजल की तिथि तक के अनुपात में निकटतम 10 ₹ तक गणना छोड़े जाने की व्यवस्था है।

आपको इन सौदों को निम्नांकित खातों में शेष राशियों को 31 दिसम्बर, 2007 से 31 दिसम्बर, 2008 तक नीचे ले जाते हुये अभिलेखित करना है :

(अ) किराया क्रय पर ट्रैक्टर्स,

(ब) ट्रैक्टरों के मूल्य ह्रास के लिये प्रावधान,

(स) ट्रैक्टरों का डिस्पोजल,

(द) किराया क्रय कम्पनी।

समाधान (Solution)

Hire Purchase Accounts in the Buyer's Books

Tractors on Hire Purchase A/c

(a)

2007		₹	*2007*			₹
April 1	To HP Co. : Cash price	14,000	Dec. 31	By Balance c/d		
				Tractor A	14,000	
Oct. 1	To HP Co. : Cash price			Tractor B	19,000	33,000
	Tractor B	19,000				
		33,000				33,000
2008		₹	*2008*			₹
Jan. 1	To Balance b/d		June 30	By Disposal of		
	Tractor A 14,000			Tractor A/c-Transfer		19,000
	Tractor B 19,000	33,000	Dec. 31	By Balance c/d		14,000
		33,000				33,000
2009						
Jan. 1	To Balance b/d	14,000				

(b) **Provision for Depreciation of Tractors A/c**

2007		₹	*2007*			₹
Dec. 31	To Balance c/d	3,050	Dec. 31	By P & L A/c :		
				Tractor A	2,100	
				Tractor B	950	3,050
		3,050				3,050

© The Institute of Chartered Accountants of India

2008		₹	*2008*			₹
June 30	To Disposal of Tractor		Jan. 1	By	Balance b/d	3,050
	Account—Transfer	2,850	June 30		P & L A/c	1,900
Dec. 31	To Balance c/d	4,900			(Depn. for Tractor B)	
			Dec. 31		P & L A/c	2,800
					(Depn. for Tractor A)	
		7,750				7,750
			2009			
			Jan. 1	By	Balance b/d	4,900

(c) **Disposal of Tractor A/c**

2008		₹	*2008*			₹
June 30	To Tractors on hire		June 30	By	Provision for	
	purchase—Tractor B	19,000			Depn. of Tractors A/c	2,850
			July 10	By	Cash : Insurance	15,000
			Dec. 31	By	P & L A/c : Loss	1,150
		19,000				19,000

Hire Purchase Co. A/c

2007		₹	*2007*			₹
April 1	To Cash (deposit		April 1	By	Tractors on	
	for Tractor A)	2,000			Hire Purchase A/c :	
April	To Cash—6 instal-				Tractor A	14,000
Sept.	ments @ ₹ 600	3,600	Oct. 1	By	Tractors on	
Oct. 1	To Cash—deposit				Hire Purchase A/c :	
	for Tractor B	2,680			Tractor B	19,000
Oct.	To Cash—3 instal-		Dec. 31	By	Interest A/c :	
Dec.	ments @ ₹ 600 for				For Tractor A	
	Tractor A	1,800			@ ₹ 100 for	
	To Cash—3 instal-				9 months ₹ 900	
	ments @ ₹ 800	2,400			For Tractor B	
Dec. 31	To Balance c/d	21,780			@ ₹ 120 for	
					3 months ₹ 360	1,260
		34,260				34,260

© The Institute of Chartered Accountants of India

2008			2008			
Jan.	To Cash—6 instalments		Jan. 1	By	Balance b/d	21,780
	@ ₹ 600 for Tractor A	3,600	June 30	By	Interest A/c—for	
June	To Cash—6 instalments				Tractor B @ ₹ 120	
	@ ₹ 800 for Tractor B	4,800			for 6 months	720
July 10	To Cash—Final instalment		Dec. 31	By	Interest A/c—for	
	for Tractor B	10,000			Tractor A @ ₹ 100	
July	To Cash—6 instalments @				for 12 months	1,200
	₹ 600 for Tractor A	3,600				
Dec.	To Balance c/d	1,500				
	To P & L A/c : unpaid					
	amount	200				
		23,700				23,700

उदाहरण (Illustration) **5**

एक मशीनरी किराया क्रय पर बेची गई। भुगतान की शर्तों के अनुसार भुगतान 6,000 ₹ की चार वार्षिक किश्तों में, जो प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर संविदा की तिथि से आरम्भ होगी, किया जाता है। ब्याज 20% की दर से जो 6,000 ₹ के वार्षिक भुगतान में शामिल है, वसूल किया जाएगा।

क्रेता की पुस्तकों में मशीनरी खाता एवं किराया विक्रेता खाता दिखाइये जो तीसरे वर्ष के भुगतान में चूक गया है तथा जिस पर से विक्रेता ने मशीनरी को वापस ले लिया है। क्रेता मशीनरी पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास का उपबन्ध करता है। सभी कार्य टिप्पणियाँ आपके उत्तर का हिस्सा हैं।

समाधान (Solution)

Machinery Account

		₹				₹
I Yr.	To Hire Vendor A/c	15,533	I Yr.	By	Depreciation A/c	1,553
					Balance c/d	13,980
		15,533				15,533
II Yr.	To Balance b/d	13,980	II Yr.	By	Depreciation A/c*	1,398
					By Balance c/d	12,582
		13,980				13,980
III Yr.	To Balance b/d	12,582	III Yr.	By	Depreciation A/c*	1,258
				By	Hire Vendor	11,000
				By	Profit & Loss A/c	324
					(Loss on Surrender)	
		12,582				12,582

*It has been assumed that depreciation has been written off on written down value method. Alternatively, straight line method may be assumed.

© The Institute of Chartered Accountants of India

Depreciation has been directly credited to the Machinery Account; It could have been accumulated in provision for depreciation account.

Hire Vendor Account

		₹			₹
I Yr.	To Bank A/c	6,000	I Yr.	By Machinery A/c	15,533
	To Balance c/d	12,639		By Interest A/c	3,106
		18,639			18,639
II Yr.	To Bank A/c	6,000	II Yr.	By Balance b/d	12,639
	To Balance c/d	9,167		By Interest A/c	2,528
		15,167			15,167
III Yr.	To Machinery A/c	11,000	III Yr.	By Balance b/d	9,167
	(transfer)			By Interest A/c	1,833
		11,000			11,000

Note : Alternatively, total interest could have been debited to Interest Suspense A/c and credited to Hire Vendor A/c with consequential changes.

Working Notes :

	Instalment Amount	*Interest*	*Principal*
4th Instalment	6,000	₹	₹
Interest $6,000 \times \frac{20}{120}$	1,000	1,000	5,000
	5,000		
Add : 3rd Instalment	6,000		
	11,000		
Interest $11,000 \times \frac{20}{120}$	1,833	1,833	4,167
	9,167		
Add : 2nd Instalment	6,000		
	15,167		
Interest $15,167 \times \frac{20}{120}$	2,528	2,528	3,472
	12,639		
Add : Ist instalment	6,000		
	18,639		
Interest $18,639 \times \frac{20}{120}$	3,106	3,106	2,894
	15,533	8,467	15,533

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **6**

X ट्रान्सपोर्ट लि. ने 1 जनवरी, 2008 को दिल्ली मोटर्स से 3 टेम्पो प्रत्येक 50,000 ₹ लागत के किराया क्रय आधार पर खरीदे। भुगतान 30,000 ₹ तत्काल तथा बकाया शेष राशि 31.12.2006, 31.12.2007 तथा 31.12.2008 को 9% ब्याज सहित 3 समान किश्तों में किया जाता है। एक्स ट्रान्सपोर्ट लि. घटते शेष पर 20% की दर से मूल्य ह्रास अपलिखित करता है। उसने प्रथम वर्ष के अन्त अर्थात् 31.12.2006 को दत्त किश्त का भुगतान कर दिया पर 31.12.2007 को अगली किश्त का भुगतान नहीं कर सका। दिल्ली मोटर्स 11.1.2008 को क्रेता के पास एक टैम्पो छोड़ने को इस शर्त पर तैयार हुए कि अन्य दो टैम्पो का मूल्य 31.12.2007 को देय मूल्य में समायोजित कर दिया जाएगा। टैम्पो का मूल्यांकन 30% वार्षिक मूल्य ह्रास के आधार पर किया गया। एक्स ट्रान्सपोर्ट क. की पुस्तकों में वर्ष 2006, 2007 तथा 2008 के लिये आवश्यक खाते दर्शाइये।

समाधान (Solution)

X Transport Ltd.

Tempo Account

Dr.						*Cr.*
2006		₹	2006			₹
Jan. 1	To Delhi Motors	1,50,000	Dec. 31	By	Depreciation A/c : 20% on 1,50,000	30,000
				By	Balance c/d	1,20,000
		1,50,000				1,50,000
2007			2007			
Jan. 1	To Balance b/d	1,20,000	Dec. 31	By	Depreciation A/c	24,000
				By	Delhi Motors A/c (Value of 2 tempos taken away)	49,000
				By	Profit and Loss A/c (balancing figure)	15,000
				By	Balance c/d (Value of one tempo left)	32,000
		1,20,000				1,20,000
2008			2008			
Jan. 1	To Balance b/d	32,000	Dec. 31	By	Depreciation A/c	6,400
				By	Balance b/d	25,600
		32,000				32,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Delhi Motors Account

2006		₹	2006		₹
Jan. 1	To Bank (Down Payment)	30,000	Jan. 1	By Tempos A/c	1,50,000
Dec. 31	To Bank	50,800	Dec. 31	By Interest (9% on	
	To Balance c/d	80,000		₹ 1,20,000)	10,800
		1,60,800			1,60,800
2007			2007		
Jan. 1	To Tempo	49,000	Jan. 1	By Balance b/d	80,000
Dec. 31	To Balance c/d	38,200	Dec. 31	By Interest (9%	
				on ₹ 80,000)	7,200
		87,200			87,200
2008		₹	2008		₹
Dec. 31	To Bank	41,638	Jan. 1	By Balance b/d	38,200
			Dec. 31	By Interest (9% on	
				₹ 38,200)	3,438
		41,638			41,638

Alternative Method

Tempo Account

2006		₹	2006		₹
Jan. 1	To Bank A/c (down		Dec. 31	By Depreciation	
	payment)	30,000		@ 20% on	
Dec. 31	To Delhi Motors A/c			₹ 1,50,000	30,000
	(Ist instalment)	40,000		By Balance c/d	40,000
		70,000			70,000
2007		₹	2007		₹
Jan. 1	To Balance b/d	40,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	24,000
Dec. 31	To Delhi Motors A/c			By Profit & Loss A/c	
	creating a liability for			(balancing figure)	22,200
	₹ 38,200, amount due			By Balance c/d	
	(see 1st method)	38,200		(Value of tempo left)	32,000
		78,200			78,200
2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d	32,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	6,400
				By Balance b/d	25,600
		32,000			32,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Delhi Motors

2006		₹	2006			₹
Dec. 31	To Bank A/c	50,800	Dec. 31	By	Tempo A/c	40,000
				By	Interest A/c	10,800
		50,800				50,800
2007		₹	2007			₹
Dec. 31	To Balance c/d	38,200	Dec. 31	By	Tempos A/c	38,200
2008			2008			
Dec. 31	To Bank A/c	41,638	Jan. 1	By	Balance b/d	38,200
			Dec. 31	By	Interest (9% on ₹ 38,200)	3,438
		41,638				41,638

Working Notes :

(1) *Value of a Tempo left with the buyer* :

	₹
Cost	50,000
Depreciation @ 20% p.a. under WDV method for 2 years i.e. ₹ 10,000 + ₹ 8,000	18,000
Value of the Tempo left with the buyer at the end of 2nd year	32,000

(2) *Value of Tempos taken away by the seller :*

No. of tempos : Two

	₹
Cost ₹ 50,000 × 2 =	1,00,000
Depreciation @ 30% Under WDV method for 2 years i.e. ₹ 30,000 + ₹ 21,000	51,000
Value of tempos taken away at the end of 2nd year	49,000

उदाहरण (Illustration) **7**

मै. दिल्ली इलेक्ट्रॉनिक्स किराया क्रय आधार पर रंगीन टैलीविजन बेचते हैं जिनका प्रति सैट लागत मूल्य 14,000 ₹, नकद बिक्री मूल्य 15,500 ₹ और किराया क्रय विक्रय मूल्य 16,800 है जो प्रत्येक माह की 10 तारीख देय 12 मासिक किश्तों में है। फिर भी खरीददार को क्रय के समय 1,800 ₹ का तत्काल भुगतान करना होता है। 2008 में किराया क्रय सौदे (सेटों की संख्या)—जनवरी 10, फरवरी 12, मार्च 10, अप्रैल 12, मई 10, जून 10, जुलाई 10, अगस्त 15, सितम्बर 11, अक्टूबर 20, नवम्बर 20, दिसम्बर 10।

मान लें कि समस्त किश्तें निर्धारित देय तिथि पर प्राप्त हो गईं, आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दिखाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Various relevant accounting information in relation to hire purchase transactions are computed as follows :

Total No. of Transactions : 150

Cash down : ₹ 1,800 × 150 = ₹ 2,70,000

Instalments Collected/Due

Transactions	*No. of Instalments collected*				*No. of Instalments Due*			
Jan.	10	× 11	=	110	10	× 1	=	10
Feb.	12	× 10	=	120	12	× 2	=	24
March	10	× 9	=	90	10	× 3	=	30
April	12	× 8	=	96	12	× 4	=	48
May	10	× 7	=	70	10	× 5	=	50
June	10	× 6	=	60	10	× 6	=	60
July	10	× 5	=	50	10	× 7	=	70
Aug.	15	× 4	=	60	15	× 8	=	120
Sept.	11	× 3	=	33	11	× 9	=	99
Oct.	20	× 2	=	40	20	× 10	=	200
Nov.	20	× 1	=	20	20	× 11	=	220
Dec.	10	× 0	=	10	10	× 12	=	120
	150			749	150			1051

Check :

Total Instalments for 150 hire purchase transactions are 1800. (150 × 12) of which 749 instalments fell due and collected and the balance 1051 instalments are not yet paid.

Amount collected for 749 instalments

$$= \frac{₹\,16,800 - ₹\,1,800}{12} \times 749 = ₹\,9,36,250$$

Amount not yet due

$$= \frac{₹\,16,800 - ₹\,1,800}{12} \times 1,051 = ₹\,13,13,750$$

Cash Down = ₹ 2,70,000

Total (₹ 16,800 × 150) = ₹ 25,20,000

Hire Vendor should recognise the amount of instalments collected and cash value (i.e. ₹ 2,70,000 + ₹ 9,36,250) ₹ 12,06,250 as sale. Balance ₹ 13,13,750 is value of goods lying with the customer at hire purchase price. Stock Reserve should be computed and deducted from such amount to show the Hire Purchase Stock at cost.

© The Institute of Chartered Accountants of India

Goods lying with Hire Purchaser at Hire Purchase Price $\times \frac{\text{Cost}}{\text{Hire Purchase Price}}$

Stock at cost = ₹ 13,13,750 $\times \frac{₹\,14,000}{₹\,16,800}$

= ₹ 10,94,792

Stock Reserve = (₹ 13,13,750 – 10,94,792) = ₹ 2,18,958

Journal Entries

				₹	₹
(1)	For Cash down at the time of hire transaction	Cash/Bank/A/c	Dr.	2,70,000	
		To Hire Purchase Sale A/c			2,70,000
(2)	When instalments fall due	Instalment Due A/c	Dr.	9,36,250	
		To Hire Purchase Sales			9,36,250
(3)	On collection of instalments	Cash/Bank A/c	Dr.	9,36,250	
		To Instalment Due A/c			9,36,250
(4)	For instalment not due at the year	Hire Purchase Stock A/c	Dr.	13,13,750	
		To Trading A/c			13,13,750
(5)	For Stock Reserve	Stock Reserve A/c	Dr.	2,18,958	
		To Hire Purchase Stock A/c			2,18,958

If some instalments become due but not collected at the year end, such would appear in the Balance Sheet as an asset just like Sundry Debtors.

5. देनदार विधि
(DEBTORS METHOD)

इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रय व्यापारिक खाता बनाया जाता है।

किराया क्रय व्यापारिक खाते को तैयार करने का उद्देश्य है किराया क्रय भावों के लाभ का अलग से आंकलन करना। हम देखेंगे कि कैसे किराया क्रय व्यापारिक खाता तैयार किया जाता है।

1. किराया क्रय बिक्री खाते में देय हुई किश्तों और सभी तत्काल भुगतान को, क्रेडिट किया जाता है। किराया क्रय–विक्रय खाते के बकाया को किराया क्रय व्यापारिक खाते में हस्तांतरित किया जाता है।
2. सभी सौदों की लागत को किराया क्रय व्यापारिक खाते में हस्तांतरित किया जाता है।
3. कोई भी विशेष व्ययों को किराया क्रय व्यापारिक खाते में प्रभारित करते हैं।
4. देय न हुई किश्तों को ग्राहकों के पास पड़ा हुआ रहतिया माना जाता है तथा किराया क्रय व्यापारिक खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है।
5. उचित स्टॉक संचय प्रभारित करना चाहिये।

उदाहरण (Illustration) **8**

उदाहरण–6 में दी गई सूचना के आधार पर किराया क्रय व्यापार खाता बनाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Hire Purchase Trading A/c

		₹			₹
To	Shop Stock (14,000 × 150)	21,00,000	By	Hire Purchase Sales A/c	12,06,250
To	Stock Reserve	2,18,948	By	Stock (with customers)—at hire purchase price	13,13,750
To	Profit-transferred to P & L A/c	2,01,042			
		25,20,000			25,20,000

उदाहरण (Illustration) **9**

मै. वाई एण्ड कं. लागत में 50% जोड़कर किराया क्रय आधार पर माल बेचते हैं। निम्नांकित समंकों के किराया क्रय व्यापारिक खाता बनाइये— ₹

जनवरी, 2008 में ग्राहकों के पास माल जिन पर किश्त अभी तक देय नहीं हैं	5,400
2008 के दौरान किराया क्रय पर बेचा गया माल	25,500
2008 के दौरान ग्राहकों से नकद प्राप्ति	20,100
ग्राहकों द्वारा भुगतान की जाने वाली किश्त जो देय हो गई पर अभी तक प्राप्त नहीं हुई	1,800

सभी आँकड़े किराया क्रय मूल्य के आधार पर हैं।

समाधान (Solution)

Hire-Purchase Trading Account for the year ending 31st Dec., 2008

Dr. Cr.

		₹			₹
To	Stock with Customers on 1-1-2008 at hire purchase price	5,400	By	Cash	20,100
			”	Instalments due	1,800
”	Goods sold on Hire-Purchase A/c	25,500	”	Goods sold on Hire Purchase A/c : loading	8,500
”	Stock Reserve required	3000	”	Stock Reserve (Opening)	1,800
”	Profit & Loss A/c	7,300	”	Stock with customers	9,000*
		41,200			41,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

***Stock with Customers on 31-12-2008**		₹
Instalment not due on 1-1-2008		5,400
Goods sold on H.P.		25,500
		30,900
Less : Cash received	20,100	
Instalments due	1,800	21,900
		9,0000

6. कुल नकद मूल्य का निर्धारण
(ASCERTAINMENT OF TOTAL CASH PRICE)

हम जानते हैं कि किराया क्रेता की पुस्तकों में लेखांकन का आधार कुल नकद मूल्य है। कभी–कभी कुल नकद मूल्य नहीं भी किया जा सकता। तब कुल नकद मूल्य निर्धारण के उद्देश्य के लिये हम जरूरत के अनुसार निम्न में से कोई भी विधि का प्रयोग कर सकते हैं—

(1) कुल नकद मूल्य की गणना करना जब वार्षिक सारिणी न दी गई हो।

(2) कुल नकद मूल्य की गणना करना जब वार्षिक सारिणी दी गई हो।

7. कुल नकद मूल्य ज्ञात करना जब वार्षिक सारिणी न दी गई हो
(CALCULATION OF TOTAL CASH PRICE WHEN THE ANNUITY TABLE IS NOT GIVEN)

इस विधि में, सर्वप्रथम अन्तिम किश्त में शामिल ब्याज की गणना उपयुक्त सूत्र (नीचे स्पष्ट किया गया है) की मदद से की जाती है।

उदाहरण के लिये, एक किराया क्रय सौदे में, तत्काल भुगतान से अलग, चार अन्य किश्तें देय हैं, ब्याज की गणना पहले 4th किश्त पर, फिर 3rd किश्त पर, फिर 2nd किश्त पर और आखिरी में 1st किश्त पर की जाएगी। तत्काल भुगतान पर ब्याज शून्य होगा।

इस सम्बन्ध में, ये ध्यान देना चाहिये कि ब्याज की राशि 4th किश्त की अपेक्षा 3rd किश्त में, 3rd किश्त की अपेक्षा 2nd किश्त में तथा 2nd किश्त की अपेक्षा 1st किश्त में बढ़ती चली जाएगी।

हम जानते हैं कि ब्याज की गणना नकद मूल्य के अदत्त शेष पर की जाती है।

इस मामले में हम किराया क्रय मूल्य पर कुल देय राशि की सहायता से ब्याज ज्ञात करेंगे, जब नकद मूल्य ज्ञात नहीं है। ब्याज की गणना के प्रयोजन के लिये निम्न चरण अपनाने चाहिये—

पहला चरण—निम्न सूत्र की सहायता से देय राशि और ब्याज के बीच अनुपात की गणना करना—

$$\text{ब्याज एवं बकाया राशि का अनुपात} = \frac{\text{ब्याज की दर}}{100 + \text{ब्याज की दर}}$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

दूसरा चरण—निम्न सूत्र के प्रयोग द्वारा अन्तिम किश्त में शामिल ब्याज की गणना करें—
ब्याज = किश्त के समय कुल देय राशि × ब्याज एवं देय राशि का अनुपात (प्रथम चरण में गणना किया हुआ)

तीसरा चरण—आखिरी किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य की राशि को पाने के लिये इस किश्त से ब्याज (चरण–2 में गणना किया हुआ) को घटाएं।

चौथा चरण— तीसरे वर्ष की समाप्ति पर देय किश्त की राशि में नकद मूल्य राशि जोड़ें।

पाँचवां चरण—सम्पूर्ण राशि (4^{th} किश्त में शामिल नकद मूल्य + 3^{rd} किश्त की राशि) पर ब्याज की गणना करें।

छठा चरण— दूसरे वर्ष के अन्त में देय किश्त की राशि में पांचवें चरण में गणना किये गये नकद मूल्य को जोड़ें।

सातवाँ चरण—छठे चरण में प्राप्त सम्पूर्ण जोड़ पर ब्याज की गणना करें। 2^{nd} किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य पाने के लिये दूसरे वर्ष की समाप्ति पर कुल देय राशि से इस ब्याज को घटाएं।

आठवाँ चरण—1^{st} वर्ष के अन्त में देय किश्त की राशि में सातवें चरण में गणना किये गये नकद मूल्य को जोड़ेंगे।

नौवाँ चरण— आठवें चरण में प्राप्त हुए सम्पूर्ण जोड़ पर ब्याज की गणना करें। प्रथम किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य को पाने के लिये प्रथम वर्ष के अन्त में देय कुल राशि से इस ब्याज को घटाएँ।

दसवाँ चरण—तत्काल भुगतान की राशि, यदि कोई है, नौवें चरण में गणना किये गये नकद मूल्य में जोड़ें।

उदाहरण (Illustration) **10**

ए एण्ड क. ने किराया क्रय पद्धति पर एक ट्रक खरीदा। शर्त के मुताबिक उसे 70,000 ₹ तत्काल, 53,000 ₹ प्रथम वर्ष की समाप्ति पर, 49,000 ₹ द्वितीय वर्ष की समाप्ति पर और 55,000 ₹ तीसरे वर्ष की समाप्ति पर भुगतान करना आवश्यक है। ब्याज 10% प्रति वर्ष प्रभारित किया जाता है।

आपको ट्रक का कुल नकद मूल्य तथा प्रत्येक किश्त के साथ भुगतान किये गये ब्याज की गणना करनी है।

समाधान (Solution)

(1) Ratio of interest and amount due = $\frac{\text{Rate of interest}}{100 + \text{Rate of interest}} = \frac{10}{110} = \frac{1}{11}$

(2) **Calculation of Interest and Cash Price**

No. of instalments	*Amount due at the time of instalment*	*Interest*	*Cash price*
[1]	**[2]**	**[3]**	**[4]**
3^{rd}	55,000	1/11 of ₹ 55,000 = ₹ 5,000	50,000
2^{nd}	*99,000	1/11 of ₹ 99,000 = ₹ 9,000	90,000
1^{st}	**1,43,000	1/11 of ₹ 1,43,000 = ₹ 13,000	1,30,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Total cash price = ₹ 1,30,000 + ₹ 70,000 (down payment) = ₹ 2,00,000.

*₹ 50,000 + 2nd instalment of ₹ 49,000 = ₹ 99,000.

**₹ 90,000 + 1st instalment of ₹ 53,000 = ₹ 1,43,000.

8. ब्याज का निर्धारण
(ASCERTAINMENT OF INTEREST)

हम जानते हैं कि किराया क्रय मूल्य में दो तत्वों का समावेश होता है—(i) नकद मूल्य और (ii) ब्याज। नकद मूल्य एक सम्पत्ति के अधिग्रहण को प्राप्त करने के लिये किया गया पूंजीगत व्यय है। ब्याज पूर्व भुगतान देर में करने के लिये किया गया आयगत व्यय है। दोनों में से किसी का भी निर्धारण अन्य के लिये उत्तर होता है। उदाहरणार्थ, यदि ब्याज की कुल राशि का निर्धारण करें तो उस दशा में किराया क्रय मूल्य से ब्याज घटाकर नकद मूल्य का निर्धारण अत्यन्त सरलता से कर सकते हैं।

ब्याज अदत्त राशि पर प्रभारित किया जाता है। इसलिये यदि किराया क्रेता संविदा पर हस्ताक्षर कर तत्काल भुगतान करता है, उसमें कोई ब्याज राशि शामिल नहीं होगी। ये ध्यान देना चाहिये कि किराया क्रय अनुबन्ध की किश्त समान हो सकती हैं, लेकिन प्रत्येक किश्त में ब्याज तत्व समान नहीं होता। ब्याज की गणना के समय, छात्र निम्न दो स्थितियों का सामना कर सकते हैं—

(अ) जब नकद मूल्य, ब्याज की दर और किश्त की राशि दी हो, और

(ब) जब नकद मूल्य तथा किश्त की राशि दी हो, लेकिन ब्याज की दर नहीं दी हो।

अब हम उपर्युक्त दोनों स्थितियों पर चर्चा करेंगे।

8.1 जब नकद मूल्य, ब्याज की दर और किश्त की राशि दी हो (When the cash price, rate of interest and the amount of instalments are given)

इस स्थिति में, सर्वप्रथम ब्याज की कुल राशि का निर्धारण करना होता है। यह किराया क्रय मूल्य (तत्काल भुगतान + कुल किश्तें) तथा नकद मूल्य का अन्तर है। प्रत्येक किश्त में शामिल ब्याज की राशि की गणना के लिये निम्न चरण अपनाते हैं—

चरण 1. नकद मूल्य से तत्काल भुगतान को घटाएँ, बचे हुए शेष पर दी गई दर से ब्याज ज्ञात करें। ये राशि प्रथम किश्त में शामिल ब्याज को प्रदर्शित करती है।

चरण 2. प्रथम किश्त की राशि से प्रथम चरण के ब्याज को घटाएँ। परिणामी संख्या प्रथम किश्त में शामिल नकद मूल्य है।

चरण 3. तत्काल भुगतान के बाद बचे हुए देय से प्रथम किश्त का नकद मूल्य (दूसरे चरण से) घटाएँ।

चरण 4. प्रथम किश्त के बाद अदत्त शेष पर दी गई दर से ब्याज की गणना करें। दूसरी किश्त में जुड़े नकद मूल्य को पाने के लिये दूसरी किश्त की राशि से इस ब्याज को घटाएँ।

चरण 5. प्रथम किश्त के बाद देय शेष से दूसरी किश्त के नकद मूल्य (तीसरे चरण से) को घटाएँ। यह दूसरी किश्त के भुगतान के बाद अदत्त राशि को प्रदर्शित करती है।

उपरोक्त चरणों को अन्तिम किश्त भुगतान करने तक दोहराते रहें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

8.2 जब नकद मूल्य और किश्तों की राशि दी हो, लेकिन ब्याज की दर नहीं दी हो (When the cash price and the amount of instalments are given, but the rate of interest is not given)

जब ब्याज की दर नहीं दी हो, लेकिन नकद मूल्य एवं किश्तों की राशि दी हो, निम्न चरण अपनाकर ब्याज की गणना करते हैं—

चरण 1. किराया क्रय मूल्य (*i.e.* तत्काल भुगतान + किश्त की राशि × किश्तों की संख्या) से नकद मूल्य घटाने के बाद कुल ब्याज की गणना करें।

चरण 2. किराया क्रय मूल्य से तत्काल भुगतान घटाएं।

चरण 3. प्रत्येक वर्ष के चालू में किराया क्रय मूल्य के अदत्त शेष की राशि की गणना कीजिये।

चरण 4. चरण 3 के अदत्त शेष के अनुपात की गणना करें।

चरण 5. चरण 4 के अनुपात के आधार पर प्रत्येक किश्त की ब्याज की राशि की गणना करें।

9. पुनर्स्वामित्व
(REPOSSESSION)

एक किराया क्रय अनुबन्ध में किराया क्रेता को माल का स्वामित्व प्राप्त करने के लिये अन्तिम किश्त तक का भुगतान करना होता है। यदि किराया क्रेता कोई एक किश्त के भुगतान में भी असफल रहता है, तो किराया विक्रेता पूर्व भुगतान की वापसी के बगैर ही किराया क्रेता से, वास्तविक रूप में सम्पत्ति वापस ले लेता है। किश्तों व तत्काल भुगतान के रूप में किराया क्रेता से प्राप्त राशि को किराया विक्रेता द्वारा किराया प्रभार माना जाता है। सम्पत्ति के स्वामित्व की वसूली की कार्यवाही पुनर्स्वामित्व मद है।

पुनर्स्वामित्वाधीन सम्पत्ति को मरम्मत अथवा ठीक कराने (यदि आवश्यक हो) के बाद किसी अन्य ग्राहक को बेच दी जाती है। पुनर्स्वामित्वाधीन सम्पत्ति से सम्बन्धित लेखांकन आँकड़ों की प्रविष्टि सामान्य किराया क्रय प्रविष्टि से अलग की जाती है। पुनर्स्वामित्व के लेखे तब एक अलग ''माल पुनर्स्वामित्व खाते'' में लेखांकित किये जाते हैं।

जहाँ तक सम्पत्तियों के पुनर्स्वामित्व का सम्बन्ध है किराया विक्रेता, पार्टियों के बीच अनुबन्ध पर निर्भर होने से सम्पूर्ण सम्पत्ति या उसके भाग को वापस ले सकता है। पहले भाग को पूर्ण पुनर्स्वामित्व तथा बाद वाले को आंशिक पुनर्स्वामित्व कहते हैं।

9.1 सम्पूर्ण पुनर्स्वामित्व (Complete Repossession)

किराया विक्रेता, किराया क्रेता खाते की शेष राशि को माल पुनर्स्वामित्व खाते में हस्तान्तरित कर किराया क्रेता खाते को बन्द कर देता है।

किराया क्रेता, किराया विक्रेता खाते के शेष को किराया क्रय सम्पत्ति खाते में हस्तांतरित कर किराया विक्रेता खाते को बन्द कर देता है तथा फिर सम्पत्ति पुनर्स्वामित्व खाते पर लाभ और हानि को ज्ञात करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

विवरण	किराया क्रेता की पुस्तक में	किराया विक्रेता की पुस्तक में
Purchase/sale	Asset A/c ...Dr. To Hire Vendor A/c	Hire Purchase A/c ...Dr. To Sales A/c
Instalment	Hire Vendor A/c ...Dr. To Cash A/c	Cash A/c ...Dr. To Hire Vendor A/c
Interest	Interest A/c ...Dr. To Hire Vendor A/c	Hire Purchaser A/c ...Dr. To Interest A/c
Repossession	Hire Vendor A/c ...Dr. To Assets A/c	Goods Repossessed A/c ...Dr. To Hire Purchaser

9.2 आंशिक पुनर्स्वामित्व (Partial Repossession)

आंशिक पुनर्स्वामित्व के मामले में, किराया विक्रेता द्वारा सम्पत्ति के केवल एक भाग को ही वापस लिया जाता है और अन्य भाग किराया क्रेता के पास ही छोड़ दिया जाता है। जर्नल प्रविष्टियाँ सामान्य रूप से दोनों पार्टियों की पुस्तकों में चूक की तिथि एक (भुगतान सम्बन्धी प्रविष्टि को छोड़कर) की जाती हैं।

अभी भी सम्पत्ति का कुछ भाग किराया क्रेता के स्वामित्व में होने के कारण दोनों पार्टी अपनी सम्बन्धित पुस्तकों में दूसरी पार्टी का खाता बन्द नहीं करते हैं।

पुनर्स्वामित्व सम्पत्तियाँ वास्तविक सहमति मूल्य पर (ह्रास की सहमति दर पर आधारित जो कि बढ़ी हुई होगी) की जाती है। किराया विक्रेता माल पुनर्स्वामित्व खाता डेबिट (नाम) करता है और किराया क्रय खाते को सहमति द्वारा पुनर्स्वामित्व के मूल्य पर क्रेडिट (जमा) करता है।

इसी तरह किराया क्रेता किराया विक्रेता खाते को डेबिट तथा उसी मूल्य से सम्पत्ति खाते को क्रेडिट करता है। यदि पुनर्स्वामित्व मूल्य सम्पत्ति के पुस्तकीय मूल्य से कम होता है तो अन्तर (समर्पण हानि) को किराया क्रय के लाभ–हानि खाते में प्रभारित किया जाता है। किराया व क्रेता के पास सम्पत्ति के बचे हुए भाग के लिये वह (किराया क्रेता) प्रचलित दर से ह्रास लगाएगा और सम्पत्ति को अपलिखित करके दर्शाया जाएगा।

उदाहरण (Illustration) **11**

निम्नांकित से मै. कलकत्ता ट्रेडर्स का किराया क्रय व्यापार खाता बताइये जो माल को किराया क्रय पद्धति आधार पर लागत मूल्य से 25% अधिक पर बेचते हैं—

31–12–2007 पर देय न हुई किश्तें	3,00,000
2008 के दौरान देय तथा वसूल हुई किश्तें	8,00,000
2008 के दौरान देय लेकिन वसूल न हो पाने वाली किश्तें जिनमें 10,000 ₹ शामिल हैं जिसके लिये सामान पुनर्स्वामित्व में वापस लिया गया	50,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

31–12–2008 तक देय नहीं हुई किश्तें जिनमें 20,000 ₹ शामिल हैं जिसके लिये माल पुनर्स्वामित्व में वापस लिया गया तथा पुनर्स्वामित्व में लिये स्कन्ध पर किश्तें वसूल की गई	37,000
मै. कलकत्ता ट्रेडर्स के पुनर्स्वामित्व के स्टॉक का पुनर्मूल्यांकन मूल लागत के 60% पर किया गया	15,000

समाधान (Solution)

Working Notes :

(1) Hire Purchase Sales :

	₹
Instalments due and collected	8,00,000
Add : Instalments due but not collected	50,000
	8,50,000

(2) Loss on Repossessed stock :

Hire Purchase Price of Repossessed Stock	
Instalments Collected	15,000
Instalments Due	10,000
Instalments Not Due	20,000
	45,000
Cost ₹ 45,000 × $\frac{100}{125}$	36,000
Valuation on repossession ₹ 36,000 × $\frac{60}{100}$	21,600
Cost of instalments due + Instalments not yet due (₹ 10,000 + 20,000) × $\frac{100}{125}$	24,000
Loss (₹ 24,000 – ₹ 21,600)	2,400

(3) Goods taken from shop stock at cost :

H. P. Sales at cost [8,50,000 × 100/125]	6,80,000
Stock with customers 31.12.2008 at cost $\left[₹ 3,00,000 \times \frac{100}{125}\right]$	2,80,000
	9,60,000
Less : Stock with customers 31.12.2007 at Cost $\left[₹ 3,00,000 \times \frac{100}{125}\right]$	2,40,000
	7,20,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(4) Bad Debt :

Instalment due but not collected	10,000
Instalment not yet due at cost $\left[₹\,20,000 \times \frac{100}{125}\right]$	16,000
	26,000
Less : Cost of instalments due and instalments not yet due	24,000
	2,000

Hire Purchase Trading A/c

		₹			₹
To	Goods with customers at cost (31.12.2007)	2,40,000	By	Hire Purchase Sale	8,50,000
To	Shop Stock	7,20,000	By	Goods with customers at cost (31.12.2008)	2,80,000
To	Bad Debt	2,000			
To	Loss on Repossession	2,400			
To	Profit & Loss A/c Transfer of H. P. Profit	1,65,600			
		11,30,000			11,30,000

10. स्कन्ध एवं देनदार विधि

(STOCK AND DEBTORS METHOD)

इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रय स्कन्ध खाता, किराया क्रय समायोजन खाता बनाया जाता है, इस सम्बन्ध में निम्नांकित प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

(i) *When goods are sold on hire purchase*

Hire purchase stock A/c	Dr.	Full H. P. Price
To Stock A/c		Actual cost price
To Hire Purchase Adjustment A/c		

(Being the difference between cost and H. P. price)

(ii) *When instalments become due for payment*

Hire purchase Debtors A/c	Dr.
To Hire purchase Stock A/c	

(iii) *When cash is received*

CashA/c	Dr.
To Hire Purchase Debtors A/c	

(iv) *Stock Reserve on opening Stock*

Stock Reserve A/c	Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c	

(v) *Stock Reserve on closing Stock*

Hire Purchase Adjustment A/c	Dr.
To Stock Reserve A/c	

© The Institute of Chartered Accountants of India

किराया क्रय देनदार खाते में प्रारम्भिक शेष में किराया क्रय पर बेची गई वस्तुओं पर देय किश्त डेबिट पक्ष में और सारी नकद प्राप्तियां, अन्तिम शेष राशि क्रेडिट पक्ष में दर्शायी जाएगी।

वर्ष के दौरान जो वस्तुएँ किराया क्रय पर बेची गई हैं उनका मूल्य तथा किराया क्रय स्कन्ध खाते की प्रारम्भिक शेष राशि डेबिट पक्ष में तथा देनदारों पर देय किश्त राशि तथा अन्तिम शेष क्रेडिट पक्ष में शामिल किये जाएँगे। स्कन्ध मूल्यों को किराया क्रय मूल्य (अर्थात् लागत + किराया बिक्री पर लाभ) पर अभिलिखित किया जाएगा।

किराया क्रय समायोजन खाते के अन्तर्गत शामिल किये जाने वाले स्कन्ध संचय की राशि प्रारम्भिक एवं अन्तिम स्कन्ध पर क्रमशः क्रेडिट एवं डेबिट की जाएगी। तत्पश्चात इस खाते किराया क्रय पर बेचे गए माल पर भार तत्व (लाभ को) को क्रेडिट किया जाएगा यह खाता अर्जित लाभ को दर्शाएगा जो कि किराया क्रय द्वारा अर्जित किया गया होगा।

उदाहरण (Illustration) **12**

वी. जी. लिमिटेड का किराया क्रय विभाग टेलीविजन व रूम कूलर की बिक्री करता है।

	टेलीविजन	**रूम कूलर**
	₹	₹
लागत	5,400	2,000
नकद मूल्य	6,300	2,400
नकद तत्काल भुगतान	900	400
मासिक किश्त	600	200
किश्तों की संख्या	10	12

वर्ष के दौरान किराया क्रय आधार पर 100 टेलीविजन सेट तथा 120 रूम कूलर्स बेचे गए। दो टेलीविजन सेटों जिन पर केवल 3 किश्तें वसूल की जा सकीं तथा 4 रूम कूलर जिन पर 5 किश्तें वसूल की जा सकीं, पुनर्स्वामित्व में ले लिये गए। इनकी कीमत 10,000 ₹ मूल्यांकित की गईं तथा 1,000 ₹ पुनः मरम्मत की लागत लगाने के बाद इसे 14,000 ₹ में बेच दिया गया। अन्य वसूल हुई किश्तें तथा जो देय हो गई हैं (ग्राहकों को अभी तक भुगतान करना है), क्रमशः निम्न हैं—

टेलीविजन सैट	270 और 20
रूम कूलर	400 और 30

विभाग का लाभ दिखाने के लिए स्टॉक एवं देनदार विधि पर खाते बनाइये।

समाधान (Solution)

B. G. Limited

Hire Purchase Stock A/c

	₹		₹
To Goods sold on H. P.	10,26,000	By H. P. Debtors A/c	4,05,600
		By Goods Repossessed A/c (Instalments not due on repossessed goods)	14,000
		By Balance c/d (Instalment not yet due)	6,06,400
	10,26,000		10,26,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Hire Purchase Debtors A/c

To	Hire Purchase Stock A/c	4,05,600	By Bank A/c	3,87,600
			By Balance c/d	18,000
		4,05,600		4,05,600

Goods Repossessed A/c

To	Hire Purchase Stock A/c	14,000	By Hire Purchase Adjustment A/c (Balancing Figure)	4,000
			By Balance c/d	10,000
		14,000		14,000
To	Balance b/d	10,000	By Bank (Sales)	14,000
To	Bank (Exp.)	1,000		
To	Hire Purchase Adjustment A/c (Profit)	3,000		
		14,000		14,000

Goods sold on Hire Purchase A/c

To	Hire Purchase		By Hire Purchase Stock A/c	10,26,000
To	Adjustment A/c (loading)	2,46,000		
To	Profit	7,80,000		
		10,26,000		10,26,000

Hire Purchase Adjustment A/c

Goods repossessed A/c (Loss)	4,000	By Goods sold on Hire Purchase (Loading)	2,46,000
To Stock Reserve	1,44,971		
To Profit	1,00,029	By Goods Repossessed (Profit on sale)	3,000
	2,49,000		2,49,000

Working Notes :

(i) Hire Purchase Price is ₹ 6,900 for each television set and ₹ 2,800 for each room cooler. Total cost and sales on this basis are as follows :

	H. P. Price	*Cost*
	₹	₹
Television sets (100)	6,90,000	5,40,000
Room Coolers (120)	3,36,000	2,40,000
	10,26,000	7,80,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

		Television sets	*Room Coolers*	
		₹	₹	
(ii)	Cash collected			
	Down payment			
	(900 × 100)	90,000	48,000	(400 × 120)
	Instalments collected			
	(600 × 270)	1,62,000	80,000	(400 × 200)
	Amount collected on			
	Repossessed goods			
	(3 × 2 × 600)	3,600	4,000	(5 × 4 × 200)
		2,55,600	1,32,000	

(iii)	Instalment not yet due :	₹
	Television : Total instalments on 98 sets	980
	Instalments collected & due	290
		690
	Amount of 690 instalments @ ₹ 600 each = ₹ 4,14,000	
	Room Coolers :	
	Total instalment on 116 Room Coolers	1,392
	Less : Instalments collected & due	430
		962
	Amount of 692 instalments @ ₹ 200 each = ₹ 1,92,400	
	Total amount (4,14,000 + 1,92,400) = ₹ 6,06,400	
(iv)	Stock Reserve :	
	Television sets $\frac{1,500}{6,900} \times 4,14,000$	90,000
	Room Coolers $\frac{800}{2,800} \times 1,92,400$	54,971
		1, 44,971
(v)	Instalment not due on repossessed goods :	₹
	2 Television sets 7 instalments on each @ ₹ 600	8,400
	4 Room Coolers 7 instalments on each @ ₹ 200	5,600
		14,000
(vi)	Instalment due but not collected :	₹
	Television sets (20 × ₹ 600)	12,000
	Room Cooler (30 × ₹ 200)	6,000
		18,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **13**

Y लिमिटेड किराया क्रय शर्तों पर लागत में 33-1/3% जोड़कर उत्पाद बेचता है। 2008 के लिए विभिन्न विवरण से किराया क्रय स्कन्ध खाता, दुकान स्कन्ध खाता, किराया क्रय देनदार खाता, स्कन्ध संचय खाता एवं किराया क्रय समायोजन खाता तैयार कीजिये।

2008		₹
Jan. 1	Stock out on hire at Hire Purchase Price	1,20,000
	Stock in hand, at Shop	15,000
	Instalment due (Customers still paying)	9,000
Dec. 31	Stock out on hire at Hire Purchase Price	1,38,000
	Stock in hand, at Shop	21,000
	Instalments due (Customers still paying)	15,000
	Cash received during the year	2,40,000

समाधान (Solution)

Hire Purchase Stock Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d	9,000	Jan. 1	By Bank A/c	2,40,000
	To Hire Purchase Stock A/c (instalments due during the year) (Balancing fig.)	2,46,000		By Balance c/d	15,000
		2,55,000			2,55,000

Hire Purchase Stock Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d	1,20,000	Jan.—		
Jan. 1	To Goods sold on Hire		Dec.	By H. P. Debtors A/c	2,46,000
	To Purchase (75%)	1,98,000	Dec. 31	By Balance c/d	1,38,000
Jan. 1	To H. P. Adj. A/c (25%)	66,000			
		3,84,000			3,84,000

Shop Stock Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d	15,000		By H. P. Stock A/c (Cost of Goods sold)	1,98,000
	To Purchase A/c (Balancing fig.)	2,04,000		By Balance c/d	21,000
		2,19,000			2,19,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Stock Reserve Account

2008		₹	2008		₹
	To Hire Purchase Adjustment (transfer)	30,000		By Balance b/d (25% on 1.20,000)	30,000
	To Balance c/d	34,500		By Hire Purchase Adjustment A/c	34,500
		64,500			64,500

Hire Purchase Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
	To Stock Reserve : Closing	34,500		By Stock Reserve Opening	30,000
	To Profit & Loss Account	61,500		By H. P. Stock	66,000
		96,000			96,000

11. कम मूल्य के माल के लिये किराया क्रय अनुबन्ध
(HIRE PURCHASE AGREEMENT FOR GOODS OF SMALL VALUE)

अब तक, हमनें ने बड़े विक्रय मूल्य के माल के लिये किराया क्रय सौदों सामान्यतः दो व्यावसायिक इकाइयों के बीच स्थायी सम्पत्तियों एवं सौदों की ही, चर्चा की है। अब हमें उपभोक्ता वस्तु के किराया क्रय एवं फुटकर विक्रेता व उपभोक्ता के बीच सौदों पर चर्चा करनी चाहिये। यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि लेखांकन केवल विक्रेता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है न कि क्रेता के।

कम मूल्य होने से इन वस्तुओं की विक्रय सम्बन्धी सौदे ज्यादा होने के कारण, व्यावहारिक तौर पर एक फुटकर विक्रेता के लिये प्रत्येक सौदे हेतु अलग–अलग खाते रखना अत्यन्त असुविधाजनक होता है। साथ ही फुटकर विक्रेता होने वाले सौदे हानि तथा अर्जित लाभ के बारे में जानने का इच्छुक नहीं होता। वह तो एक विशेष लेखांकन अवधि में होने वाले सभी सौदों से सम्पूर्ण हानि या अर्जित लाभ सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक होता है। जब किराया क्रय सम्बन्धी सौदों की अधिकता तथा वस्तुओं का मूल्य कम हो तब स्मरण (मैमोरेन्डम) किराया क्रय खाता खोलना अधिक उपयुक्त होता है। साथ ही एक किराया क्रय–विक्रय रजिस्टर रखते हैं, जिसमें माल की किराया क्रय राशि तथा लागत राशि दोनों को दर्शाते हैं। इस रजिस्टर में देय किश्तों की संख्या, तत्काल भुगतान की राशि और किराया क्रय अनुबन्ध की संख्या दर्शाते हैं। स्मरण किराया क्रय खाताबही में ग्राहकों के व्यक्तिगत खाते भी रखे जाने चाहिये। विक्रय मूल्य को व्यक्तिगत ग्राहकों के खाते में डेबिट किया जाता है और जिन किश्तों का भुगतान हो चुका है उसे खाते में क्रेडिट किया जाता है। बिक्री मूल्य के कुल राशि के योग को एक नियन्त्रण खाते में क्रेडिट करते हैं और इसे प्राप्त कुल किश्त राशि से डेबिट करना चाहिये। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि उपरोक्त प्रविष्टियाँ स्मरण प्रकृति की हैं तथा ये दोहरी प्रविष्टि पद्धति का भाग नहीं बन सकतीं। सामान्य बही में व्यक्तिगत मदों को अनदेखा करने के कारण ये प्रविष्टियाँ सम्पूर्ण रूप में अभिलेखित होती है। किराया क्रय विक्रय के रजिस्टर का नमूना अग्रांकित है—

© The Institute of Chartered Accountants of India

Hire Purchase Sales Register

S. No.	Date of Agree-ment	Name of Cust-omer	Name of Article	Cost Price	H. P. Price	Down Pay-ment	No.of Instal-ments	Instal-ments Due				Total Instal-ments Received	Instal-ment due but not received	Instal-ment not yet due
								1	2	3	4			

पुस्तपालक को रजिस्टर में विभिन्न मदों के अभिलेखन में तथा व्यक्तिगत खातों की गणना (कुल योग निकालना) करने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये।

12. लाभ/हानि का निर्धारण

(ASCERTAINMENT OF PROFIT/LOSS)

यहाँ पर दो प्रचलित विधियाँ निम्नांकित हैं, जो किराया क्रय पर बेची गई कम मूल्य की वस्तुओं से सम्बन्धित लाभ/हानि ज्ञात करने में प्रयोग की जाती है—

(अ) किराया क्रय व्यापार खाता विधि,

(ब) स्कन्ध एवं देनदार विधि।

12.1 किराया क्रय व्यापार खाता विधि (Hire Purchase Trading Account Method)

इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रय व्यापार खाता निम्न प्रकार तैयार किया जाता है—

(अ) किराया क्रय खाते को इनके द्वारा डेबिट किया जाएगा—

(i) पिछले वर्ष से लाया गया किराया, क्रय खाते का प्रारम्भिक शेष। सामान्यतः यह किराया क्रय मूल्य पर दिखाया जाता है। यदि यह लागत पर दिया गया हो, तो इसमें भार (लाभ) को जोड़कर किराया क्रय मूल्य में परिवर्तित किया जाएगा

(ii) किराया क्रय देनदार का प्रारम्भिक बकाया (किश्त देय हुई पर प्राप्त नहीं हुई) पूर्व वर्ष से आगे लाया जाता है—

(य) लेखांकन अवधि के दौरान किराया क्रय पर बेची गई वस्तुओं का मूल्य,

(र) लेखांकन अवधि के दौरान किये गए व्यय,

(ल) वस्तुओं के पुनर्स्वामित्व पर हुई हानि।

(ब) किराया क्रय खाते में क्रेडिट किये जाएंगे—

(i) लेखांकन अवधि के दौरान किराया क्रय ग्राहकों से प्राप्त नकद राशि, इसमें सम्मिलित है—तत्काल भुगतान तथा लेखांकन अवधि के दौरान गत वर्ष सहित चालू वर्ष में किराया क्रय किश्तों से एकत्रित की राशि।

(ii) पुनर्स्वामित्व वस्तुओं पर देय किश्तें जिनका अभी तक भुगतान नहीं किया गया।

(iii) किराया क्रय मूल्य पर किराया क्रय स्कन्ध की अन्तिम शेष को आगामी अवधि हेतु आगे ले जाना (किश्तें जो देय नहीं हैं)। ये राशि यदि प्रश्न में न दी हो, तो इसकी गणना किराया क्रय ग्राहक खाता सहित वस्तु प्रलेख बनाकर की जा सकती है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iv) किराया क्रय देनदारों का अन्तिम स्टॉक (किश्तें देय हुई पर अभी तक भुगतान नहीं हुई) अगले वर्ष से आगे लाया जाता है। यदि किराया क्रय देनदारों का अन्तिम स्टॉक दिये गए प्रश्न में नहीं दी गई है, तो इसकी गणना वस्तु प्रलेख किराया क्रय देनदार खाता बनाकर की जा सकती हैं।

Pass adjustment entries for the following :

(i) *For loading on opening balance of Hire Purchase Stock*
(*Instalments not yet due/Goods with H. P. Customers*)
Stock Reserve Account Dr.
To Hire Purchase Trading Account

(ii) *For loading on goods sold on Hire Purchase during the year*
Goods sold on Hire Purchase Account Dr.
To Hire Purchase Trading

(iii) *For loading on closing balance of Hire Purchase Stock*
(*Instalments not yet due/Goods with H. P. Customers)*
Hire Purchase Trading Account Dr.
To Stock Reserve Account

एक किराया क्रय व्यापारिक खाते का प्रारूप नीचे दिया गया है—

Dr. **Hire Purchase Trading Account** *Cr.*

Date	*Particulars*	₹	*Date*	*Particulars*	₹
To	Balance b/d :		By	Cash A/c	
	Hire Purchase Stock (at H. P. price)		By	Goods Repossessed A/c (instalments due but not paid)	
	Hire Purchase Debtors		By	Stock Reserve A/c	
To	Goods Sold on H. P. A/c (H. P. price)			(Loading on opening H. P. stock)	
To	Loss on Goods Repossessed A/c		By	Goods sold on H. P. A/c	
To	Expenses A/c			(Loading on goods sold)	
To	Stock Reserve A/c		By	Balance c/d :	
	(Loading on closing H. P. stock)			H. P. Stock (at H. P. price)	
To	Profit & Loss A/c			H. P. Debtors	

© The Institute of Chartered Accountants of India

12.1.1 पुनर्स्वामित्व (Repossession)—जब माल भुगतान में चूक के लिये पुनर्स्वामित्व में ले ली जाती है, माल पर किश्त की संख्या जो देय है पर अभी प्राप्त नहीं हुई है, वसूली योग्य नहीं होती। पुनर्स्वामित्व में किये गए माल के सम्बन्ध में इन किश्तों की राशि, वस्तु प्रलेख किराया क्रय खाते में पहले वाले को क्रेडिट करके और बाद वाले को डेबिट करते हुए वस्तु प्रलेख किराया क्रय देनदार खाते से माल पुनर्स्वामित्व खाते में हस्तांतरित की जाती है।

The following are the Journal Entries for Repossession :

(1) *When the goods are repossessed*

Goods Repossessed Account		Dr.	[Instalments due but not yet paid]
To Hire Purchase Trading Account			

(2) *When there is a loss on repossession*

[*Selling price/market price is less than Instalments due but not yet paid*]

Hire Purchase Trading Account	Dr.	
To Loss on Repossession Account		

(3) *When there is a profit on repossession*

[*Selling price/market price is greater than Instalments due but not yet paid*]

Profit on Repossession Account	Dr.	
To Hire Purchase Trading Account		

13. लापता अंकों की गणना

(CALCULATION OF MISSING FIGURES)

परीक्षा में कभी–कभी, लाभ/हानि की गणना के लिये आवश्यक आँकड़े नहीं दिये होते। ये हो सकते हैं—(i) किराया क्रय स्कन्ध, (ii) किराया क्रय देनदार, (iii) क्रय या (iv) नकद प्राप्ति आदि। किराया क्रय खाता बनाने से पहले, लापता आँकड़ों की गणना करनी चाहिये। इसके लिये निम्न चरणों को अपनाना चाहिये—

चरण 1. निम्न वस्तु प्रलेख खाते बनाइये

(अ) वस्तु प्रलेख दुकान + स्कन्ध खाता

(ब) वस्तु प्रलेख किराया क्रय स्कन्ध खाता/वस्तु प्रलेख किराया क्रय ग्राहकों सहित स्कन्ध खाता

(स) वस्तु प्रलेख किराया क्रय देनदार खाता/देय किश्त खाता

चरण 2. सम्बन्धित खातों में उपलब्ध आँकड़े डालें।

चरण 3. उपलब्ध अधिकतम अंकों से खातों को मिलाएँ। ये उस खाते के लापता अंकों को ढूँढ़ने में सहायक होंगी।

चरण 4. तीसरे चरण में गणना किये गए आँकड़ों को सम्बन्धित खातों में डालें।

चरण 5. अन्तरण की यह प्रक्रिया सभी आँकड़ों के मिलन तक जारी रखें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

इन खातों का प्रारूप निम्न है—

Dr. **Memorandum Stock at Shop Account** Cr.

To	Balance b/d (at cost)	By	Goods sold on Hire Purchase A/c (at cost)
To	Purchases	By	Balance c/d

Dr. **Memorandum Hire Purchase Stock** Cr.

	Particulars	₹		*Particulars*	₹
To	Balance b/d (at H. P. Price)		By	CashA/c	
To	H. P. Stock A/c (total instalments due)			(instalments not yet due)	
			By	Balance c/d	

Dr. **Memorandum Hire Purchases Debtors Account** Cr.

	Particulars	₹		*Particulars*	₹
To	Balance b/d (at H.P. price)		By	Cash A/c	
To	H.P. Stock A/c (total instal-		By	Goods Repossessed A/c	
	ments due)			(instal. due but not yet recd.)	
			By	Balance c/d	

14. किश्त भुगतान प्रणाली

(INSTALMENT PAYMENT SYSTEM)

किश्त भुगतान प्रणाली में माल का स्वामित्व संविदा पर हस्ताक्षर करने पर क्रेता के पास तुरन्त आ जाता है। इस मौलिक अन्तर के कारण, किश्त भुगतान पद्धति के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियाँ, किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत की गई लेखांकन प्रविष्टियों से थोड़ी–सी भिन्न हो जाती हैं। प्रविष्टि सम्बन्धित स्कीम इस तरह है—

क्रेता की पुस्तकें (Books of Buyer)— क्रेता पूरे नकद मूल्य से सम्पत्ति खाता डेबिट करता है तथा सम्पूर्ण किश्त राशि से विक्रेता खाता क्रेडिट करता है तथा पूर्ण किश्त मूल्य राशि और पूर्ण नकद राशि के अन्तर को ब्याज उच्चन्त खाते में डेबिट करता है। ब्याज राशि ब्याज उच्चन्त खाते में (ब्याज खाते में नहीं) डेबिट की जाती है, क्योंकि इसमें वर्षों की एक संख्या का ब्याज अधिक होता है। प्रत्येक वर्ष चालू वर्ष ब्याज के साथ ब्याज खाता डेबिट एवं ब्याज उच्चन्त खाता क्रेडिट किया जाता है। वर्ष की समाप्ति पर, ब्याज खाता, लाभ/हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। ब्याज उच्चन्त खाते का शेष चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है। विक्रेता को उसकी देय किश्त राशि का भुगतान करके मूल्यह्रास हेतु प्रविष्टि सामान्य प्रचलित तरीके से की जाती है।

विक्रेता की पुस्तकें (Books of Seller)—विक्रेता क्रेता को उसके द्वारा देय पूरी राशि (किश्त मूल्य) से डेबिट एवं पूरी नकद राशि द्वारा विक्रय खाता क्रेडिट करता है और ब्याज उच्चन्त खाते को कुल किश्त मूल्य एवं नकद मूल्य के अन्तर से क्रेडिट करता है। क्रेता की तरह विक्रेता भी प्रत्येक वर्ष देय ब्याज को ब्याज उच्चन्त खाते से ब्याज खाते में हस्तांतरित करता है। ब्याज खाते को लाभ एवं

© The Institute of Chartered Accountants of India

हानि खाते में अन्तरित कर बन्द किया जाता है एवं ब्याज उच्चन्त खाते के शेष को चिट्ठे में दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। किश्त प्राप्त होने पर विक्रेता नकद/बैंक खाते को डेबिट एवं क्रेता के खाते को क्रेडिट करता है।

15. किराया क्रय अनुबन्ध एवं किश्त भुगतान अनुबन्ध का अन्तर

(DIFFERENCE OF HIRE PURCHASE AGREEMENT AND INSTALMENT PAYMENT AGREEMENT)

किराया क्रय संविदा एक ऐसी संविदा है जिसमें किराया क्रेता को उसे प्रदत्त माल प्राप्त करने के विक्रय सहित निक्षेप जुड़ा होता है। माल की सुपुर्दगी के द्वारा उसे केवल प्रयोग का अधिकार देता है स्वामित्व का नहीं। किराया मूल्य राशि की अन्तिम किश्त के भुगतान या संविदा में निर्धारित कुछ अन्य शर्तों को पूरा करने के साथ ही वस्तु या सम्पत्ति का स्वामित्व अधिकार किराया क्रेता के नाम हस्तांतरित कर दिया जाता है। इसके पूर्व किसी भी समय किराया क्रेता के पास सम्बन्धित माल लौटाने का विकल्प सुरक्षित रहता है तथा ऐसा करने पर उसे केवल उस समय तक देय हो चुकी किश्तों का ही भुगतान करना होता है। किराया क्रय अनुबन्ध का मूल तत्व क्रय सम्बन्धी विकल्प या अधिकार है। किराया क्रेता द्वारा किराया क्रय की किश्त में से किसी एक भी किश्त के भुगतान में चूक करने पर विक्रेता माल को वापिस ले सकता है। यह कानूनी रूप से वैध है क्योंकि माल की सम्पत्ति अभी भी विक्रेता की है।

जबकि दूसरी ओर क्रेता एवं विक्रेता के बीच ये सहमति हो सकती है कि माल का मूल्य किश्तों में देय होगा तथा सम्बन्धित सम्पत्ति क्रेता को तुरन्त सौंप दी जाएगी। किश्तों की राशि के भुगतान की चूक होने पर भी विक्रेता को सम्बन्धित सम्पत्ति को वापस लेना सम्भव नहीं होगी। फिर भी उसे यह अधिकार होगा कि वह क्रेता के विरुद्ध तत्सम्बन्धी मूल्य की वसूली जो उसे भुगतान नहीं की गई है, के लिये कानूनी कार्यवाही करे।

किराया क्रय मूल्य का विश्लेषण—किराया क्रय मूल्य, नकद मूल्य राशि की अपेक्षा सदैव अधिक होता है, क्योंकि इसमें सम्बन्धित माल का वास्तविक मूल्य तथा देय ब्याज भी शामिल है। ये राशि उसके द्वारा सम्बन्धित माल का किश्तों में भुगतान प्राप्त करने के लिये सहमत होने एवं इससे सम्बन्धित जोखिम वहन करने सम्बन्धित ब्याज के लिए विक्रेता को क्षतिपूर्ति के रूप में चुकाई जाती है अतएव इसके अन्तर्गत निम्न तत्व शामिल किये जाते हैं—

(अ) नकद मूल्य,

(ब) अदत्त किश्तों पर ब्याज,

(स) क्रेता द्वारा किराया क्रय मूल्य राशि की एक या एक से अधिक किश्तों के भुगतान में चूक के अन्तर्गत सन्निहित जोखिम से बचाने या उसके द्वारा क्षतिग्रस्त दशा में माल को वापस करने सम्बन्धी शुल्क देना।

ब्याज, माल की सुपुर्दगी लेने के बाद माल के मूल्य का किश्तों में भुगतान करने की सुविधा का शुल्क है। इस ब्याज की दर सामान्यतः अग्रिम राशि अथवा ऋण के सम्बन्ध में देय ब्याज दर की तुलना में अधिक होती है। इसमें किरायेदार के देय किश्तों में से किसी के भुगतान में असफल रहने और ऐसी किसी स्थिति में, सम्बन्धित माल को, वह उस समय जिस स्थिति में है, में वापिस स्वामित्व में लेने पर उठाई जोखिम हेतु शुल्क राशि भी शामिल रहती है।

इस आधार पर अलग से कोई शुल्क नहीं लगाया जाता, क्योंकि ऐसा करना किराया क्रय–विक्रय के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं होगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **14**

कृष्णा ऐजेन्सीज ने 1 अप्रैल, 2007 को व्यापार प्रारम्भ किया। 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के दौरान उन्होंने नीचे दिये गए माल को दो स्कीमों के अन्तर्गत बेचा—नकद मूल्य योजना (CPS) एवं किराया क्रय योजना (H. P. S.)।

नकद मूल्य योजना के अन्तर्गत उन्होंने माल को लागत में 25% जोड़कर तथा सुपुर्दगी पर भुगतान करने पर दिया।

किराया क्रय योजना के अन्तर्गत खरीददार को माल के मूल्य जिसमें वित्तीय शुल्क शामिल है, का भुगतान 30 किश्तों में देने की सहमति सम्बन्धित संविदा पर हस्ताक्षर करने होंगे तथा इस मूल्य की गणना नकद मूल्य में 50% जोड़कर की जाएगी। माल के सम्बन्ध में 31 मार्च, 2008 की समाप्ति पर निम्न विवरण उपलब्ध हैं :

उत्पाद	खरीद की संख्या	CPS के अन्तर्गत बिक्री संख्या	HPS के अन्तर्गत बिक्री संख्या	प्रति मूल्य इकाई	वर्ष के दौरान देय किश्तों की संख्या	वर्ष के दौरान प्राप्त किश्तों की संख्या
टी. वी. संख्या	90	20	60	16,000	1,080	1,000
धुलाई मशीनें	70	20	40	2,000	840	800

वर्ष के दौरान निम्न व्यय किये गए—

	₹
किराया	1,20,000
वेतन	1,44,000
सेल्समेन को कमीशन	12,000
कार्यालय व्यय	20,000

उपरोक्त सूचना से, आपसे तैयार करना अपेक्षित है—

(अ) किराया क्रय व्यापार खाता, और

(ब) व्यापार एवं लाभ व हानि खाता।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

In the Books of Krishna Agencies

Hire-Purchase Trading Account

for the year ended 31st March, 2008

		₹	₹			₹	₹
To	Goods sold on H. P. A/c :			By	Bank A/c cash received		
	TVs				TVs		
	(60 × ₹ 30,000)	18,00,000			(1,000 × ₹ 1,000)		
						10,00,000	
	Washing Machines				Washing Machines		
	(40 × ₹ 22,500)	9,00,000	27,00,000		(800 × ₹ 750)		
						6,00,000	16,00,000
To	H. P. Stock Reserve			By	Instalment Due A/c :		
	₹ 9,90,000 × $\frac{87.5}{187.5}$		4,62,000		TVs		
					(80 × ₹ 1,000)	80,000	
To	Profit & Loss A/c		7,98,000		Washing Machines		
	(H.P. profit transferred)				(40 × ₹ 750)	30,000	1,10,000
				By	Goods sold on HP A/c : (Cancellation of loading)		
					₹ 27,00,000 × $\frac{87.5}{187.5}$		12,60,000
				By	H. P. Stock (W. N 2)		9,90,000
			39,60,000				39,60,000

Trading and Profit & Loss Account

for the year ended 31st March, 2008

		₹	₹			₹	₹
To	Purchases :			By	Sales :		
	TVs				TVs		
	(90 × ₹ 16,000)	14,40,000			(20 × ₹ 20,000)		
						4,00,000	
	Washing Machines				Washing Machines		
	(70 × ₹ 12,000)	8,40,000	22,80,000		(20 × ₹ 15,000)		
						3,00,000	7,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

To Gross profit c/d	1,40,000	By	Goods sold on H. P. A/c (27,00,000 – 12,60,000)	14,40,000
		By	Shop Stock (W. N 3)	2,80,000
	24,20,000			24,20,000
To Salaries	1,44,000	By	Gross profit b/d	1,40,000
To Rent	1,20,000	By	H. P. Trading A/c	
To Commission	12,000		(H. P. Profit)	7,98,000
To Office expenses	1,20,000			
To Net Profit	5,42,000			
	9,38,000			9,38,000

Working Notes :

(1) *Calculation of per unit cash price, H. P. price and Instalment Amount* :

Product	*Cost* ₹	*Cash Price* ₹(Cost × 1.25)	*H. P. Price* ₹ (Cash Price × 1.50)	*Instalment* Amount (₹) (H. P. price/ No. of Instal-ments)
TV sets	16,000	20,000	30,000	1,000
Washing Machines	12,000	15,000	22,500	750

(2) *Calculation of H. P. Stock as on 31st March, 2008* :

Product	*Total No. of Instal-ments (Nos.)*	*Instalments Due in 2007 -2008 (Nos.)*	*Instalments not due in 2007-2008 (Nos.)*	*Amount* ₹
TV sets	1,800	1,080	720	7,20,000
Washing Machines	1,200	840	360	2,70,000
				9,90,000

(3) *Calculation of Shop Stock as on 31st March, 2008* :

Product	Purchased (Nos.)	Sold (Nos.)	Balance (Nos.)	Amount ₹
TV sets	90	80	10	1,60,000
Washing Machines	70	60	10	1,20,000
				2,80,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **15**

ए ने 1 जनवरी, 2008 को एक मशीन किराया क्रय अनुबन्ध के अन्तर्गत की जो प्रत्येक 6,000 ₹ की 5 अर्द्धवार्षिक किश्तों पर दी जाती है, पहली किश्त 1 जुलाई, 2008 पर देय होती है। यह मानकर कि ब्याज की लागू दर 10% प्रतिवर्ष है, मशीन के नकद मूल्य की गणना कीजिये। सभी कार्य टिप्पणियाँ उत्तर का भाग होना चाहिये।

समाधान (Solution)

Statement showing cash value of the machine acquired on hire-purchase basis

	Instalment Amount	*Interest @ 5% half yearly (10% p.a.) = 5/105 = 1/21 (in each instalment)*	*Principal Amount (in each instalment)*
	₹	₹	₹
5th Instalment	6,000	286	5,714
Less : Interest	– 286		
	5,714		
Add : 4th Instalment	6,000		
	11,714	558	5,442
Less : 3rd instalment	558		(11,156 – 5,714)
	11,156		
Add : 3rd instalment	6,000		
	17,156	817	5,183
Less : Interest	817		(16,339 – 11,156)
	16,339		
Add : 2nd instalment	6,000		
	22,339	1,063	4,937
Less : Interest	1,063		(21,276 – 16,339)
	21,276	1,299	4,701
Add : 1st Instalment	6,000		
	27,276		
Less : Interest	1,299		(25,977 – 21,276)
	25,977	4,023	25,977

The cash purchase price of machinery is ₹ 25,977.

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत, किराया क्रेता क्रय की लागत को किश्तों में भुगतान करता है। माल का स्वामित्व केवल अदत्त शेष के भुगतान करने के बाद ही किराया विक्रेता के द्वारा हस्तांतरित किया जाएगा।
- किश्त पद्धति के अन्तर्गत, माल का स्वामित्व माल को सुपुर्द करने की तिथि पर स्वामी द्वारा हस्तांतरित कर दिया जाता है।
- लेखांकन विधियां, जब माल का विक्रय किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत अधिक है—
  - नकद मूल्य विधि,
  - ब्याज उच्चन्त विधि।
- लेखांकन विधियां, जब माल का विक्रय किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत कम है—
  - देनदार विधि,
  - स्कन्ध एवं देनदार विधि।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिये हुए विकल्प से सही उत्तर चुनिये—

1. माल खरीदने के लिये किराया क्रय सौदे में प्रवेश के समय भुगतान की गई राशि जानी जाती है :
   (अ) नकद मूल्य
   (ब) तत्काल भुगतान
   (स) प्रथम किश्त
   (द) किराया क्रय मूल्य
2. किराया क्रय माल पर ब्याज का अन्तर है :
   (अ) किराया क्रय मूल्य एवं नकद मूल्य
   (ब) किराया क्रय मूल्य एवं तत्काल भुगतान
   (स) नकद मूल्य एवं पहली किश्त
   (द) उपरोक्त में से कोई नहीं
3. किराया क्रय सम्पत्ति पर मूल्य ह्रास दावा कर्ता है :
   (अ) किराया विक्रेता
   (ब) किराया क्रेता
   (स) उनके बीच हुए अनुबन्ध के हिसाब से या किराया विक्रेता द्वारा या किराया क्रेता द्वारा
   (द) अन्तिम किश्त के भुगतान प्राप्ति तक मूल्य ह्रास का कोई दावा नहीं

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. किश्त भुगतान पद्धति के अन्तर्गत, माल का स्वामित्व—
   (अ) अन्तिम किश्त के भुगतान के समय अन्तरित होता है
   (ब) अन्तरित नहीं होता
   (स) संविदा पर हस्ताक्षर के समय अन्तरित होता है
   (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
   [**उत्तर** (Answer)—1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (स)।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

5. किराया क्रय व्यापारिक खाते पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
6. किराया क्रेता द्वारा की गई चूक पर पुनर्स्वामित्व माल के लेखांकन व्यवहार का विवेचन कीजिये।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

7. किराया क्रय पद्धति से आप क्या समझते हैं? ये किश्त भुगतान पद्धति से किस प्रकार भिन्न है?
8. मै. ABC किराया क्रय पद्धति पर बहुत छोटे मूल्य की बहुत छोटी वस्तुएँ एक संख्या में बेचते हैं तथा आपसे खातों को रखने के लिये एक साधारण पर सन्तुष्टपूर्ण पद्धति की संस्तुति करने का अनुरोध करते हैं। उनके लिये आपकी सलाह क्या होगी?

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

9. डी. लि. लागत में 60% जोड़कर, किराया क्रय आधार पर माल बेचते हैं। 2008 से सम्बन्धित निम्नांकित विवरण से किराया क्रय सौदों पर लाभ या हानि निकालिये—

	₹
1 जनवरी, 2008 को देय किश्तें जो ग्राहक द्वारा भुगतान की जानी हैं	2,000
किश्तें जो अभी तक देय नहीं हुई	25,000
किराया क्रय आधार पर वर्ष के दौरान बेचे गए माल की लागत	60,000
किराया क्रय देनदार से प्राप्त नकदी	90,000
31 दिसम्बर, 2008 को देय किश्तें, जो ग्राहक द्वारा भुगतान की जानी हैं	3,000

10. 2000 ₹ लागत का एक रैफ्रीजरेटर, 1 अप्रैल, 2008 को किराया क्रय आधार पर 3,000 ₹ में बेचा गया, जिसका भुगतान 150 ₹ प्रत्येक की 20 मासिक किश्तों में किया जाना है। यदि ब्याज को अनदेखा किया जाता है, तो 2008 के लिए लाभ क्या होगा? आपका उत्तर क्या होगा यदि ब्याज को अनदेखा न किया जाये?
11. ए लिमिटेड ने एफ लिमिटेड से एक ट्रक, किराया क्रय आधार पर खरीदा, भुगतान निम्न रूप से किया जाता है—प्रथम वर्ष 1,30,000 ₹, द्वितीय वर्ष 1,20,000 ₹, तृतीय वर्ष 1,10,000 ₹। उपर्युक्त विवरण की राशि में 10% प्रतिवर्ष वार्षिक ब्याज शामिल है। ए लिमिटेड प्रत्येक वर्ष 30 जून को पुस्तकें बन्द करता है तथा घटती शेष मूल्य के आधार पर 30% प्रतिवर्ष से मूल्य ह्रास अपलिखित करता है।
    ट्रक खाता बनाइये

© The Institute of Chartered Accountants of India

12. के. इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने निम्न किराया क्रय दशाओं पर 1 जनवरी, 2007 पर सुपुर्दगी लेकर एक संयंत्र अधिग्रहित किया—(i) सुपुर्दगी पर या उससे पहले आंशिक भुगतान के रूप में 40,000 ₹ का भुगतान करता है। (ii) 30 जून, 2008 से शुरू करके 30,000 ₹ प्रत्येक के चार अर्द्धवार्षिक भुगतान करता है। दशाओं तक पहुँचने में, शेष वर्षों में संयन्त्र निर्माता 6% प्रतिवर्ष पर ब्याज की गणना करता है। संयन्त्र का नकद मूल्य क्या है?

13. कॉल्लियरी लिमिटेड ने 1 जनवरी पर वैगन्स लिमिटेड के साथ वैगन्स की खरीद के सम्बन्ध ा में किराया क्रय अनुबंध में प्रवेश किया, जिसके मूल्य का भुगतान छः माह के अन्तराल पर 4,000 ₹ की चार बराबर किश्तों के द्वारा दो वर्षों तक करना है। वैगन्स का नकद मूल्य 14,770 ₹ था। प्रत्येक वर्ष, वित्तीय शुल्कों को डेबिट करते हुए लाभ एवं हानि खाता दिखाइये।

14. मै. रहीम वर्क्स एण्ड कं. किराया क्रय आधार पर एक पियानो बेचता है। मूल्य का भुगतान निम्न प्रकार करना है—1,600 ₹ की सुपुर्दगी के समय 2,700 ₹ प्रथम वर्ष, 1,500 ₹ द्वितीय वर्ष एवं 4,400 ₹ तृतीय वर्ष के अन्त में। किराया क्रय ब्याज की गणना 10% प्रतिवर्ष ब्याज के आधार पर ज्ञात की जाती है। पियानो का नकद मूल्य क्या है?

15. एक रैफ्रीजरेटर 123 ₹ सुपुर्दगी पर एवं बाकी 123 ₹ की 12 त्रैमासिक किश्तों में भुगतान करने के एक ढंग में 1,599 ₹ में खरीदा गया। नकद मूल्य 1,365 ₹ है। किराया क्रय मूल्य में शामिल ब्याज की राशि निर्धारित कीजिये, जो प्रत्येक वर्ष विक्रेता के लाभ एवं हानि खाते में क्रेडिट होनी चाहिये। आप यह मानकर कि रैफ्रीजरेटर की बिक्री केवल अप्रैल से सितम्बर माह के अन्तर्गत होती है; साथ ही समायोजनों को (यदि कोई हो) भी समझाइये, कि प्रत्येक वर्ष के लाभ एवं हानि खाते में जमा (क्रेडिट) की जाने वाली ब्याज की राशि आप कैसे निकालेंगे, माना लें कि खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च पर बन्द होते हैं।

16. रामा एण्ड कं. रैफ्रीजरेटर एवं रेडियो के सौदे करती है। 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के दौरान, फर्म ने 100 ₹ प्रत्येक की 5 किश्तों में देय, 2,500 ₹ प्रत्येक के 5 रैफ्रीजरेटर, 100 ₹ प्रत्येक की 10 किश्तों में देय 1,000 ₹ प्रत्येक के 5 रेडियो बेचे। प्रत्येक मामले में सकल लाभ, विक्रय मूल्य का 20% होता है। वर्ष के दौरान देय हुई एवं संग्रहित की गई किश्तों की संख्या थी—

बेचे माल का विवरण	बेची गई इकाइयों की संख्या जो देय हो गई हैं	कुल किश्तों की संख्या	किश्तों की संख्या	संग्रहित किश्तें	किश्तें जो देय नहीं हुई हैं
रैफ्रीजरेटर	5	125	30	25	95
रेडियो	5	50	25	25	25

एक रैफ्रीजरेटर जिस पर पाँच किश्तें भुगतान की जा चुकी है, को किश्तों के भुगतान को चालू रखने की अयोग्यता की वजह से पुनर्स्वामित्व में लिया गया। सौदों को अभिलेखित करने के लिये, रामा एण्ड कं. की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये तथा 31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त हुई अवधि के लिये किराया क्रय विक्रय पर फर्म का लाभ ज्ञात कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

12

निवेश लेखे

[INVESTMENT ACCOUNTS]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **निवेश शब्द का अर्थ समझने में।**
- **निवेशों के वर्गीकरण को जानने में।**
- **निवेशों के अधिग्रहण लागत** (acquisition cost) **एवं परिचालन राशि (**carrying amounts) **की गणना में।**
- **निवेशों के निपटारे पर लाभ/हानि की गणना में।**

1. परिचय

(INTRODUCTION)

निवेश किसी संस्थान द्वारा लाभांश, ब्याज तथा किराये के माध्यम से आय अर्जित करने हेतु या पूंजीगत वृद्धि हेतु या निवेशकर्ता संस्थान को अन्य लाभ सुलभ करने हेतु धारण की गई सम्पत्तियाँ हैं। निवेश लेखांकन ए एस 13 (AS 13) के अनुसार किया जाता है जो सभी प्रकार के निवेशों पर व्यवहार करता है सिवाय—

(i) निवेशों पर उपार्जित ब्याज, लाभांश तथा किराया

(ii) परिचालनात्मक या वित्तीय पट्टे

(iii) अवकाश ग्रहण अनुलाभ योजनाओं तथा जीवन बीमा संस्थानों के निवेश

(iv) पारस्परिक कोषों (म्युचुअल फंडस)

(v) व्यापारिक रहतिये के रूप में धारित सम्पत्तियाँ 'निवेश' नहीं हैं।

2. निवेशों का वर्गीकरण

(CLASSIFICATION OF INVESTMENTS)

ए एस 13 (AS 13) के अनुसार निवेशों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है अर्थात् चालू निवेश (Current Investments) तथा दीर्घकालीन निवेश (Long-term Investments)।

© The Institute of Chartered Accountants of India

2.1 चालू निवेश (Current Investments)

- एक चालू निवेश एक ऐसा विनियोजन है जो, अपने स्वभाव के द्वारा तत्परता से वसूली योग्य है तथा जिसे, उस तिथि (जिस पर ऐसा विनियोजन किया जाता है) से एक वर्ष से अधिक समय के लिए रखने का इरादा नहीं होता।
- चालू निवेशों को 'लागत' और 'उचित मूल्य', जो कम हो राशि पर ले जाना चाहिए।
- उचित मूल्य वह राशि है, जिसके लिए कोई सम्पत्ति संज्ञान इच्छुक क्रेता तथा संज्ञान इच्छुक विक्रेता के मध्य आमने–सामने (Arm's Length) रहते हुए विनिमयत की जाये। उपयुक्त परिस्थितियों में बाजार मूल्य अथवा शुद्ध वसूली योग्य मूल्य, उचित मूल्य का साक्ष्य प्रदान करता है।
- बाजार मूल्य खुले बाजार में किसी निवेश के विक्रय से प्राप्त होने योग्य वह राशि है जो उस पर अनिवार्यतः निपटारे पर या उससे पूर्व किये जाने वाले व्ययों के पश्चात् मिलें।
- उचित मूल्यों में कोई कटौती तथा ऐसी कटौतियों में कोई विपरीत गमन को लाभ–हानि विवरण में शामिल किया जाता है।

2.2 दीर्घकालीन निवेश (Long-term Investments)

- एक दीर्घकालीन निवेश ऐसा निवेश है जो चालू निवेश के अतिरिक्त हो।
- दीर्घकालीन निवेशों को साधारणतः लागत मूल्य पर लिया जाता है।
- यदि यहाँ दीर्घकालीन निवेशों के मूल्यों में स्थायी गिरावट है तो गिरावट को मान्यता देने हेतु परिचालन राशि को कम किया जाता है।
- परिचालन राशि में कमी को लाभ एवं हानि विवरण में प्रभारित किया जाता है।
- परिचालन राशि में कमी को विपरीत कर दिया जाता है जब निवेश के मूल्य में वृद्धि हो या कमी के कारणों का अब अस्तित्व न रहे।

3. निवेश अधिग्रहण

(INVESTMENT ACQUISITIONS)

1. किसी निवेश की लागत में अधिग्रहण प्रभार शामिल होते हैं जैसे कि दलाली शुल्क (फीस) एवं कर।
2. अंशों या अन्य प्रतिभूतियों को निर्गमित करके, यदि कोई निवेश अधिग्रहण किये जाते हैं या अंशतः प्राप्त किये जाते हैं, तो प्राप्ति की लागत निर्गमित प्रतिभूतियों या सम्पत्ति का उचित मूल्य होता है।

   यह अनिवार्य नहीं है कि उचित मूल्य, निर्गमित प्रतिभूतियों के अंकित या सममूल्य के समान हो सके।

   यदि कोई निवेश किसी अन्य सम्पत्ति से विनिमय या आंशिक विनिमय द्वारा प्राप्त किये जाते हैं तो निवेश की अधिग्रहण लागत त्यागी गयी सम्पत्ति के उचित मूल्य के संदर्भ में निर्धारित की जाती है। यदि यहाँ अधिक स्पष्ट साक्ष्य हैं, तो अधिगृहीत निवेश के उचित मूल्य का विचार करना उपर्युक्त हो सकता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. प्रत्येक क्रय की गयी प्रतिभूतिपत्र (Scrip) के लिए एक पृथक् निवेश खाता बनाना चाहिए। क्रय की गयी प्रतिभूतिपत्रों (Scrips) को व्यापक तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) निश्चित (Fixed) आय वहन करने वाली प्रतिभूतिपत्र (Scrips)

(ii) परिवर्तनशील (Variable) आय वहन करने वाली प्रतिभूतिपत्र (Scrips)

इन दोनों व्यापक श्रेणियों की प्रतिभूतिपत्रों (Scrips) के लिए निवेश खाते में प्रविष्टियाँ निम्नानुसार की जायेंगी—

(i) निश्चित (Fixed) आय वहन करने वाली प्रतिभूति : इस श्रेणी के अंतर्गत सरकारी प्रतिभूतियों या ऋणपत्रों में विनियोजन किया जाता है। इस प्रकार की प्रतिभूति में अंतिम, भुगतान की तिथि से लेनदेन (Transaction) की तिथि तक के उपार्जित ब्याज की गणना सरलता से की जा सकती है।

'ब्याज–रहित' आधार पर लेनदेन की दशा में, यानि, जब लेनदेन की तिथि तक के उपार्जित ब्याज की राशि, प्रतिभूति के मूल्य के अतिरिक्त चुकाई जाती है।

क्रेता की पुस्तकों में निम्नांकित प्रविष्टियाँ की जाती हैं :

विकलन (Debit)—'ब्याज–रहित' आधार पर निपटारे मूल्य की राशि की प्रविष्टि पूंजी स्तंभ में की जाती है।

विकलन (Debit)—लेनदेन की तिथि तक का उपार्जित ब्याज आय स्तंभ में।

'ब्याज–सहित' आधार पर लेनदेन की दशा में, क्रय मूल्य का एक हिस्सा, 'अंतिम ब्याज भुगतान की तिथि' से 'लेनदेन की तिथि' तक के उपार्जित ब्याज से सम्बंधित होता है और इसलिए इस दशा में निवेश की लागत की गणना, क्रय मूल्य में से उपार्जित ब्याज की राशि को घटाकर की जाती है। क्रेता की पुस्तकों में निम्नांकित प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

विकलन (Debit)—'अंतिम ब्याज भुगतान की तिथि' से 'क्रय की तिथि' तक के उपार्जित ब्याज की प्रविष्टि आय स्तंभ में की जाती है।

विकलन (Debit)—शेष यानि, क्रय मूल्य-उपार्जित ब्याज, पूंजी स्तंभ में।

जब ब्याज की राशि वास्तव में प्राप्त होती है, तो उसकी प्रविष्टि आय स्तंभ के समाकलन (credit) पक्ष में की जाती है। इन प्रविष्टियों का शुद्ध प्रभाव होगा कि, क्रय की तिथि और अगली देय तिथि के मध्य उत्पन्न होने वाली सिर्फ ब्याज की राशि आय में समाकलित (credit) की जायेगी।

टिप्पणी (Notes)—

(a) ब्याज की राशि की गणना, हमेशा अंकित मूल्य के सम्बन्ध में की जाती है।

(b) उद्धरण (quotation), परिमित (qualified) न होने की दशा में, इसे 'ब्याज–रहित' उद्धरण (quotation), के रूप में उपचारित किया जायेगा। (प्रश्न में स्पष्ट न होने की दशा में, इसे 'ब्याज–रहित' लेनदेन की तरह उपचारित किया जायेगा।)

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **परिवर्तनशील** (Variable) आय वहन करने वाली प्रतिभूति : इस श्रेणी के अंतर्गत समता अंशों में विनियोजन किया जाता है। समता अंशों में विनियोजन के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान रखना चाहिए :

(a) अंशों में विनियोजन से लाभांश को तब तक लाभ एवं हानि के विवरण में मान्यता नहीं देते, जब तक, इसके लिए भुगतान प्राप्त करने का अधिकार स्थापित नहीं हो।

(b) 'अंतिम लाभांश भुगतान की तिथि' से 'क्रय की तिथि' तक के मध्य उपार्जित लाभांश की राशि, तत्काल सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

(c) समय की एक विशेष अवधि हेतु प्राप्त लाभांश को अवधि के दौरान समान रूप से वितरित माना जाता है।

क्रय के समय पर निवेशक की पुस्तकों में सूचनाओं को निम्नलिखित तरीके से सम्मिलित (incorporated) किया जाता है—

विकलन (Debit)—निवेश खाते के पूंजी स्तंभ में पूर्ण क्रय मूल्य से।

जब लाभांश वास्तव में प्राप्त होता है, तब लाभांश के सम्बन्ध में निम्नांकित समायोजन किये जाते हैं—

समाकलन (Credit)—उस अवधि के लिए लाभांश की राशि जिसके लिए निवेशक, अंशों को धारण नहीं करता था, निवेश खाते के पूंजी स्तंभ में।

समाकलन (Credit)—कुल लाभांशों में से उपर्युक्त राशि घटाने के पश्चात् की राशि को निवेश खाते के आय स्तंभ में।

- समता अंशों में विनियोजन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिंदु है कि, उस अवधि के लिए लाभांश की राशि को, जिसके लिए निवेशक द्वारा अंशों को धारित नहीं किया गया था, आयगत प्राप्ति के रूप में उपचारित नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें पूंजीगत प्राप्ति के रूप में उपचारित करना चाहिए।
- जब पूर्व अधिग्रहण लाभों से समता अंशों पर लाभांश घोषित हो, तो समान रूप से उपचारित किया जाता है अर्थात्, निवेशक द्वारा प्राप्त ऐसे लाभांश की राशि की प्रविष्टि पूंजी स्तंभ में **समाकलन** (credit) पक्ष में की जाती है, जिससे कि अधिग्रहण लागत कम हो जाती है।
- यदि किसी स्वेच्छित आधार के सिवाय, यहाँ अधिग्रहण की पूर्व एवं पश्चात् अवधि में बँटवारा करना कठिन हो, तो साधारणतः निवेशों की लागत को प्राप्य लाभांशों से घटाया जायेगा, यदि वे स्पष्ट रूप से लागत के हिस्से की वसूली का प्रतिनिधित्व करते हों।

4. जब प्रस्तावित अधिकार अंशों की अभियाचना की जाए, तब अधिकार अंशों की लागत को मूल धारण की परिचालन राशि में जोड़ दिया जाता है।

यदि अधिकार के लिए अभियाचना ना की जाए, बल्कि इन्हें बाजार में बेच दिया जाए, तो विक्रय प्राप्ति को लाभ एवं हानि विवरण में लिया जाता है।

जहाँ निवेशों को 'अधिकार सहित' आधार पर अधिग्रहण किया जाता है तथा उनके 'अधिकार रहित' होते ही निवेशों का बाजार मूल्य उस लागत मूल्य से कम हो जाए जिस पर उनको अधिग्रहित किया गया था, तो वह उपयुक्त रहेगा कि अधिकारों के विक्रय से प्राप्ति को ऐसे निवेशों की परिचालन राशि में से, बाजार मूल्य तक घटाया जाये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण के लिए, मि. एक्स ₹ 50,000 के लिए एक कंपनी से 200 अंश अधिकार सहित आधार पर अधिग्रहण करते हैं बाद में उन्हें 1:1 अनुपात में कंपनी के नए अंशों को ₹ 110 प्रति अंश पर पाने का अधिकार प्रस्तावित किया जाता है। एक्स अधिकार निर्गमन के लिए अभियाचना करता है इस प्रकार एक्स द्वारा धारित 400 अंशों पर कुल लागत ₹ 72,000 होगी।

मान लीजिए, वह अभियाचना नहीं करता है, बल्कि अधिकारों को ₹ 15,000 में बेच देता है। अधिकार त्यागने के तुरंत बाद, एक्स द्वारा क्रय किए गए 200 अंशों का अधिकार रहित बाजार मूल्य ₹ 40,000 तक गिर जाता है। इस स्थिति में ₹ 15,000 की बिक्री प्राप्ति में से ₹ 10,000 का प्रयोग, परिचालन राशि को बाजार मूल्य ₹ 40,000 तक घटाने के लिए किया जा सकता है तथा ₹ 5,000 को लाभ एवं हानि खाते में समाकलित (credit) किया जायेगा।

5. जहाँ किसी निवेश को बोनस अंशों के निर्गमन के द्वारा अधिगृहीत किया जाता है, तो निवेश खाते के पूँजी स्तम्भ में राशि की प्रविष्टि नहीं होती है, क्योंकि निवेशक को कुछ भी भुगतान नहीं करना पड़ता है।

4. निवेशों का निपटारा

(DISPOSAL OF INVESTMENTS)

- किसी निवेश के निपटारे पर, परिचालन राशि (Carrying amount) और शुद्ध निपटान प्राप्ति (व्ययों के बाद) (disposal proceeds, net of expenses) के मध्य के अंतर की मान्यता लाभ एवं हानि विवरण में ली जाती है।
- जब किसी विशेष (Individual) निवेश की धारिता के एक भाग को निपटाते हैं, तो उस हिस्से के लिए परिचालन राशि हेतु, कुल धारित निवेशों के औसत परिचालन राशि के आधार पर बँटवारा अपेक्षित है।
- व्यापारिक रहतियों के रूप में धारित अंशों, ऋणपत्रों तथा अन्य प्रतिभूतियों के सम्बन्ध में, निपटारीत रहतियों की लागत एक उपयुक्त लागत सूत्र को लागू करके निर्धारित की जा सकती है। (उदा. प्रथम आवक एवं प्रथम जावक, औसत लागत आदि)। ये लागत सूत्र ए एस 2 'रहतियों का मूल्यांकन' में निर्दिष्ट के समान ही हैं।

(i) **निश्चित** (Fixed) **आय वहन करने वाली प्रतिभूतियाँ**—'अंतिम भुगतान की तिथि' से 'विक्रय की तिथि' तक के उपार्जित ब्याज की राशि को आय स्तम्भ में समाकेलित (credited) किया जाता है तथा केवल शुद्ध विक्रय प्राप्तियों (उपार्जित ब्याज के बाद) ही निवेश खाते के पूँजी स्तंभ में समाकेलित (credited) की जाती हैं। ब्याज रहित आधार पर लेनदेन की स्थिति में, पूर्ण विक्रय प्राप्तियों को पूंजी स्तंभ में समाकेलित (credited) करते हैं तथा 'अंतिम भुगतान की तिथि' से विक्रय की तिथि' तक उपार्जित ब्याज की राशि, (क्रेता से पृथक् रूप से प्राप्त) को निवेश खाते के आय स्तम्भ के समाकलन (credit) पक्ष में लिया जायेगा।

(ii) **परिवर्तनशील** (Variable) **आय वहन करने वाली प्रतिभूतियाँ**—इन प्रतिभूतियों की दशा में, विक्रय प्राप्तियों की पूर्ण राशि को निवेश खाते के पूँजी स्तम्भ में समाकेलित (credited) करना चाहिए, जब तक उपार्जित लाभांश की राशि को विशेष रूप से स्थापित किया जा सके।

विनियोगों के विक्रय के समय पर, पुस्तकों में प्रविष्टियाँ, उनके अधिग्रहण के लिए पारित प्रविष्टियाँ के बिल्कुल विपरीत की जायेंगी।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) 1

1.4.2008 को सुन्दर के पास एक्स लिमिटेड के ₹ 15 प्रति अंश पुस्तक मूल्य (अंकित मूल्य ₹ 10) वाले 25,000 समता अंश थे। 20.6.2008 को उसने ₹ 16 प्रति अंश की दर से कम्पनी के अन्य 5,000 अंशों का क्रय किया। एक्स लिमिटेड के निदेशकों ने बोनस तथा अधिकार निर्गमन की घोषणा की। इस निर्गमन पर लाभांश भुगतानयोग्य नहीं है। इस निर्गमन की शर्तें निम्न प्रकार हैं—

बोनस आधार 1:6	(तिथि 16.8.2008),
अधिकार आधार 3:7	(तिथि 31.8.2008) मूल्य ₹ 15 प्रति अंश
भुगतान की देय तिथि	30.9.2008

अंशधारक अपने अधिकारों को पूर्णतः या आंशिक रूप से हस्तांतरित कर सकते हैं। तदनुसार, सुन्दर ने ₹ 2 प्रति अंश के प्रतिफल हेतु अपनी पात्रता का $33\ ^1/_3\%$ शेखर को बेच दिया।

लाभांशः एक्स लिमिटेड ने 31.3.2008 पर समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 20% की दर से लाभांश की घोषणा की, और जिसे सुन्दर ने 31.10.2008 पर प्राप्त किया। उसके द्वारा 20.6.2008 पर अधिगृहीत अंशों हेतु लाभांश को क्रय की लागत के विरुद्ध समायोजित किया जाना है।

15.11.2008 पर, सुन्दर ने 25,000 समता अंशों को ₹ 5 प्रब्याजी (premium) पर बेच दिया।

आपको सुन्दर की पुस्तकों में तैयार करने की आवश्यकता है—

निवेश खाता (Investment Account)

लाभ एवं हानि खाता (Profit & Loss Account)

अपनी सुविधा के लिए यह मान लें कि, पुस्तकें 31.12.2008 पर बंद हो जाती हैं तथा अंशों को औसत लागत पर मूल्यांकित किया जाता है।

समाधान (Solution)

In the books of Sundar

Investment Account

(Scrip : Equity Shares in X Ltd.)

Date	Particulars	No. of Shares	Income ₹	Cost ₹	Date	Particulars	No. of Shares	Income ₹	Cost ₹
2008				2008					
Apr.1	To Balance b/d	25,000	—	3,75,000	Sep.30	By Bank A/c (Sale of Rights)	—	—	10,000
Jun.20	To Bank A/c	5,000	—	80,000					
Aug.16	To Bonus	5,000	—	—	Oct.31	By Bank A/c (Dividend on acquisition on 20.6.2008)	—	—	10,000
Sep.30	To Bank A/c (Right sshares)	10,000	—	1,50,000					
Nov.15	To Profit & Loss A/c (Profit on Sale of Shares)	—	—	50,000	Oct.31	By Bank A/c (Dividend on Original Holding)	—	50,000	—
Dec.31	To Profit & Loss A/c (Balancing Figure)	—	50,000	—	Nov.15	By Bank A/c (Sale of shares)	25,000	—	3,75,000
					Dec.31	By Balance c/d	20,000	—	2,60,000
		45,000	**50,000**	**6,55,000**			**45,000**	**50,000**	**6,55,000**

© The Institute of Chartered Accountants of India

Profit & Loss A/c

(For the year ended 31.12.2008*)*

Particulars	*Amount* ₹	*Particulars*	*Amount* ₹
		By Investment A/c	50,000
To Balance c/d	1,00,000	By Dividend A/c	50,000
	1,00,000		1,00,000

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)—

(1) बोनस अंश $= \frac{(25,000+5,000)}{6} = 5,000$ अंश

(2) अधिकार अंश $= \frac{(25,000+5,000+5,000)}{7} \times 3 = 15,000$ अंश

(3) अधिकार अंशों का त्याग (renounced) = 15,000 ×33 1/3 % = 5,000 अंश

(4) मूल धारण पर प्राप्त लाभांश = 25,000 × 10 × 20% = ₹ 50,000

20.6.2008 पर क्रय किए गए अंशों पर लाभांश = 5,000 × 10 × 20% = ₹ 10,000

निवेश खाते में समायोजित

(5) 31.12.2008 पर अंशों की लागत

$$= \frac{(3,75,000+80,000+1,50,000-10,000-10,000)}{45,000} \times 20,000 = ₹\ 2,60,000$$

(6) 15.11.2008 पर बिके अंशों पर लाभ

$$= 3,75,000 - \left[\frac{(3,75,000+80,000+1,50,000-10,000-10,000)}{45,000} \times 25,000\right]$$

= ₹ 50,000

प्रश्न में अंशों के अधिकार सहित एवं अधिकार रहित बाजार मूल्य न दिए होने के कारण, यह माना गया है कि, अंशों का अधिकार रहित बाजार मूल्य उनके अधिगृहीत लागत मूल्य से कम हो गया है। अतः अधिकारों के त्यागने (renounce) पर प्राप्त राशि से अंशों की परिचालन राशि को घटाया गया है।

उदाहरण (Illustration) 2

01.04.2007 पर, श्री कृष्णमूर्ति ने टेल्को लिमिटेड में ₹ 100 प्रति वाले 1,000 समता अंश ₹ 120 प्रति की दर से, एक दलाल से क्रय किए, जिसने 2% दलाली प्रभारित की। उसने अंश की लागत के प्रति ₹ 100 पर 50 पैसे हस्तान्तरण स्टाम्प के रूप में चुकाए। 31.1.2008 पर, 1:2 के अनुपात में बोनस घोषित किया गया। बोनस अंशों की अभिलेखन तिथि से पूर्व एवं बाद में अंशों को क्रमशः ₹ 175 प्रति अंश एवं ₹ 90 प्रति अंश उद्धृत किया गया। 31.3.2008 पर, श्री कृष्णमूर्ति ने बोनस अंशों को एक दलाल को बेच दिया, जिसने 2% दलाली प्रभारित की।

श्री कृष्णमूर्ति की पुस्तकों में निवेश खाता दर्शाइए, वे अंशों को चालू सम्पत्ति के रूप में धारित करते हैं तथा निवेशों का समापन मूल्यांकन, लागत या बाजार मूल्य, दोनों में से जो कम हो, पर किया जाएगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

In the books of Mr. Krishna Murty

Investment Account

(Scrip : Equity Shares in TELCO Ltd.)

Date	Particulars	No. of Shares	Cost ₹	Date	Particulars	No. of Shares	Cost ₹
2007				**2008**			
Apr.1	To Bank A/c	1,000	1,23,000	Mar.31	By Bank A/c	500	44,100
2008					*(Sale of Bonus Shares)*		
Jan.1	To Bonus	500	—	Mar. 31	By Balance c/d	1,000	82,000
Mar.31	To Profit & Loss A/c	—	3,100				
	(Profit on Sale of Shares)						
		1,500	**1,26,100**			**1,500**	**1,26,100**

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)—

(i) 1.4.2007 पर क्रय किये समता अंशों की लागत
= 1,000 × ₹ 120 + (₹ 1,20,000 का 2% + ₹ 1,20,000 का 0.5%) = ₹ 1,23,000

(ii) 31 मार्च 2008 को बेचे गये समता अंशों की बिक्री प्राप्ति
= 500 × ₹ 90 – (₹ 45,000 का 2%) = ₹ 44,100

(iii) 31 मार्च 2008 पर बेचे गये बोनस अंशों पर लाभ
= बिक्री प्राप्ति – औसत लागत
बिक्री प्राप्ति = ₹ 44,100
औसत लागत = ₹ (1,23,000 × 500) / 1500 = ₹ 44,100
लाभ = ₹ 44,100 – ₹ 41,000 = ₹ 3,100

(iv) 31 मार्च 2008 पर समता अंशों का मूल्यांकन
लागत = (₹ 1,23,000 × 1,000)/1,500 = ₹ 82,000
बाजार मूल्य = 1,000 अंशों × ₹ 90 = ₹ 90,000
लागत के बाजार मूल्य से कम होने पर अंतिम शेष ₹ 82,000 पर मूल्यांकित किया जायेगा।

उदाहरण (Illustration) 3

मि. एक्स ने ओमेगा कंपनी लिमिटेड में ₹ 100 प्रति वाले 500 समता अंश ₹ 62,500 (जिसमें दलाली एवं स्टाम्प शुल्क शामिल हैं) पर क्रय किये। कुछ वर्षों बाद कंपनी ने अपने लाभों के पूंजीकरण का निपटारा समता अंश धारकों को, उनके प्रति धारित अंश हेतु एक समता बोनस अंश के निर्गमन द्वारा किया। पूंजीकरण से पूर्व, ओमेगा कम्पनी लिमिटेड के अंशों को ₹ 175 प्रति अंश उद्धृत किया गया। पूंजीकरण के पश्चात्, अंशों को ₹ 92.50 प्रति अंश उद्धृत किया गया। मिस्टर एक्स ने बोनस अंशों को बेच दिया और ₹ 90 प्रति अंश प्राप्त किए।

एक्स की पुस्तकों में औसत लागत आधार पर निवेश खाता तैयार कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

In the books of Mr. X

Investment Account

(Scrip : Equity Shares in Omega Co. Ltd.)

Date	Particulars	No. of Shares	Cost ₹	Date	Particulars	No. of Shares	Cost ₹
	To Bank A/c	500	62,500		By Bank A/c	500	45,000
	To Bonus	500	—		(Sale of Bonus Shares)		
	To Profit & Loss A/c (Profit on Sale of Shares)	—	13,750		By Balance c/d	500	31,250
		1,000	**76,250**			**1,000**	**76,250**

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)—

बोनस सहित 1,000 अंशों की कुल लागत ₹ 62,500 है।

इसलिए, 500 अंशों (आगे ले जाने वाले) की लागत (500 × 62,500)/1,000 = ₹ 31,250 है।

लागत के बाजार मूल्य से कम होने पर अंशों की लागत पर आगे ले जाया जायेगा।

उदाहरण (Illustration) 4

1 जनवरी 2008 पर, सिंह के पास एक्स लिमिटेड के 20,000 समता अंश थे। अंशों का अंकित मूल्य ₹ 10 प्रति था लेकिन उनका पुस्तक मूल्य ₹ 16 प्रति अंश था। 1 जून 2008 पर, सिंह ने कंपनी में 5,000 और समता अंश ₹ 4 प्रति अंश प्रब्याजी पर क्रय किए।

30 जून 2008 पर, एक्स लिमिटेड के निदेशकों ने बोनस तथा अधिकार निर्गमन की घोषणा की। प्रति पांच धारित अंशों हेतु एक समता अंश की दर से बोनस घोषित किया गया तथा ये अंश 2 अगस्त 2008 पर प्राप्त हुए।

अधिकार निर्गमन की शर्तें थीं—

(a) 10 अगस्त 2008 पर मौजूदा धारकों को अधिकार अंशों का निर्गमन किया जाएगा।

(b) कम्पनी में प्रति तीन धारित अंशों पर ₹ 15 प्रति अंश पर एक अंश की दर से पात्र (हकदार) धारकों को अतिरिक्त समता अंशों की अभियाचना से अधिकार निर्गमन होगा, पूर्ण राशि 30 सितम्बर 2008 पर देय होगी।

(c) मौजूदा अंशधारक, अपनी पात्रता की सीमा तक, पूर्णतः या अंशतः उनके अधिकारों को गैर (किसी अन्य) को हस्तांतरित कर सकता है।

(d) सिंह अपनी पात्रता के 50% हेतु निर्गमन (क्रय) के अन्तर्गत अपने विकल्प का प्रयोग करता है तथा शेष अधिकारों को ₹ 1.50 प्रति अंश के प्रतिफल हेतु अनंत को बेच देता है।

(e) 31 मार्च 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए, कम्पनी द्वारा 15% की दर से लाभांश किया गया तथा 20 अक्टूबर 2008 पर को सिंह द्वारा प्राप्त किया गया।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(f) 1 नवम्बर, 2008 पर, सिंह ने 20,000 समता अंशों को ₹ 3 प्रति अंश प्रब्याजी पर बेचा।

31.12.2008 पर, अंशों का बाजार मूल्य ₹ 13 था। 31.12.2008 पर सिंह की पुस्तकों में प्रस्तुत होने वाले निवेश खाते को दर्शाइए तथा उस तिथि पर धारित अंश के मूल्य को निर्धारित करें।

समाधान (Solution)

Date		*No. of*	*Income* ₹	*Amount* ₹	*Date*		*No. of* ₹	*Income* ₹	*Amount*
2008					2008				
Jan. 1	To Balance b/d	20,000	-	3,20,000	Sep. 30	By Bank (Sale of rights) 5,000 @ ₹ 1.5			7,500
June 1	To Bank	5,000	-	70,000	Oct. 20	By Bank (dividend)		30,000	7,500
Aug. 2	To Bonus Issue	5,000		—	Nov. 1	By Bank	20,000		2,60,000
Sep. 30	To Bank (Right)	5,000	-	75,000	Dec. 31	By Balance c/d	15,000		1,92,857
Nov. 1	To Profit & Loss A/c (Profit on sale)	-	-	2,857					
Nov. 1	To Profit & Loss A/c (Dividend income)		30,000						
		35,000	30,000	4,67,857			35,000	30,000	4,67,857
Jan. 1	To Balance b/d	15,000		1,92,857					

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)—

1. धारित अंशों की लागत – 35,000 अंशों हेतु चुकता राशि ₹

(₹ 3,20,000 + ₹ 70,000 + ₹ 75,000)	4,65,000
घटायें—1 जून पर क्रय किए अंशों पर लाभांश तथा अधिकारों की बिक्री (7,500 + 7,500)	15,000
35,000 अंशों की लागत	**4,50,000**
20,000 अंशों की लागत (औसत लागत आधार पर)	2,57,143
बिक्री प्राप्ति	2,60,000
लाभ	**2,857**

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. निवेशों को चालू निवेशों के रूप में माना गया है, अंतिम शेष का 'लागत' या 'शुद्ध वसूली योग्य मूल्य' में से कम के आधार पर मूल्यांकन होगा।
यहाँ शुद्ध वसूली योग्य मूल्य ₹ 13 प्रति अंश है यानि कि,
15,000 अंश × ₹ 13 = ₹ 1,95,000 =
तथा लागत = 4,50,000 × 15,000 / 35,000 = ₹ 1,92,857।
इसलिए वर्ष के अंत में निवेशों का मूल्य ₹ 1,92,857 होगा।

5. निवेश के पुनः वर्गीकरण की दशा में मूल्यांकन

(VALUATION IN CASE OF RECLASSIFICATION OF INVESTMENT)

जब निवेश का वर्गीकरण चालू निवेशों से स्थायी निवेशों में किया जाता है, स्थायी निवेशों का मूल्यांकन, लागत मूल्य या उचित मूल्य, जो कम हो, पर किया जाता है।

जब निवेशों का वर्गीकरण स्थायी निवेशों से चालू निवेशों में किया जाता है, चालू निवेशों का मूल्यांकन, लागत मूल्य या परिचालन मूल्य, जो कम हो, पर किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- निवेश लेखांकन AS-13 के अनुसार होता है।
- निवेशों के दो प्रकार हैं—
  - दीर्घकालीन निवेश
  - चालू निवेश
- चालू निवेश का मूल्यांकन—लागत या उचित मूल्य शुद्ध वसूली मूल्य जो कम हो
- दीर्घकालीन निवेश का मूल्यांकन—लागत पर
- पुनः वर्गीकरण—
  - चालू से स्थायी पर – लागत या उचित मूल्य, जो भी कम हो पर मूल्यांकन
  - स्थायी से चालू पर – लागत या परिचालन राशि, जो भी कम हो पर मूल्यांकन
- निवेशों का निपटारा—
  - परिचालन राशि और निपटान प्राप्ति के बीच के अन्तर को लाभ एवं हानि खाते में हस्तान्तरण करते हैं।
  - आंशिक विक्रय की दशा में, भारित औसत विधि का प्रयोग किया जाता है।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिए हुए विकल्पों में से अति उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए।

1. अधिकार अंश की लागत को
   (अ) निवेशों की लागत में जोड़ा जाता है।
   (ब) निवेशों की लागत से घटाया जाता है।
   (स) कोई उपचार आवश्यक नहीं।
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
2. दीर्घकालीन निवेशों को _____ पर रखा जाता है।
   (अ) उचित मूल्य।
   (ब) लागत मूल्य।
   (स) लागत या बाजार मूल्य जो भी कम हो।
   (द) बाजार मूल्य।
3. अल्पकालीन निवेशों को _____ पर रखा जाता है।
   (अ) उचित मूल्य।
   (ब) लागत मूल्य।
   (स) लागत या बाजार मूल्य जो भी कम हो।
   (द) बाजार मूल्य।

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. ए लिमिटेड ने ओमेघा लिमिटेड के 2,000 समता अंश 'अधिकार-सहित' आधार पर ₹ 75 प्रति अंश से अधिगृहीत किए। इसके बाद ओमेगा लिमिटेड ने 1:1 का ₹ 60 प्रति अंश पर अधिकार निर्गमन किया, जो ए द्वारा अभियाचित किया गया। वर्ष की समाप्ति पर निवेशों की कुल लागत ₹_____ होगी।
   (अ) 2,70,000
   (ब) 1,50,000
   (स) 1,20,000
   (द) 30,000
5. निवेश की लागत में शामिल है।
   (अ) क्रय लागत।
   (ब) दत्त दलाली।
   (स) दत्त स्टाम्प शुल्क।
   (उ) उपर्युक्त सभी।

[**उत्तर**—1.(अ); 2. (ब); 3.(स); 4.(अ); 5.(द)।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

6. आप किसी निश्चित तिथि पर निवेशों के मूल्यांकन के उद्देश्य हेतु निवेशों को कैसे वर्गीकृत करेंगे?
7. 'निश्चित (Fixed) आय वहन करने वाली प्रतिभूतियों' से आप क्या समझते हैं ?
8. चालू निवेशों के मूल्यांकन हेतु प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answser Type Questions)

9. निवेशों के निपटारे पर लाभ या हानि की गणना की विधि को समझाइए।
10. निवेशों की अधिग्रहण लागत एवं परिचालन राशि की गणना की प्रक्रिया को उदाहरण की सहायता वर्णित करें।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

11. 1 अप्रैल का, मदन ने मोहन लिमिटेड में 12% ऋणपत्रों को ₹ 7,50,000 में क्रय किया। इन ऋणपत्रों का उचित मूल्य ₹ 6,00,000 था। 30 जून एवं 31 दिसम्बर को ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान देय होता है। ऋणपत्रों की अधिग्रहण लागत की गणना करें।
12. दुआ लिमिटेड ने ₹ 100 प्रति वाले 10,000 समता अंशों के निर्गमन द्वारा कुंद्रा लिमिटेड में 2,000 ऋणपत्रों को अधिगृहीत किया, जिनका बाजार मूल्य ₹ 150 प्रति अंश है। कुंद्रा लिमिटेड के ऋणपत्र ₹ 800 पर सूचीबद्ध हैं लेकिन अंकित मूल्य सिर्फ ₹ 500 है। निवेशों की लागत क्या होनी चाहिए? अधिग्रहण पूर्व के ब्याज पर ध्यान न दें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

© The Institute of Chartered Accountants of India

13

रहतिये की हानि एवं लाभ की हानि हेतु बीमा दावे

[INSURANCE CLAIMS FOR LOSS OF STOCK AND LOSS OF PROFIT]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे :

- ❑ **रहतियो की हानि हेतु दावा करने में**
- ❑ **लाभ की हानि हेतु दावा करने में**

1. परिचय

(INTRODUCTION)

व्यवसायिक उपक्रमों द्वारा निश्चित घटनाओं के होने पर रहतिये की हानि के विरुद्ध बीमा पाया जाता है; जैसे आग, बाढ़, चोरी, भूकंप आदि के रूप में बीमा, क्षतिपूर्ति का एक अनुबन्ध बन जाता है। हानि हेतु दावा सम्पत्ति की वास्तविक हानि तक प्रतिबन्ध होता है। कभी-कभी उद्यम व्ययों में वृद्धि, आवर्त में कमी होने के परिणाम स्वरूप लाभ की हानि के विरुद्ध बीमा कराया जाता है। यदि रहतियों की हानि के परिणामस्वरूप हानि को भी बीमाकृत कराते हैं तो इस नीति को लाभ की हानि या परिणामी हानि नीति कहा जाता है।

बीमा दावें का अध्ययन दो भागों के अन्तर्गत हो सकता है जो निम्न है :

- रहतियों की हानि हेतु दावा
- लाभ की हानि हेतु दावा

2. अग्नि का अर्थ

(MEANING OF FIRE)

बीमा के उद्देश्य के लिए आग के अर्थ हैं—

(1) आग (चाहे विस्फोट से लगे या अन्यथा) बिना किसी अवसर या माध्यम के नहीं होती।

(a) यह अपने स्वाभिक ज्वलनशीलता या ताप या गर्मी के कारण शामिल किसी प्रक्रिया के अंतर्गत उत्पन्न होती है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(b) भूकम्प, आगजनी, दंगे, नागरिक विद्रोह, युद्ध, विदेशी दुश्मन के हमले, आक्रमण कार्यवाहियों (चाहे युद्ध घोषित हो अथवा न हो) नागरिक दंगे, क्रान्ति, शोर-शराबे, सैन्य अथवा हड़पी गई या हथियाई गई ताकत।

(2) बिजली गिरना (Lightining)

(3) विस्फोट, उपरोक्त 1 (a) में दी गई किसी विशिष्ट घटना द्वारा घटित हो सकती है।

(a) केवल घरेलू उद्देश्यों हेतु प्रयोग वॉयलर से

(b) भवनों पर कोई अन्य बायलरों या मितयोजको (economies) से।

(c) किसी भवन में जो किसी गैस कारखाने का भाग नहीं है अथवा घरेलू उद्देश्यों हेतु गैस या भवन में प्रकाश अथवा ऊष्मा प्रयुक्त।

बीमा की नीति (Policy) को संविदा द्वारा तथा किसी अतिरिक्त अधिमूल्य के भुगतान पर यदि कोई हो, किसी सम्भावित संकट से बचाने (cover) हेतु लिया जा सकता है।

सामान्यतः रहतिया अथवा अन्य सम्पत्तियों को शामिल करने वाली अग्नि पॉलसियों में घरेलू उद्देश्य हेतु प्रयोग किये गये बायलरों के विस्फोट अथवा भवनों में अन्य बायलरों अथवा मितयोजकों को शामिल नहीं करते परन्तु लाभ के सम्बन्ध में पॉलिसियाँ इस तरह के बिस्फोटों को शामिल कर लेती हैं।

3. रहतिये की हानि हेतु दावा

(CLAIM FOR LOSS OF STOCK)

अग्नि बीमा एक क्षतिपूर्ति का अनुबन्ध होने की वजह से हानि की वास्तविक राशि हेतु केवल दावा कर सकते हैं, जो बीमा मूल्य की राशि से अधिक न हो। दावा के निर्धारण करने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है :

(a) **कुल हानि**—यदि माल पूरी तरह नष्ट हो गया है, तब दावे की राशि वास्तविक राशि के बराबर होगी। जब माल पूरी तरह बीमित है फिर भी, बीमा के अन्तर्गत की दशा में (यानि बीमांकित स्कंध का बीमयोग्य मूल्य बीमांकित स्कंध से अधिक है), दावे की राशि नीति की राशि तक प्रतिबन्धित है।

(b) **विभाजित हानि**—यदि माल आंशिक रूप में नष्ट हुआ है तो दावे की राशि माल की उपलब्ध वास्तविक हानि के बराबर है। जहाँ माल पूर्ण रूप से बीमाकृत है तब भी बीमाकृत की दशा में दावे की राशि बीमा नीति की प्रकृति पर निम्नलिखित रूप से निर्भर करती है—

(i) **औसत वाक्य के बिना**—दावा बीमाकृत योग या वास्तविक लाभ जो कम हो के बराबर है।

(ii) **औसत वाक्य के साथ**—स्कंध की हानि हेतु दावे की राशि समानुपातिक घटाई जाती है। नीति राशि के अनुपात से सम्बन्धित यानी बीमाकृत राशि अग्नि की तिथि से स्कंध के मूल्य तक (बीमायोग्य राशि) निम्न रूप से दर्शायी जाती है :

$$\text{दावे की राशि} = \frac{\text{रहतिये की हानि} \times \text{बीमाकृत योग}}{\text{बीमायोग्य राशि (कुल लागत)}}$$

यह स्मरणीय होना चाहिय की औसत वाक्य केवल वहीं चयन करते हैं जहाँ बीमा की राशि कुल लागत मूल्य से कम है तथा इसके विपरित नहीं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

निम्नांकित उल्लेखनीय बिन्दु महत्वपूर्ण हैं—

(i) जहाँ रहतिये अभिलेखे रखें जाते हैं तथा अभिलेखे आग द्वारा नष्ट नहीं होते हैं तो आग लगने की तिथि को रहतिये का मूल्य आसनी से मालूम कर सकते हैं।

(ii) जहाँ या तो रहतिये के अभिलेखे उपलब्ध न हों या जहाँ वे आग द्वारा नष्ट हो गये हों, तब रहतिये की कीमत का अनुमान आग लगने की तिथि से लगाया जाता है। यह मूल्य पर मालूम करने की सामान्य विधि है, गत लेखांकन वर्ष की तिथि से एक व्यापार खाता बनाना। सामान्य सकल लाभ की अनुमति देने के पश्चात आग की तिथि के अन्तिम रहतिये की राशि शेष मद के रूप में मालूम की जा सकती है।

(iii) जहाँ खाते की पुस्तकें नष्ट हो जाती हैं, तो व्यापार खाता बनाने का कार्य कठिन हो जाता है। उस दशा में ग्राहकों तथा पूर्तिकर्ताओं से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त करते हैं जिससे क्रय तथा विक्रय की राशि को निश्चित कर सकें।

(iv) बीमा कम्पनी को कुल हानि हेतु भुगतान के पश्चात्, उसे समान अधिकार प्राप्त हो जाते हैं जो बीमांकित के क्षतिग्रस्त रहतिये के सम्बन्ध में होते हैं यहाँ बीमा कम्पनी को स्थानान्तरित किया जाता है। व्यवहारिक तौर में, दावे की राशि निर्धारण करने में नष्ट हुए तथा मलवे के रूप में बचे हुये रहतिये को मुख्यता दी जाती है।

(v) निरन्तर बचाये गये रहतिये को पुनः अनुशीलन के पश्चात् बिक्री योग्य बनाया जा सकता है। उस दशा में ऐसे रहतिये की लागत को व्यापार खाते में क्रेडिट तथा बचाये गये रहतिये खाते को डेबिट करना चाहिए। पुनः अनुशीलन (Reconditioning) पर व्ययों को डेबिट तथा इस खाते की बिक्री को क्रेडिट करना चाहिए। अन्तिम शेष को लाभ एवं हानि खाते में हस्तान्तरित किया जाना चाहिए।

Loss of Stock :

Amount of loss of stock is calculated as under :

Value of stock on the date of fire	××××
Less : Value of Salvaged stock	××××
Amount of loss of stock	××××

उदाहरण (Illustration) **1**

12 जून 2008 पर, एक कागज व्यापारी, आर. पटेल के भवन में आग लग गई। अधिकतर रहतिया नष्ट हो गया; बचाये हुए रहतिये की लागात ₹ 11,200 लगायी गयी। अतिरिक्त में, नष्ट होने की दशा में कुछ रहतिया बच गया तथा उस दशा में इसका मूल्य ₹ 10,500 पर सहतम हुआ। खाते की पुस्तकों से, निम्नलिखित विवरण उपलब्ध हुआ।

(1) 31 दिसम्बर, 2007 पर खाते को बन्द करने पर उसका रहतिया ₹ 83,500 पर मूल्यांकित हुआ।

(2) 1-1-2008 से 12-6-2008 तक उसका क्रय ₹ 1,12,000 की राशि तथा उसी अवधि के दौरान उसका विक्रय ₹ 1,54,000 की राशि का हुआ। गत तीन वर्षों हेतु उसके खाते के आधार पर यह पाया गया कि वह औसतन विक्रय का 30% सकल लाभ कमाता है।

पटेल का, 60,000 हेतु उसका रहतियाँ बीमित हुआ है। दावे की राशि की गणना कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Computation of claim for loss of stock

	₹	₹
Opening Stock on 1-1-2008		83,500
Add : Purchases during the period		1,12,000
		1,95,500
Less : Sales during the period	1,54,000	
Gross Profit thereon	46,200	1,07,800
		87,700
Less : Stock Salvaged	11,200	
Agreed value of damage Stock	10,500	21,700
		66,000

Amount of Claim $= \frac{60,000}{87,700} \times 66,000 = ₹45,154$

उदाहरण (Illustration) **2**

1 अप्रैल 2008 पर श्री रमेश का रहतिया आग द्वारा नष्ट हो गया लेकिन अभिलेख सुरक्षित थे जिससे निम्नलिखित विवरण निश्चित था—

	₹
1 जनवरी 2007 को रहतिये की लागत	73,500
31 दिसम्बर 2007 को रहतिये की लागत	79,600
31 दिसम्बर 2009 वर्ष के अन्त तक क्रय	3,98,000
31 दिसम्बर 2007 वर्ष के अन्त तक विक्रय	4,87,000
1-1-2008 से 31-3-2008 क्रय	1,62,000
1-1-2008 से 31-3-08 तक विक्रय	2,31,200

31 दिसम्बर 2008 आर्थिक चिट्ठे हेतु स्कंध पत्र मूल्य ₹ 2,300 से निशचित स्कन्ध पर अपलिखित किया गया जो कि खराब बिक्री की सीमा की लागत ₹ 6,900 थी इन मालो का एक भाग मार्च 2008 ₹ 3,450 की मूल्य लागत पर ₹ 250 की राशि से बेच दिया गया था। इस स्कंध का बचा हुआ भाग उसकी मूल्य लागत पर अनुमानित किया गया। उपरोक्त अपवाद के सम्बन्ध में सकल लाभ वर्ष भर समान दर रखता है।

अवशिष्ट रहतिये का मूल्य ₹ 5,800 था ₹ 50,000 के बीमापत्र औसत वाक्य के सम्बन्ध में या आग द्वारा हानि के दावे की राशि को निकालिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Shri Ramesh
Trading Account for 2007
(To determine the rate of gross profit)

Dr.							Cr.
		₹				₹	₹
To	Opening Stock	73,500	By	Sales A/c			4,87,000
To	Purchases	3,98,000	By	Closing Stock :			
To	Gross Profit	97,400		As valued		79,600	
				Add : Amount written off			
				to restore stock to full cost		2,300	81,900
		5,68,900					5,68,900

The (normal) rate of gross profit to sales is

Memorandum Trading Account upto March 31, 2008

Dr.							Cr.
	Normal items	*Abnormal items*	*Total*		*Normal items*	*Abnormal items*	*Total*
	₹	₹	₹		₹	₹	₹
To Opening Stock	75,000	6,900*	81,900	By Sales	2,28,000	3,200	2,31,200
To Purchases	1,62,000	—	1,62,000	By Loss	—	250	250
To Gross Profit (20% on ₹ 2,28,000)	45,600	—	45,600	By Closing Stock (Bal. fig.)	54,600	3,450	58,050
	2,82,600	6,900	2,89,500		2,82,600	6,900	2,89,500

* at cost, book value is ₹ 4,600

Calculation of Insurance Claim

	₹
Value of Stock on March 31, 2008	58,050
Less : Salvage	5,800
Loss of stock	52,250

Claim subject to average clause.

$$= \frac{\text{Amount of Policy}}{\text{Value of Stock}} \times \text{Actual Loss of Stock}$$

$$= ₹\ \frac{50,000}{58,050} \times 52,250 = ₹\ 45,004$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. लाभ की हानि हेतु दावा

(CLAIM FOR LOSS OF PROFIT)

जब आग की घटना घटित होती है तब नष्ट रहतिया या अन्य सम्पत्ति के खाते पर प्रत्यक्ष हानि से प्रथक भी एक हानि होती है, यह परिणामजन्य हानि है क्योंकि कुछ समय हेतु, व्यवसाय अव्यवस्थित या बन्द होता है तथा उस अवधि के दौरान व्यवसाय के स्थायी व्यय; जैसे किराया, वेतन आदि देना जारी रहते हैं। इसके अलावा यहाँ लाभ की हानि भी है जो व्यवसाय की अवधि के दौरान कमायी जाती है; यह हानि बीमाकृत के विरुद्ध "लाभ की हानि" या परिणामजन्य हानि को बीमापत्र (Policy) द्वारा सुरक्षित किया जा सकता है। यहाँ परिणामजन्य हानि के सम्बन्ध में पृथक बीमापत्र (Policy) होना चाहिए लेकिन दावा बीमापत्र (Policy) के सम्बन्ध में दाखिल किया जायेगा जब तक अन्य बीमापत्र के अन्तर्गत आग के खाते पर दावा दाखिल नही कर दिये जाते।

लाभ की हानि वाले बीमापत्र में साधारणत : निम्नांकित मदो का समावेश होता है :

(1) शुद्ध लाभ की हानि

(2) स्थायी प्रभार

(3) कोई कार्य की बढ़ी हुई लागत यानी अस्थायी भवनों के किराये आदि।

प्रत्येक व्यवसाय में, यहाँ कुछ मानदण्ड होते हैं, जिसके द्वारा उसकी गतिविधि या प्रगति में उचित फैसला लिया जा सकता है; यह प्रभावित बिक्री या उत्पादित माल (या सेवा) की मात्रा हो सकती है। आग लगने के कारण एक फर्म द्वारा हानि को नापने हेतु, यह जरूरी है कि कार्य की मात्रा को प्रस्तुत करने हेतु इस तरह की इकाइयों में व्यक्त कुछ मानदण्ड की स्थापना हो। यहाँ मानदण्ड की राशि तथा अर्जित लाभ की राशि के बीच एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध होना चाहिये।

आग लगने के पहले तथा बाद में मानदण्ड की राशि के बीच लाभ की हानि की तुलनात्मक राशि निरन्तर एक विश्वासनीय संकेत देगी। समृद्धि (और इसलिए लाभ) को नापने की सर्वाधिक सन्तोषजनक इकाई समान्यतः आर्वत (Turnover) ही होती है। लाभ की हानि हेतु दावा स्थापित किया जा सकता है यदि—

(i) बीमाकृत भवनों या उसमें सम्पत्ति, बीमापत्र (Policy) में परिभाषित संकट द्वारा क्षतिग्रस्त या नष्ट हो जाती है तथा

(ii) भवनों पर ले जाया गया बीमाकृत व्यवसाय बाधित हो या ऐसी हानि के एक परिणाम के रूप में दखल देता हो।

लाभ की हानि के लिए एक दावा उत्पन्न होता है, यदि आग लगने के परिणाम स्वरूप सम्पत्ति की हानि हेतु दावा स्वीकार नहीं किया गया हो। यह बहुत सुविधाजनक होता है, क्योंकि यह लाभों की हानि का बीमापत्र के उद्देश्य हेतु सम्पत्ति की हानि की स्वतन्त्र जाँच पड़ताल का त्याग करता है। यह सम्भावित है की बीमांकित का व्यवसाय पड़ोस में लगी हुई आग से नुकसान उठा सकता है, चाहे वेशक उसकी सम्पत्ति को आग से सीधा नुकसान सम्पत्ति के नष्ट होने से न हुआ हो, लेकिन आग की वजह से उस गली का रास्ता तो कुछ समय के लिए बन्द हो ही जायेगा। ऐसे हालात में अतिरिक्त प्रीमियम के भुगतान पर, बीमाकर्ता की सहमति के द्वारा शामिल किया जा सकता है।

यदि आग लगना व्यपार की मात्रा को प्रभावित नहीं करता है तो यहाँ लाभों की हानि के लिए दावा नहीं कर सकते हैं। साथ ही, यदि यहाँ बनी सम्पत्ति का दावा होने पर यह पालन नहीं करता है तो आवश्यक अनिवार्यतः लाभ की हानि के लिये एक बड़ा दावा ही होगा या इसके ठीक विपरित होगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

4.1 सम्बन्धित परिभाषा (Terms Defined)

निम्नलिखित मदों पर ध्यान देना चाहिये—

सकल लाभ (Gross Profit)—शुद्ध लाभ की राशि में बीमांकित स्थायी प्रभारों की राशि जोड़कर प्रास्तुत राशि या यदि यहाँ शुद्ध लाभ न होने पर बीमांकित स्थाई प्रभारों की राशि को घटाकर किसी शुद्ध व्यापरिक हानि का ऐसा अनुपात जो बीमांकित स्थाई प्रभारों की राशि व्यवसायें के सभी स्थाई प्रभारों को सहन करता है।

शुद्ध लाभ (Net Profit)— शुद्ध व्यापारिक लाभ सभी (सभी पूँजीगत के सिवाय) प्राप्तियाँ और वृद्धियाँ तथा सभी बाहरी सम्पत्तियाँ (पूँजी से प्रभारित) ह्रास सहित सभी स्थिर तथा अन्य प्रभारों के प्रावधानों को करने के पश्चात् व्यवसाय के बीमित परिसर से परिणाम के रूप में प्राप्त हुआ हो।

बीमांकित स्थायी प्रभार (Insured Standing Charges)— ऋणपत्रों, बन्धक ऋणों तथा अधिविकर्षो पर ब्याज, किराया दर तथा (कर सिवाये जो शुद्ध लाभ के हिस्से बनते है) स्थायी कर्मचारियों का वेतन, कुशल कर्मचारियों की मजदूरी, निवासी संचालकों (Resident directors) और/या प्रबन्धक के रुकने तथा भोजनव्यवस्था सम्बन्धी खर्चे, संचालकीय शुल्क, अनिर्दिष्ट स्थायी प्रभार (निर्दिष्ट स्थायी प्रभारों के सम्बन्ध में बसूली योग्य राशि के 5% से ज्यादा नहीं हो)

4.2. लाभ की हानि वाली बीमा पॉलिसी में शामिल शर्तें (Conditons included in a Loss of Profit Insurance Policy)

लाभ की हानि को शामिल करने वाली नीतियाँ निम्नांकित शर्तो का समावेश करती हैं—

सकल लाभ की दर (Rate of Gross Profit)—हानि की तिथि के गत्पूर्व वित्त वर्ष के दौरान आवर्त (turnover) पर अर्जित सकल लाभ की दर।

वार्षिक आवर्त (Turnover)—हानि के गत्पूर्व 12 माह के दौरान आवर्त।

मानक आवर्त (Standerd turnover)—हानि की तिथि के गत्पूर्व 12 माह की अवधि के दौरान जो क्षतिपूर्ति अवधि के मुताविक हो।

जिसके प्रति ऐसे समायोजन व्यवसाय के प्रचलन के लिये करना आवश्यक होगा। इसमें यदि आवश्यक हो तो ऐसे कुछ समायोजनो का प्रावधान किया जा सकता है, जो व्यवसाय की प्रवृत्ति हेतु तथा बदलावों हेतु या व्यवसाय पर प्रभावित विशेष दशाओं में या तो क्षति के पूर्व या पश्चात जब व्यवसाय में यह क्षति न घटित हुयी होती, तब इन समायोजनों से उत्पन्न परिणाम इस प्रकार के यथोचित विवरण का प्रतिनिधित्व कर सके, जो क्षति की अवधि में क्षति न होने पर प्राप्त हुये होते।

क्षतिपूर्ति अवधि (Idemnity Period)—हानि की उपस्थिति के साथ प्रारम्भिक अवधि और हानि के 12 महिने की तुलना के तत्पश्चात् समाप्त न होने के दौरान जो व्यवसाय के परिणामों की क्षति में परिणाम प्रभावित किया जायेगा।

स्मरण लेख 1 : यदि क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान माल बीमा की ओर दूसरे के द्वारा बीमाकृत व्यक्ति द्वारा व्यवसाय के लाभ हेतु भवनों के अलावा कहीं और माल बेचा जायेगा या सेवायें दी जायेंगी।

सेवा या ऐसी बिक्री के सम्बन्ध में भुगतान या देय राशि के क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान आवर्त पर पहुचाने में खातों में प्रस्तुत किया जायेगा।

स्मरण लेख 2 : यदि व्यवसाय का कोई स्थायी प्रभार इस नीति के द्वारा बीमांकित नहीं है तब उसके अन्तर्गत कार्य की लागत में वृद्धि के रूप में वसूली राशि की गणना में केवल अतिरिक्त व्ययों का वह अनुपात खातों में लिया जायेगा जो शुद्ध लाभ का योग तथा बीमाकृत स्थायी प्रभार सभी स्थायी प्रभारों तथा शुद्ध लाभ के योग का वहन करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्मरण लेख 3 : यह बीमा माध्यम से उत्पन्न होने वाली क्षति या विनाश के फलस्वरूप या विद्युत उत्पन्न करने वाले यन्त्र (Dynamo Motor) या परिवर्तक (Transformer), संशोधित करने वाला उपकरण (Rectifire) या विद्युत धाराओं से उत्पन्न होने वाले प्रभावी एक बिजली की स्थापन के किसी हिस्से की पूर्ति हुयी हानि को शामिल नहीं करता है।

विद्यार्थियों को निम्नलिखित बाते ध्यान रखना चाहिये—

(i) उपरोक्त मे प्रयोग किया गया "आवर्त" शब्द लाभ की हानि तक पहुँचने हेतु आधार व्यक्त करने हेतु किसी अन्य शब्द द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।

(ii) बीमांकित स्थायी प्रभारों में बीमाकृत के साथ समझौते द्वारा अतिरिक्त मदें भी शामिल होती हैं।

(iii) शुद्ध लाभ का मतलब लाभ पर आधारित आयकर से पूर्व लाभ है।

(iv) व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर होने पर क्षतिपूर्ति अवधि 12 माह के आगे बढ़ सकती है (यह 6 वर्ष तक बढ़ सकती है)। क्षतिपूर्ति अवधि, बीमे की अवधि जो एक वर्ष से अधिक नहीं हो सकती की अवधि के साथ भ्रमित नहीं करेगा।

लाभ की हानि हेतु बीमा सकल लाभ की हानि के कारण तक सीमित है।

(i) आवर्त में कमी, और

(ii) कार्यशील की लागत में वृद्धि

क्षतिपूर्ति के रूप में देय राशि निम्नलिखित (अ) तथा (ब) का योग है—

(अ) **आवर्त में कमी के सम्बन्ध में**—राशि में सकल लाभ की दर को लागू करके निकाली गयी राशि जिससे क्षतिपूर्ति की अवधि के दौरान आवर्त, हानि के परिणाम स्वरूप में, मानक आवर्त में कमी हो जाती है। कार्यशीलता की लागत में वृद्धि के सम्बन्ध में अतिरिक्त व्यय (उपरोक्त दिये गये स्मरण लेखन के प्रवाधानों के सम्बन्ध में) आवर्त में कमी को कम करना या नकारने का एकल उद्देश्य हेतु अनिवार्यतः और यथोचित व्यय किये जाते हैं, लेकिन उन व्ययों के लिये जो हानि के परिणाम स्वरूप क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान लिये जाते हैं—इस प्रावधान के अन्तर्गत मान्य राशि, आतरिक्त व्ययों द्वारा नकारी गयी कमी की राशि के प्रति सकल लाभ की दर को लागू करके निकाली गयी राशि से ज्यादा नहीं हो सकती है।

उपरोक्त की तरह निकाली गयी देय राशि को ऐसी बोमित मानक प्रभारों के सम्बन्ध में क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान बचाई हुई राशि से कम की जाती है, जो हानि के फलस्वरूप कम हो या समाप्त हो सके।

बीमे की नीतियाँ उपलब्ध कराती हैं कि यदि लाभ की हानि के सम्बन्ध में बीमांकित योग वार्षिक आवर्त के प्रति सकल लाभ की दर को लागू करके प्राप्त राशि से कम होती है। (व्यवसाय के प्रचलन द्वारा या व्यवसाय को प्रभावित करने वाली विशिष्ट परिस्थितियों में विचलन द्वारा, क्षति के पश्चात् या पूर्व जिसे व्यवसाय को प्रभावित करने पर न हानि के समायोजन के पश्चात्) बीमाकृत द्वारा देय राशि को अनुपातिक रूप में घटाया जायेगा। यह कुछ नहीं बल्कि औसत वाक्य का आवेदन है।

व्यवसाय का आवर्त कभी-कभी ही स्थिर रहता है तथा जहाँ गत खातों की तिथि से आग लगनें की तिथि तक ही होती अथवा प्रवृति होती है तो "मानक आवर्त" को उपर्युक्त दिये गयी परिभाषा के अनुसार उपयुक्त तौर से समायोजित करना चाहिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

इसी प्रकार जहाँ व्यवसाय की अर्जन क्षमता बदल गयी है तो सकल लाभ की दर का सम्भवतः एक सही संकेत पुनः प्रस्तुत नहीं करता तथा गणना हेतु पारस्परिक सहमति दर का उपयोग किया जा सकता है। विद्यार्थिओं को "लाभ की हानि" नीति में किये जाने वाले दावों की गणना की प्रक्रिया को समझने हेतु निम्नलिखित उदाहरणों में हुए कार्य के माध्यम को सावधानीपूर्वक चाहिये। माना कि निम्नलिखित सूचना दी हुई हैं—

(i) क्षतिपूर्ति अवधि 13 महीने

(ii) बीमाकृत राशि ₹ 2,00,000

(iii) 31 दिसम्बर 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष में गत वित्तीय वर्ष का आवर्त ₹ 1,20,000

(iv) सकल लाभ यानी शुद्ध लाभ में बीमाकृत स्थायी प्रभारों को जोड़कर संकल लाभ 20% की दर से ₹ 2,00,000 दिये हैं।

(v) शुद्ध लाभ तथा अन्य खर्चे ₹ 2,50,000 हैं माना कि ₹ 50,000 के खर्चे बीमित नहीं हैं।

(vi) 31 मार्च 2008 को आग लगी तथा 6 माह हेतु व्यवसाय प्रभावित रहा।

(vii) 31 मार्च 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के 12 माह हेतु आवर्त ₹ 1,70,000

(viii) आवर्त 1-4-2007 से 30-9-2007 तक ₹ 5,00,000
1-4-2008 से 30-9-2008 तक ₹ 3,00,000
आवर्त में कमी ₹ 2,00,000

(ix) कार्यशील लागत में वृद्धि ₹ 30,000 अन्यथा 1-4-2008 से 31-9-2008 के दौरान इसके बाद आवर्त में 1,60,000 की कमी हो जायेगी।

(x) क्षतिपूर्ति अवधि के अन्तर्गत बीमकृत शुल्क में बचत राशि ₹ 10,000 लाभ के सम्बन्ध में। लाभ के सम्बन्ध में दावे की राशि की गणना निम्नांकित तरह से की जायेगी—

(अ) संक्षिप्त बिक्री (Short Sale) :

1-4-2007 से 30-9-2007 तक आवर्त में कमी	5,00,000
10% अधोगामी रुख (10% down-trend)	50,000
घटाया	4,50,000
1-4-2008 से 30-9-2008 तक आवर्त	3,00,000
घटाया	1,50,000

अधोगामी रुख :	₹
2007 में तिमाही बिक्री $\left[\frac{12,00,000}{12} \times 3\right]$	3,00,000
2008 में पहली तिमाही की बिक्री $11,70,000 - \left[\frac{12,00,000}{12} \times 9\right]$	2,70,000
2008 तिमाही गिरावट (Quarterly downfall)	30,000

2008 अधोगामी रुख (down-trend) % $\frac{₹\ 30,000}{₹\ 3,00,000} \times 100 = 10\%$

© The Institute of Chartered Accountants of India

सामयोजित वार्षिक आवर्त—

1-4-2007 से 31-12-2007 के दौरान हेतु बिक्री (11,70,000–2,70,000)	9,00,000
घटाया— अधोगामी रुख 10%	90,000
	8,10,000
जोड़ो— 1-1-2008 से 31-3-2008 तक बिक्री	2,70,000
	10,80,000
(ब) सकल दावा— सकल लाभ (अ) पर 20% की दर से	30,000
जोड़ा— कार्यशील लागत में वृद्धि हेतु दावा राशि	24,361
	54,361
घटाया— बीमाकृत स्थायी प्रभारों में बचत (Saving)	10,000
दो जाँच सम्बन्धी कार्यशील लागत में वृद्धि हेतु दावा राशि	44,361

(i) कार्यशील लागत की वृद्धि $\times$ $\frac{\text{वार्षिक आवर्त पर सकल लाभ}}{\text{उपरोक्तानुसार सकल लाभ + बीमाकृत स्थायी प्रभार}}$

$$₹\,30,000 \times \frac{₹\,10,80,000 \times \frac{20}{100}}{₹\,10,80,000 \times \frac{20}{100} + ₹\,50,000}$$

$$= ₹\,24,361$$

(ii) कार्यशील लागत वृद्धि द्वारा जनित बिक्री पर सकल लाभ

$$= 1,60,000 \times \frac{20}{100} = ₹\,32,000$$

दोनों में से कम, अर्थात् ₹ 24,361 अनुमोदित (Allowable)

(स) औसत वाक्यांश का अनुप्रयोग (Application) :

वार्षिक आवर्त राशि पर सकल लाभ	₹
₹ 10,80,000 पर 20% दर से	2,16,000
बीमाकृत राशि	2,00,000
अतः सीमित दावे की राशि $44,361 \times \frac{2,00,000}{2,16,000}$	41,075

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **3**

पायनर लि. एक फुटकर व्यापारी, के भवनों में 1 फरवरी 2008 को आग लग गयी तथा व्यवसाय 30 जून 2008 तक आंशिक रूप से अव्यवस्थित था। कम्पनी ₹ 1,25,000 की लाभों की हानि के अन्तर्गत 6 माह की क्षतिपूर्ति अवधि से बीमित है। निम्नलिखित सूचनाओं से लाभ की हानि की नीति के अन्तर्गत दावे की राशि की गणना किजिये—

	₹
1 फरवरी से 30 जून 2008 तक वास्तविक आवर्त	80,000
1 फरवरी से 30 जून 2007 तक का आवर्त	2,00,000
1 फरवरी से 31 जनवरी 2008 तक का आवर्त	4,90,000
गत वित्तीय वर्ष से शुद्ध लाभ	70,000
गत वित्तीय वर्ष हेतु बीमाकृत स्थायी प्रभार	56,000
गत वित्तीय वर्ष हेतु कुल स्थायी प्रभार	64,000
गत वित्तीय वर्ष हेतु आवर्त	4,20,000

कम्पनी ने ₹ 6,700 की राशि हेतु अतिरिक्त व्ययों पर खर्च किया जो आवर्त की हानि को कम करता है। यहाँ अग्नि के परिणाम स्वरूप क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान बीमाकृत स्थायी प्रभारों में ₹ 2,450 की बचत भी की गयी है।

यहाँ व्यापार में अधिक बढ़ोतरी हो चुकी है क्योंकि गत वार्षिक लेखे की तिथि से यह सहमति हुई की 15% का एक उर्ध्वगामी प्रचलन समायोजन आवर्त के सम्बन्ध में किया जाये।

समाधान (Solution)

Computation of the amount of claim for the loss of profit

Reduction in turnover	₹
Turnover from 1st Feb. 2007 to 30th June, 2007	2,00,000
Add: 15% expected increase	30,000
	2,30,000
Less: Actual Turnover from 1st Feb., 2008 to 30th June, 2008	80,000
Short Sales	1,50,000
Gross Profit on reduction in turnover @ 30% on ₹ 1,50,000 (see working note 1)	45,000
Add: Additional Expenses	
	₹
Lower of (i) Actual	6,700

(ii) $\text{Additional Exp.} \times \frac{\text{G.P.on Annual Turnover}}{\text{G.P. on Annual turnover + Uninsured Standing Charges}}$

$6{,}700 \times \frac{1{,}55{,}250}{1{,}63{,}250} =$ 6,372

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iii)	G.P. on sales generated by additional expenses — not available	51,372
	Less: Saving in Insured Standing Charges	2,450
	Amount of claim before Application of Average Clause	48,922
	Application of Average Clause :	
	$\frac{\text{Amount of Policy}}{\text{G.P. on Annual Turnover}} \times \text{Amount of Claim}$	
	$= \frac{1,25,000}{1,55,250} \times 48,922$	39,390

Amount of claim under the policy = ₹ 39,390

कार्यात्मक टिप्पणी :

(i)	गत वित्तीय वर्ष के सकल लाभ की दर	₹
	सकल लाभ	
	शुद्ध लाभ	70,000
	जोड़ें : बीमाकृत स्थाना प्रभार	56,000
		1,26,000
	गत वित्तीय वर्ष के लिये आवर्त	4,20,000
	सकल लाभ की दर $= \frac{1,26,000}{4,20,000} \times 100 = 30\%$	
(ii)	वास्तविक आवर्त	
	1 फरवरी 2007 से 31 जनवरी 2008 का आवर्त	4,50,000
	जोड़े 15% अनुमति वृद्ध	67,500
		517,500
	₹ 5,17,500 पर 30% का सकल लाभ	1,55,250
	अबीमाकृत स्थायी प्रभार	8,000
	सकल लाभ में गैर बीमाकृत स्थायी प्रभार जोड़ कर	1,63,250

उदाहरण (Illustration) 4

1 मार्च, 2008 को XY लि. के भवन में आग लगने के कारण कम्पनी आंशिक रूप से नष्ट हो गयी तथा परिणामस्वरूप व्यवसाय 31 अगस्त 2008 तक वास्तव में अव्यवस्थित रहा। कम्पनी ₹ 1,65,000 की लाभों की हानि के अन्तर्गत 6 माह की क्षतिपूर्ति अवधि से बीमित है। निम्नलिखित सूचनाओं से नीति के अन्तर्गत एक दावा बनाइये।

		₹
(i)	अव्यवस्था की अवधि के दौरान वास्तविक आवर्त [1.03.08 से 31.8.08 तक]	80,000
(ii)	अग्नि के तुरन्त पूर्व के 12 माह में तदनुसार अवधि हेतु आवर्त [1.3.07 से 31.8.07 तक]	2,40,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iii)	अग्नि के तत्काल अगले 12 माह हेतु आवर्त [1.3.07 से 28.2.08 तक]	6,00,000
(iv)	गत वित्तीय वर्षों के लिए शुद्ध लाभ	90,000
(v)	गत वित्तीय वर्ष हेतु बीमाकृत स्थायी प्रभार	60,000
(vi)	अबीमाकृत स्थायी प्रभार	5,000
(vii)	गत वित्तीय वर्ष हेतु आवर्त	5,00,000

व्यापार में वास्तविक वृद्धि के कारण, अग्नि के समय तक या पहले, यह सहमति हुई थी की आवर्त में उर्ध्वगामी प्रचलन के सम्बन्ध में 10% का समायोजन किया जाना चाहिए। कम्पनी ने आग लगने के तुरन्त बाद ₹ 9,300 की राशि के अतिरिक्त व्ययों पर खर्च किये लेकिन इन व्ययों हेतु व्यवधान की अवधि के दौरान का आवर्त केवल ₹ 55,000 था। यहाँ अग्नि के परिणामस्वरूप क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान बीमाकृत स्थायी प्रभारों में ₹ 2,700 की भी बचत की गयी।

समाधान (Solution)

बीमा दावे की लाभ की हानि की गणना

		₹
(1)	सकल लाभ की दर	
	गत वित्तीय वर्ष हेतु शुद्ध लाभ	90,000
	जोड़े बीमाकृत स्थायी प्रभार	60,000
		1,50,000
	गत वित्तीय वर्ष हेतु आवर्त	5,00,000
	सकल लाभ की दर $= \left[\frac{₹\,1,50,000}{₹\,5,00,000} \times 100\right] = 30\%$	
(2)	बिक्री में कमी	
	मानक आवर्त	2,40,000
	जोड़ें : 10% वृद्धि	24,000
		2,64,000
	घटायें : व्यवधान काल के दौरान आवर्त [जो 6 माह की क्षतिपूर्ति अवधि के साथ सममूल्य है]	80,000
		1,84,000
(3)	वार्षिक (समायोजित) आवर्त	
	वार्षिक आवर्त [1.3.07 से 23.2.08 तक]	6,00,000
	जोड़ें : 10% वृद्धि	60,000
		6,60,000

टिप्पणी—माना कि वार्षिक आवर्त की कुल राशि पर प्रचलन समायोजन आवश्यक है। फिर भी वार्षिक आवर्त का भाग प्रचलित समायोजित आंकड़ा पुनः प्रस्तुत करता है। कल्पित रूप से विद्यार्थी प्रचलन की अपेक्षा साधारण वार्षिक आवर्त को ले सकता है। ₹ 55,000 का दावा होगा जो कि अनुच्छेद 5 में की गयी गणना से ज्यादा है। इसलिये बीमाकृत कम्पनी का वार्षिक आवर्ती पर प्रचलित समायोजन पर जोर होगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

		₹
(4)	अतिरिक्त व्यय	
	(i) वास्तविक व्यय	9,300
	(ii) अतिरिक्त व्ययों द्वारा उत्पन्न बिक्री पर सकल लाभ 300/100× [₹ 80,000 – 55,000]	7,500
	(iii) वार्षिक (समायोजित) आवर्त पर सकल लाभ× अतिरिक्त व्यय अंश में दर्शाया गया सकल लाभ+ अबीमाकृत स्थायी प्रभार $\frac{₹\,6,60,000 \quad 30\%}{₹\,6,60,000 \quad 30\% + 5,000} \times 9,300$	9,071
	उपर्युक्त तीनों संख्याओं में जो सबसे कम हो अर्थात् ₹ 7,500 स्वीकृत हैं।	
(v)	दावा	
	बिक्री की कमी पर लाभ की हानि (₹ 1,84,000 का 30%)	55,200
	जोड़ें : स्वीकृत अतिरिक्त व्यय	7,500
		62,700
	घटायें : बीमाकृत स्थायी प्रभारों में बचत	2,700
		60,000
	औसत वाक्य का प्रयोग $₹\,60,000 \times \frac{₹\,1,65,000}{₹\,1,98,000}$	50,000

उदाहरण (Illustration) 5

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष में S & M लिमिटेड ने निम्नांकित व्यापारिक तथा लाभ और हानि खाता दिये।

व्यापार तथा लाभ व हानि खाता

31 दिसम्बर 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये

	₹		₹
प्रारम्भिक स्कन्ध से	50,000	बिक्री द्वारा	8,00,000
क्रय से	3,00,000	अन्तिम स्कन्ध द्वारा	70,000
मजदूरी (कुशल मजदूरी के लिए ₹ 20,000)	1,60,000		
निर्माणी व्यय से	1,40,000		
सकल लाभ से	2,40,000		
	8,70,000		8,70,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

प्रशासनिक कार्यालय व्यय से	60,000	सकल लाभ द्वारा	2,40,000
विज्ञापन से	20,000		
बिक्री व्यय (स्थायी) से	40,000		
बिक्री पर कमीशन से	48,000		
बाहरी भाड़ा से	16,000		
शुद्ध लाभ से	56,000		
	2,40,000		2,40,000

कम्पनी ने दोनो स्कन्ध की हानि के विरुद्ध व लाभ की हानि के विरुद्ध नीतियाँ ली हुई थीं जो क्रमशः ₹ 80,000 तथा ₹ 1,72,00 थीं। 1 मई, 2008 को आग लग गई और परिणामस्वरूप 4 माह की अवधि हेतु बिक्री गम्भीरता से प्रभावित थी। आपको निम्नलिखित अतिरिक्त सूचनायें दी जाती हैं

(a) 2008 के पहले 4 माह हेतु क्रय मजदूरी तथा अन्य निर्माणी व्यय क्रमशः ₹ 1,00,000 ₹ 50,000 तथा 36,000 थे।

(b) समान अवधि हेतु बिक्री ₹ 2,40,000 थी।

(c) अन्य बिक्री संख्यांयें निम्नलिखित रूप में थीं

		₹
1	जनवरी, 2007 से 30 अप्रैल, 2007 तक	3,00,000
1	मई, 2007 से 31 अगस्त, 2007 तक	3,60,000
1	मई, 2008 से 31 अगस्त, 2008 तक	60,000

(d) मजदूरी में वृद्धि के कारण 2008 के दौरान सकल लाभ बिक्री पर 2% द्वारा कम होने हेतु अनुमानित किया जाता था।

(e) अवोध के दौरान आग लगने के पश्चात् ₹ 1,40,000 की राशि के अतिरिक्त व्यय किये। नीति की राशि में छोड़े हुये व्यय हेतु ₹ 1,20,000 असमावेश ₹ 20,000 शामिल हैं। स्कन्ध तथा लाभ की हानि हेतु दावा सुनिश्चित कीजिये।

सभी क्रियात्मक आपके उत्तरों का भाग होना चाहिए।

समाधान (Solution)

Claim for loss of stock :

Memorandum Trading Account for the period 1st January to 1st May, 2008

	₹		₹
To Opening Stock	70,000	By Sales	2,40,000
To Purchases	1,00,000	By Closing stock	
To Wages	50,000	(Balancing figure)	83,200
To Manufacturing expenses	36,000		
To Gross Profit @ 28% on sales	67,200		
	3,23,200		3,23,200

Claim for loss of Stock will be limited to ₹ 80,000 which is the amount of Insurance policy.

© The Institute of Chartered Accountants of India

क्रियात्मक टिप्पणियाँ :

(1) 2007 में सकल लाभ की दर

$$\frac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय}} \times 100$$

$$\frac{2,40,000}{8,00,000} \times 100 \qquad \Rightarrow 30\%$$

2008 में मजदूरी में वृद्धि होने के कारण सकल लाभ में 2% से गिरावट आयी थी अतः स्कन्ध की हानि हेतु सकल लाभ की दर 28% ली जायेगी।

लाभ की हानि	₹
(a) बिक्री में कमी	
1 मई 2007 से 31 अगस्त 2007 तक की बिक्री	3,60,000
घटाये : 2007 के ऊपर 2008 में पायी गई 20% गिरावट [जनवरी–अप्रैल 3,00,000 के स्थान पर 2,40,000]	72,000
	2,88,000
घटाये : 1 मई 2008 से 31 अगस्त 2008 तक की बिक्री	60,000
विक्रय में कमी	2,28,000
(b) सकल लाभ अनुपात $\frac{\text{शुद्ध लाभ + बीमाकृत स्थाई प्रभार (2007)}}{\text{बिक्री (2007)}} \times 100$	22%
घटायें : मजदूरी में वृद्धि के कारण अनुमानित कमी	2%
	20%
(c) सकल लाभ की हानि	
₹ 2,28,000 की क्रय कमी पर 20%	45,600

(d) वार्षिक आवर्त [1 मई, 2008 से पहले के 12 माह]

	₹
जनवरी-दिसम्बर 2007 हेतु बिक्री	8,00,000
घटायें : 1 जनवरी, 2007 से 30 अप्रैल, 2007 तक	3,00,000
	5,00,000
घटायें : 20% उधोगामी प्रचलन	1,00,000
	4,00,000
जोड़े 1.1.2008 से 30.4.2008 तक	2,40,000
	6,40,000
वार्षिक आवर्त पर 20% से सकल लाभ	1,28,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(e) अतिरिक्त व्ययों के संबन्ध में मान्य राशि ₹

निम्नलिखित में से कम हो :

(i) वास्तविक व्यय 1,40,000

(ii) क्षतिपूर्ति अवधि के दौरान बिक्री पर सकल लाभ (60,000 × 20%) 12,000

(iii) $\frac{\text{वार्षिक (समायोजन) आवर्त पर सकल लाभ}}{\text{उपरोक्त जैसा सकल लाभ + अबीमाकृत प्रभाव}} \times \text{अतिरिक्त व्यय}$

$\frac{1,28,000}{1,48,000} \times 1,40,000 =$ 1,21,081

सबसे कम अर्थात् ₹ 12,000 स्वीकृत हैं।

N.B. अन्तिम दावे की राशि पर, औसत वाक्य का प्रयोग नही होगा क्योंकि वार्षिक आवर्त पर सकल लाभ ₹ 1,28,000 नीति की राशि ₹ 1,72,000 से अधिक है।

उदाहरण (Illustration) 6

31 दिसम्बर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये सोनी लिमिटेड के व्यापारिक तथा लाभ हानि खाते अग्रांकित थे।

व्यापारिक तथा लाभ व हानि खाता
31.12.2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये

	₹		₹
प्रारम्भिक रहतिया से	20,000	विक्रय द्वारा	10,00,000
क्रय से	6,50,000	अन्तिम रहतिया द्वारा	90,000
निमार्णी व्यय से	1,79,000		
सकल लाभ से	2,50,000		
	10,90,000		10,90,000
प्रशासनिक व्यय से	80,000	सकल लाभ द्वारा	2,50,000
बिक्री व्यय से	20,000		
वित्त प्रभार से	1,00,000		
शुद्ध लाभ से	50,000		
	2,50,000		2,50,000

एक क्षतिपूर्ति कम्पनी ने ₹ 3,00,000 के लिये आग नीति ली और 6 माह की एक क्षतिपूर्ति अवधि के लिए लाभों की हानि की नीति ₹ 1,00,000 के लिये है। भवनों पर 1.4.2008 को आग लगी और पूर्ण स्कन्ध शून्य विशिष्ट मूल्य के साथ जलकर राख हो गये। शुद्ध तिमाही बिक्री अर्थात् 1.4.2008 से 30.6.2008 तक गम्भीर रूप से प्रभावी थी। अन्य सूचनाएँ निम्नलिखित हैं—

अवधि के दौरान बिक्री	1.1.08 से 31.3.08	2,50,000
अवधि के दौरान क्रय	1.1.08 से 31.8.08	3,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

निमार्णी व्यय	1.1.08 से 31.3.08	70,000
अवधि के दौरान बिक्री	1.4.08 से 30.6.08	87,500
बीमाकृत स्थायी प्रभार		50,000
आग लगने के पश्चात् वास्तविक व्यय किये		60,000

उद्योग का सामान्य प्रचलन बिक्री में 15% से वृद्धि और बढ़ी हुई लागत के कारण सकल लाभ से 5% से कमी दर्शाता है।

लाभ की हानि तथा स्कन्ध के लिये दावा सुनिश्चित कीजिये :

समाधान (Solution)

Calculation of loss of stock :

Sony Ltd.
Trading A/c
for the period 1.1.2008 to 31.3.2008

Dr.				*Cr.*
	₹			₹
To Opening stock	90,000	By Sales		2,50,000
To Purchases	3,00,000	By Closing stock (balancing figure)		2,60,000
To Manufacturing expenses	70,000			
To Gross profit (20% of ₹ 2,50,000)	50,000			
	5,10,000			5,10,000

	₹
Stock destroyed by fire	2,60,000
Amount of fire policy	3,00,000

As the value of stock destroyed by fire is less than the policy value, the entire claim will be admitted.

लाभ की हानि की गणना :

विक्रय की कमी की गणना :	₹
1.4.2007 से 30.6.2007 अवधि के लिये औसत बिक्री (W.N.1) (₹ 7,82,610/3)	2,60,870
जोड़ें : विक्रय के प्रचलन में वृद्धि (15%)	(लगभग) 39,130
	3,00,000
घटायें : 1.4.2008 से 30.6.2008 की अवधि के दौरान बिक्री	87,500
बिक्री में कमी	2,12,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

सकल लाभ अनुपात की गणना :

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ + बीमाकृत स्थायी प्रभार}}{\text{बिक्रय}} \times 100$$

$$\frac{₹\,50,000 + ₹\,50,000}{₹\,10,00,000} \times 100 = 10\%$$

घटायें : सकल लाभ में कमी प्रचलन		5%
		5%
लाभ की हानि = ₹ 2,12,500 का 5%	=	10,625

अतिरिक्त व्ययों के सम्बन्ध में स्वीकृत राशि :

निम्नलिखित में जो सबसे कम हो :

(i)	वास्तविक व्यय	60,000
(ii)	अतिरिक्त व्ययों द्वारा उत्पन्न होने वाली बिक्री पर सकल लाभ ₹ 87,500 का 5%	4,375
	(मान लिया कि अतिरिक्त व्ययों के कारण बांटने की अवधि के दौरान पूर्ण विक्रय है।)	

(iii) अतिरिक्त व्यय $\times \frac{\text{वास्तविक आवर्त पर सकल लाभ}}{\text{वास्तविक आवर्त पर सकल लाभ + अबीमाकृत स्थायी प्रभार}}$

$$\frac{₹\,50,000 + ₹\,50,000}{₹\,10,00,000} \times 100 = ₹\,18,400 \text{ (लगभग)}$$

वार्षिक आवर्त पर सकल लाभ

समायोजित वार्षिक आवर्त :	
1.4.2007 से 31.12.2007 अवधि के लिये वार्षिक आवर्त	7,39,130
1.1.2008 से 31.3.2008 के लिये आवर्त	2,50,000
	9,89,130
जोड़ें : प्रचलन में वृद्धि (₹ 7,39,130 का 15%) (W.N.2)	1,10,870
	11,00,000
वार्षिक आवर्त पर सकल लाभ (₹ 11,00,000 का 5%)	55,000

(₹ 55,000) वार्षिक आवर्त पर सकल लाभ, निति मूल्य (₹ 11,00,000) से कम हो, तब/तो औसत वाक्य का प्रयोग नहीं होता।

बीमा का दावा जमा करते हैं :

	₹
स्कन्ध की हानि	2,60,000
लाभ की हानि	10,625
अतिरिक्त व्यय	4,375
	2,75,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

टिप्पणी : दी गई सूचनाओं के अनुसार स्थायी प्रभार में प्रशासनिक व्यय ₹ 80,000 तथा वित्त प्रभार (₹ 100,000) शामिल थे। बीमाकृत स्थायी प्रभार ₹ 50,000 तथा अबीमाकृत स्थायी प्रभार ₹ 1,30,000 रहे होंगे।

क्रियात्मक टिप्पणी :

(1) 2007, वर्ष के लिये बिक्री

(Breakup Sales for the year 2007)

2007 के गत तिमाही का विक्रय

₹ 2,50,000 × $\frac{100}{115}$	2,17,390
2007 के शेष तीन तिमाही के लिये बिक्री	7,82,610
(10,00,000 – 2,17,390)	

2007 के गत तिमाही के लिये विक्रय 2008 के पहले तिमाही के विक्रय के आधार पर गणना की जायेगी।

(2) विक्रय के प्रचलन में वृद्धि केवल 2007 के विक्रय के लिये स्वीकार्य है, क्योंकि 2008 के पहले तिमाही में विक्रय राशि पहले से ही समायोजित में प्रचलित है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश
(SUMMARY)

(1) **स्कन्ध की हानि के लिये दावा**

स्कन्ध की हानि :

स्कंध की हानि की राशि की गणना निम्नलिखित है

आग लगने की तिथि पर स्कन्ध का मूल्य	×××
घटायें : अवशिष्ट स्कंध का मूल्य	×××
स्कन्ध की हानि का मूल्य	×××

स्कन्ध हेतु हानि का दावा निम्नलिखित शीर्षों के अन्तर्गत का अध्ययन कर सकते हैं।

(a) कुल हानि :

दावे की राशि = वास्तविक हानि (यदि माल पूर्व बीमांकित हो, परन्तु दावे की राशि नीति की राशि तक प्रबन्धित है।

(b) आंशिक हानि :

(i) बिना औसत वाक्य पर :

दावा = वास्तविक हानि या बीमांकित योग जो दोनों में से कम हो

(ii) औसत वाक्य के साथ :

$$\text{दावा} = \frac{\text{स्कन्ध की हानि} \times \text{बीमाकृत योग}}{\text{बीमांकित राशि (कुल कीमत)}}$$

अन्य बिन्दु :

(i) स्कन्ध लेखों को बनाया गया है तथा अग्नि द्वारा नष्ट किया गया है। अग्नि की तिथि के रूप में स्कंध का मूल्य आसानी से निकाला जा सकता है।

(ii) स्कंध अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं या अग्नि द्वारा नष्ट हो गये हैं तो अग्नि की तिथि पर स्कंध का मूल्य अनुमानित करते हैं।

(iii) जहाँ खाते की पुस्तकें नष्ट हो गयी हो, तब व्यापारिक खाता बनाया जाता है।

(iv) कुल हानि हेतु बीमांकित कम्पनी भुगतान करती है।

(v) अवशिष्ट स्कंध को पुनःस्थिति में लाने के पश्चात बिक्री योग्य बनाया जाता है, उस स्थिति में ऐसे स्कंध की लागत से व्यापारिक खाते क्रेडिट और निर्दिष्ट स्कंध खाते को डेबिट करना आवश्यक है तथा किसी खाते हेतु बिक्री को क्रेडिट किया जा सकेगा, अंतिम शेष को लाभ एवं हानि खाते में हस्तान्तरण किया जायेगा।

(2) **लाभ की हानि हेतु दावा :**

लाभ की हानि नीति में सामान्यतः निम्नलिखित मदें शामिल हैं—

(1) शुद्ध लाभ की हानि

(2) स्थायी प्रभार

© The Institute of Chartered Accountants of India

(3) **कार्यशील पूँजी में कोई वृद्धि :**

सकल लाभ :

शुद्ध लाभ + बीमांकित स्थायी प्रभार

या

बीमाकृत स्थायी प्रभार – शुद्ध व्यापारिक लाभ (यदि कोई हो) × $\frac{\text{बीमाकृत स्थायी प्रभार}}{\text{व्यवसाय के सभी स्थायी प्रभाव}}$

शुद्ध लाभ : शुद्ध व्यापारिक लाभ (सभी पूँजी गत के सिवाय) प्राप्तियाँ और वृद्धियाँ तथा सभी बाहरी सम्पत्तियाँ (पूँजी से प्रभारित) ह्रास सहित सभी स्थिर तथा अन्य प्रभारों के प्रावधानों को करने के पश्चात् व्यवसाय के बीमित परिसर से परिणाम के रूप में प्राप्त हुआ हो।

बीमांकित स्थायी प्रभार : ऋणपत्रों, बन्धक ऋणों तथा अधिविकर्षों पर ब्याज, किराया दर तथा कर [कर सिवाय जो शुद्ध लाभ के हिस्से बनते हैं] स्थायी कर्मचारियों का वेतन, कुशल कर्मचारियों को मजदूरी, निवासी संचालकों (Resident Director) और या प्रबन्धक के रुकने तथा भोजन व्यवस्था सम्बन्धित खर्चे, संचालकीय शुल्क, अनिर्दिष्ट स्थायी प्रभार (निर्दिष्ट स्थायी प्रभारों के सम्बन्ध में वसूली योग्य राशि के 5% से ज्यादा न हो)।

सकल लाभ की दर : क्षति की तिथि के तुरंत पूर्व वित्तीय वर्ष के दौरान आवर्त पर अर्जित सकल लाभ की दर

वार्षिक आवर्त : क्षति के तुरंत पूर्व के 12 माह के दौरान आवर्त।

मानक आवर्त : क्षति की तिथि के तुरंत पूर्व के 12 माह की अवधि के दौरान जो क्षतिपूर्ति अवधि के मुताबिक हो।

क्षतिपूर्ति अवधि : क्षति की उपस्थिति के साथ प्रारंभिक अवधि तथा 12 माह की तुलना के बाद समाप्त नहीं होती

लाभ की हानि हेतु बीमा सकल लाभ की हानि के कारण सीमित है :

(1) आवर्त में कमी तथा

(2) कार्यशील लागत में वृद्धि

क्षतिपूर्ति देय की राशि :

सकल लाभ–हानि + कार्यशील की लागत वृद्धि हेतु

दावा– बीमांकित स्थायी प्रभारों में बचत।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Answer Type Questions)

दिये गये विकल्पों में से अधिक उपयुक्त उत्तर को चुनिये

1. ₹ 1,00,000 लागत का माल ₹ 50,000 हेतु बीमाकृत था। इस माल का 3/4 भाग आग से जलकर नष्ट हो गया। दावे की राशि होगी :

(अ) ₹ 37,500

(ब) ₹ 50,000

(स) ₹ 75,000

(द) उपरोक्त में कोई नहीं

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. अग्नि बीमा दावा तक सीमित होगा
   (अ) माल के बीमाकृत मूल्य के माध्यम से गुजर रही वास्तविक हानि तक अधिक हो सकती है
   (ब) हानि के समानुपातिक बीमाकृत मूल्य की तरह से कुल लागत को वहन करता है
   (स) दोनों (अ) तथा (ब)
   (द) उपरोक्त में कोई नहीं
3. सामान्यतः लाभ की हानि नीति निम्नलिखित मदों को शामिल करती है :
   (अ) शुद्ध लाभ की हानि
   (ब) स्थायी प्रभार
   (स) कार्यशील पूँजी में वृद्धि; जैसे–अस्थायी भवनों का किराया
   (द) उपरोक्त सभी
4. ₹ 40,000 मूल्य का एक संयंत्र ₹ 30,000 हेतु बीमांकित है। अग्नि के कारण ₹ 25,000 की हानि हुई। बीमा कम्पनी कहाँ तक हानि वहन करेगी ?
   (अ) ₹ 18,750
   (ब) ₹ 25,000
   (स) ₹ 30,000
   (द) ₹ 40,000

[**उत्तर** (Answer)—1. (अ), 2. (स), 3. (द), 4. (अ)]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

5. लाभ की हानि बीमा नीतियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त में व्याख्या कीजिए।
   (i) औसत वाक्य
   (ii) आवर्त में कमी या बिक्री में कमी
   (iii) वार्षिक आवर्त
   (iv) क्षतिपूर्ति अवधि

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

6. लाभ की हानि नीति के अन्तर्गत बीमाकृत दावे की राशि की गणना की प्रक्रिया को समझाइये।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Questions)

1. 1 सितम्बर, 2008 को मि. फॉरचून के भवनों में गम्भीरता से आग लगी थी। उनकी व्यावसायिक क्रिया 31 दिसम्बर, 2008 तक अव्यवस्थित रहीं जब तक सामान्य व्यापार स्थितियाँ पुर्नस्थापित नहीं हुयी। मि. फॉरच्यून ने लाभ की नीति के अन्तर्गत 6 माह की क्षतिपूर्ति की अवधि ₹ 40,000 हेतु बीमाकृत करायी थी। आप अग्रलिखित सूचनाओं से सुनिश्चित करने में सक्षम है :

© The Institute of Chartered Accountants of India

1. 31 दिसम्बर, 2007 समाप्त होने वाले वर्ष हेतु शुद्ध लाभ ₹ 20,000 था।
2. वार्षिक बीमाकृत स्थायी प्रभार की राशि ₹ 30,000 जिसमें नीति के अन्तर्गत बीमाकृत स्थायी प्रभार की परिभाषा में ₹ 2,000 शामिल नहीं थे।
3. कार्यशील की अतिरिक्त लागत अग्नि के कारण ₹ 600 की राशि हानि हेतु कम कर दी गयी है, लेकिन इन व्ययों हेतु व्यवसाय को बंद कर दिया जायेगा।
4. बीमांकित प्रभारों में बचत आग के परिणामस्वरूप ₹ 1,500 की राशि है।
5. 2007 तथा 2008 वर्षों के प्रत्येक 30 अप्रैल, 31 अगस्त और 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाली अवधि हेतु आवर्त निम्नलिखित है।

	₹	₹	₹
2007	65,000	80,000	95,000
2008	70,000	80,000	15,000

लाभों की हानि नीति की दशाओं के अन्तर्गत सम्बन्धित दावे की गणना करना आवश्यक है।

8. एक कम्पनी का भवन 1 मार्च, 2008 को आंशिक रूप से जल कर नष्ट हो गया और उसके परिणामस्वरूप व्यवसाय 1 मार्च से 31 जुलाई तक अव्यवस्थित रहा था। खाते प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं। कम्पनी लाभों की हानि नीति के अन्तर्गत ₹ 7,50,000 के लिए बीमाकृत है। नीति में विशिष्ट क्षतिपूर्ति की अवधि 6 माह है। निम्नलिखित सूचनाओं से आपको लाभों की हानि नीति के अन्तर्गत दावे की राशि की गणना करना आवश्यक है।

2007 हेतु आवर्त	40,00,000
2007 हेतु शुद्ध लाभ	2,40,000
बीमाकृत स्थायी प्रभार	4,80,000
अबीमाकृत स्थायी प्रभार	80,000
अव्यवस्थित अवधि के दौरान आवर्त	8,00,000
[अर्थात् 1.3.2008 से 31.07.2008 तक]	
गत वर्ष में सम्बन्धित अवधि हेतु मानक आवर्त	2,00,000
[अर्थात् 1.3.07 से 28.2.08 तक]	

9. 31 दिसम्बर 2007 को शंकर लि. के भवन में आग लगी और कम्पनी का व्यवसाय 31.3.2008 तक अव्यवस्थित रहा। कम्पनी ₹ 1,95,000 की लाभों की हानि के अन्तर्गत 6 माह की क्षतिपूर्ति अवधि से बीमित है।

31 अक्टूबर, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष हेतु कम्पनी के खाते ₹ 5,85,000 का आवर्त ₹ 60,000 के शुद्ध लाभ के साथ दर्शाते हैं। बीमा द्वारा स्थायी प्रभार की राशि शामिल है और उस वर्ष में ₹ 1,50,000 से डेबिट किया गया।

31 दिसम्बर, 2007 समाप्त होने वाले 12 माह हेतु आवर्त ₹ 5,85,000 था। व्यवसाय अवधि के दौरान आवर्त की राशि ₹ 60,000 थी, जबकि गत वर्ष में सम्बन्धित अवधि के दौरान यह ₹ 1,27,500 थी। हानि के प्रभाव को कम करने के लिए अतिरिक्त व्यय के रूप में ₹ 15,000 की राशि खर्च की गयी। यहाँ फिर भी अग्नि के परिणामस्वरूप स्थायी प्रभार में कोई बचत नहीं हुई।

हानि नीति के परिणाम के सम्बन्ध में जमा किये गये दावे को तैयार कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

14

साझेदारी खातों के मुद्दे

[ISSUES IN PARTNERSHIP ACCOUNTS]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- साझेदारी फर्म की विशेषताएँ एवं साझेदारी संलेख की आवश्यकता को समझने में
- खातों के संबंध में साझेदारी संलेख में सम्मिलित किए जाने वाले महत्वपूर्ण विन्दुओं को समझने में।
- लाभ-हानि नियोजन खाता तैयार करने संबंधी तकनीक सीखने में।
- साझेदार के पूंजी खाते को बनाने की दो प्रणालियों अर्थात् स्थिर पूंजी विधि तथा परिवर्तनशील पूंजी विधि से अवगत होने में।
- पूंजी एवं आहरण पर ब्याज, साझेदारों को वेतन/कमीशन आदि कहाँ दर्शाई जाए तथा यह सीखना कि साझेदारों द्वारा आहरित राशि को लाभ–हानि नियोजन खाते में नहीं दिखाया जाता है।
- ख्याति के लेखांकन को समझना तथा यह देखना कि साझेदारी खातों में ख्याति का मूल्यांकन कब आवश्यक होता है।
- साझेदारी के संविधान में परिवर्तन हुए बिना, लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन के साथ व्यवहार कर सकेंगे।
- एक साझेदार के प्रवेश के समय संपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन तथा दायित्व का पुनः आकलन के कारण समझने में तथा साझेदार के प्रवेश, निवृत्ति या मृत्यु होने पर संपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनः आकलन के तर्क को समझने में।
- साझेदार के प्रवेश, निवृत्ति या मृत्यु होने पर संचय शेष का उपचार सीखने में।
- साझेदार के प्रवेश, निवृत्ति या मृत्यु होने पर लाभ विभाजन अनुपात की गणना करने में।
- निवृत्ति साझेदार की अवशेष राशि को ऋण खाते में स्थानान्तरित करने पर अभिलेखों के रख-रखाव को समझने में।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- **लेखांकन अवधि के अन्तर्गत किसी भी तिथि को साझेदार की मृत्यु होने पर लेखांकन प्रभाव समझने में।**
- **उपरोक्त लेने देन अभिलेखित करने तथा लेखांकन वर्ष की अवधि के दौरान मृतक साझेदार के वैद्यानिक उत्तराधिकारी को लाभ भुगतान के अभिलेखन को समझने में।**

1. साझेदारी खातों की परिभाषा एवं विशेषताएं

(DEFINITION AND FEATURES OF PARTNERSHIP ACCOUNTS)

भारतीय साझेदारी अधिनियम के अनुसार साझेदारी "व्यक्तियों के मध्य संबंध है जो एक व्यवसाय के लाभ अथवा हानि के वितरण हेतु सहमत हों, जिसे उन सबके द्वारा या सबकी ओर से किसी एक के द्वारा संचालित किया जाता है। व्यक्तिगत रूप से ऐसे संचालनकर्ता को साझेदार कहते हैं जो अपना व्यापार अपनी फर्म के नाम पर करता है। सामान्यतः साझेदार व्यवसाय संबंधी नियमों एवं शर्तों पर सहमत होते हैं। लेकिन अक्सर वे मौखिक समझौते के आधार पर व्यवसाय को जारी रखते हैं।

साझेदारी की प्रमुख विशेषताएं हैं—

(i) दो या अधिक व्यक्तियों का संघ

(ii) संबन्धित सभी व्यक्तियों द्वारा किया गया अनुबंध

(iii) व्यावसायिक व्यय

(iv) सभी साझेदारों द्वारा अथवा उन सभी की ओर से किसी साझेदार द्वारा व्यवसाय संचालन

(v) व्यावसायिक लाभों तथा हानियों का सहमत अनुपात में विभाजन

इसलिए एक साझेदारी पारस्परिक लिखित करार द्वारा चलाई जाती है जिसे साझेदारी संलेख कहा जाता है जो पंजीकृत अथवा गैर-पंजीकृत हो सकता है। लेकिन भविष्य में साझेदारों के बीच मतभेदों को सुलझाने के लिए पंजीकृत साझेदारी संलेख को बेहतर माना गया है।

साधारणतः साझेदारी संलेख में निम्नांकित वाक्याशों का समावेश होता है—

(i) फर्म का नाम तथा साझेदारी व्यवसाय की प्रकृति।

(ii) व्यवसाय का प्रारम्भ एवं संचालन।

(iii) प्रत्येक साझेदार द्वारा लगाई जाने वाली पूँजी की राशि।

(iv) साझेदारों के मध्य व्यावसायिक लाभ एवं हानि का वितरण अनुपात

(v) साझेदारों द्वारा आहरण सीमा निर्धारण तथा आहरणों पर लगाए जाने वाले ब्याज (यदि कोई है) की व्यवस्था।

(vi) साझेदारों को देय वेतन

(vii) साझेदारों द्वारा लगाई गई पूंजी पर देय ब्याज।

(viii) व्यावसायिक उद्देश्य हेतु

(ix) साझेदारों के बीच विवादों की समाधान प्रक्रिया।

(x) खातों के अनुरक्षण तथा अंकेक्षण की प्रक्रिया।

(xi) नये साझेदार के प्रवेश, वर्तमान साझेदार की निवृत्ति तथा किसी साझेदार की मृत्यु होने पर ख्याति का मूल्यांकन।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(xii) निवृत्ति अथवा मृत्यु पर साझेदार के दावे को निपटाने की प्रक्रिया।

(xiii) साझेदारी के समापन आदि हेतु प्रक्रिया।

यदि किसी स्थिति या परिस्थिति का साझेदारी संलेख में वर्णन न हो या पर्याप्त व्याख्या न हो, ऐसी स्थिति में या परिस्थितियों का साझेदारी अधिनियम, 1932 के प्रावधानों को लागू करके समाधान करना चाहिए।

साझेदारों से अपेक्षा की जाती है कि वह विभिन्न स्थितियों में काम करने का अधिकार रखें तथा ऐसे अधिकार अन्य परिस्थितियों में न रखें। छात्रों को सलाह दी जाती है कि व्यापक तौर पर इन शक्तियों को समझने हेतु सी.पी.टी. के आठवें अध्याय की यूनिट 1 का अध्ययन करें।

2. साझेदार के पूंजी एवं चालू खाते
(PARTNERS' CAPITAL AND CURRENT ACCOUNTS)

लेखांकन की दृष्टि से साझेदारों के पूंजी खातों तथा चालू खातों का संरक्षण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संबंधित लेखांकन लेनदेन एवं घटनाएं हैं—

- फर्म की पूंजी हेतु साझेदारों का प्रारंभिक योगदान।
- साझेदारों द्वारा लगाई गई अतिरिक्त पूँजी।
- लगाई हुई पूँजी पर ब्याज प्राप्ति का अधिकार (यदि साझेदारी संलेख में सहमति है)
- साझेदारों द्वारा समय–समय पर आहरित राशि।
- आहरणों पर साझेदारों पर ब्याज दायित्व (यदि साझेदारी संलेख में सहमति है)
- फर्म के व्यवसाय संचालन के लिए प्रदत्त सेवाओं हेतु साझेदारों के वेतन।
- साझेदारों द्वारा साझेदारी हेतु किराए पर दिए भवनों का किराया।
- साझेदारी व्यवसाय के लाभ-हानि का वितरण।

साझेदारी खातों में ऐसे समस्त लेन–देनों तथा घटनाओं को कैसे लिखा जाए, इसे भली-भांति समझना आवश्यक है।

लेखांकन की दो विधियाँ हैं—

(i) स्थायी पूँजी विधि एवं

(ii) परिवर्तनशील पूँजी विधि।

स्थायी पूँजी विधि में साधारणतः साझेदारों द्वारा प्रारंभिक पूँजी अंशदान को साझेदारों के पूँजी खातों में क्रेडिट किया जाता है तथा घटनाओं को चालू खातों के माध्यम से लिखा जाता है। जब तक इसके परिवर्तन का निर्णय न हो, प्रारंभिक पूँजी खाते का शेष परिवर्तित नहीं होगा।

परिवर्तनशील पूँजी विधि में कोई चालू खाता नहीं बनाया जाता। ऐसे सभी लेनदेन व घटनाएं पूँजी खाते के माध्यम से लिखी जाती हैं।

स्वाभाविक रूप से साझेदारों के पूँजी खाते का शेष हर समय बदलता रहता है। अतएव स्थिर पूँजी विधि में हर समय एक स्थिर पूँजी शेष बनाई रखी जाती है, जबकि परिवर्तनशील पूँजी विधि में पूँजी खाता शेष हर समय बदलता रहता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **1**

1 जनवरी, 2008 पर, ए तथा बी ने ₹ 30,000 और ₹ 20,000 पूँजी के साथ व्यापर प्रारम्भ किया साझेदारी सलेख के अनुसार बी ₹ 500 प्रतिमाह वेतन पाने का अधिकारी है, तथा पूँजी पर 6% प्रति वर्ष से ब्याज लगाया जाता है। बचे हुए लाभों को साझेदारों के बीच 5 : 3 के अनुपात में वितरित किया जाता है। 2008 के दौरान B को वेतन तथा पूँजी पर ब्याज लगाने के बाद फर्म ₹ 25,000 राशि का लाभ अर्जित करती है। वर्ष के दौरान घरेलू उद्देश्य के लिए A ₹ 8,000 का आहरण तथा B ₹ 10,000 का आहरण करता है

साझेदारों के पूँजी खाते को निम्न परिवर्तनशील पूँजी विधि से दर्शाइये।

समाधान (Solution)

A's Capital Account

Dr.							Cr.
2008			₹	2008			₹
Dec. 31	To	Cash (Drawings)	8,000	Jan.	By	Cash	30,000
	To	Balance c/d	33,800	Dec. 31	By	Profit and Loss A/c (Interest)	1,800
					By	Profit and Loss A/c (5/8 Profit)	10,000
			41,800				41,800
				2009			
				Jan. 1	By	Balance b/d	33,800

B's Capital Account

2008			₹	2008			₹
	To	Cash (Drawings)	10,000	Jan. 1	By	Cash	20,000
	To	Balance c/d	23,200	Dec. 31	By	Profit and Loss A/c Salary	6,000
						Interest	1,200
					By	Profit and Loss A/c (3/8 Profit)	6,000
			33,200				33,200
				2009			
				Jan. 1	By	Balance b/d	23,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

1 जनवरी, 2008 को राम और रहीम ₹ 50,000 तथ ₹ 30,000 की पूँजी से व्यापार आरम्भ करते हैं रहीम ₹ 400 प्रतिमाह के वेतन का अधिकारी है। पूँजी तथा आहरण पर ब्याज 6% प्रति वर्ष लगाया जाता है। उपरोक्त लिखे हुए समायोजनों के मश्चात लाभों को समान बँटा जाता है। वर्ष के दौरान राम ₹ 8,000 आहरण करता है और रहीम ₹ 10,000 आहरण करता है। साझेदारी संलेख की शर्तों को लगाने के पूर्व वर्ष के लिए लाभ ₹ 30,000 आया। पूँजियों को स्थिर माना जायेगा, साझेदारों के पूँजी खाते तथा चालू खाते को तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

Ram's Capital Account

2008		₹	2008			₹
Dec. 31	To Balance c/d	50,000	Jan. 1	By	Cash	50,000
			2009			
			Jan. 1	By	Balance b/d	50,000

Rahim's Capital Account

2008		₹	2008			₹
Dec. 31.	To Balance c/d	30,000	Jan. 1	By	Cash	30,000
			2009			
			Jan. 1	By	Balance b/d	30,000

Ram's Current Account

2008			₹	2008			₹
	To	Cash (Drawings)	8,000	Dec. 31	By	Profit and Loss A/c	
Dec. 31	To	Profit and Loss A/c				Interest	3,000
		Interest on Drawings	240		By	Profit and Loss A/c	
	To	Balance c/d	5,230			1/2 Profit	10,470
			13,470				13,470
				2009			
				Jan. 1	By	Balacne b/d	5,230

Rahim's Current Account

2008			₹	2008			₹
	To	Cash (Drawings)	10,000	Dec. 31	By	Profit and Loss A/c	
Dec. 31	To	Profit and Loss A/c				Salary	4,800
		Interest on drawings	300			Interest	1,800
To Balacne c/d			6,770		By	Profit and Loss	
						A/c Profit	10,470
			17,070				17,070
				2009			
				Jan. 1	By	Balance b/d	6,770

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. लाभ-हानि नियोजन खाता

(PROFIT AND LOSS APPROPRIATION ACCOUNT)

- साझेदारी फर्म द्वारा लाभ नियोजन खाता साझेदारी संलेख के अनुसार शुद्ध लाभ वितरण हेतु बनाया जाता है।
- आहरण पर ब्याज शुद्ध लाभ में जोड़ दिया जाता है और उसके पश्चात ऐसे कुल लाभ से साझेदारों की पूँजी पर ब्याज, वेतन, कमीशन, किराया आदि अनुबंध के 'अनुसार देय होता है।
- लाभ की शेष राशि को साझेदारों के मध्य लाभ वितरण के अनुपात में वितरित किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) **3**

X, Y और Z साझेदारी में हैं। Y और Z साझेदारी में उनके द्वारा दी गयी विशिष्ट सेवा के लिए शुद्ध लाभ पर 15% कमीशन को समान बाँटने के अधिकारी हैं। फिर भी, सभी साझेदार ₹ 5,00,000 प्रत्येक की स्थायी पूँजी पर 8% ब्याज के अधिकारी हैं। मि. X के भवन में व्यवसाय किया जाता है जो कि उपरोक्त के अतिरिक्त अपने चालू खाते के विरुद्ध समायोजित करके ₹ 2,000 के एक माह के किराए का अधिकारी है। वे लाभों एवं हानियों को समान बाँटते हैं। वर्ष 2008 के दौरान शुद्ध लाभ ₹ 7,00,000 था।

वर्ष के दौरान उन्होंने लाभ विभाजन अनुपात को बदलने का विचार किया क्योंकि X व्यावसायिक कार्यों के लिए उपस्थित नहीं हो सका। अन्त में उन्होंने 12% प्रतिवर्ष से पूँजी पर ब्याज बढ़ाने के लिए निर्णय लिया, जो 01.10.2008 से प्रभावी है और उसी तिथि से लाभ वितरण अनुपात को 1 : 2 : 2 में बदलने हेतु प्रभावी है। उसके बावजूद X और Y को कोई कमीशन प्राप्त नहीं होगा। लाभ एवं हानि नियोजन खाता तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

Profit and Loss Appropriation Account

		₹	₹			₹
To	Commission			By	Net Profit	7,00,000
	Y	39,375				
	Z	39,375	78,750			
To	Interest					
	X	45,000				
	Y	45,000				
	Z	45,000	1,35,000			
To	Rent-X		24,000			
To	Current A/cs					
	X	1,37,550				
	Y	1,62,350				
	z	1,62,350	4,62,250			
			7,00,000			7,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Working Notes:

(1)	Interest	Jan-Sept. 2008 @ 8%	Oct-Dec. 2008 @ 12%	Total
		₹	₹	₹
	X	30,000	15,000	45,000
	Y	30,000	15,000	45,000
	Z	30,000	15,000	45,000
		90,000	45,000	1,35,000

(2) Commission

¾ of (15% on ₹ 7,00,000) = 78,750

(3)	Share of Profit	Jan-Sept. 2008	Oct.-Dec. 2008	Total
		₹	₹	₹
	Net Profit	5,25,000	1,75,000	7,00,000
	Less: Commission	78,750	–	78,750
	Less: Interest	90,000	45,000	1,35,000
	Less: Rent	18,000	6,000	24,000
	Profit available for distribution in the profit sharing ratio	3,38,250	1,24,000	4,62,250
	X	1,12,750	24,800	1,37,550
	Y	1,12,750	49,600	1,62,350
	Z	1,12,750	49,600	1,62,350

4. साझेदारी खातों में ख्याति का उपचार

(TREATMENT OF GOODWILL IN PARTNERSHIP ACCOUNTS)

ख्याति, भविष्य में लाभों के सामान्य दर के अतिरिक्त संभावित लाभों के संबंध में फर्म की प्रतिष्ठा का मूल्य होता है। उपयुक्त का प्रभाव यह है कि उस स्थान पर उसी तरह की फर्म द्वारा अर्जित लाभों की सामान्य दर हमेशा बनी रहती है। फर्म के द्वारा कमाया गया अतिरिक्त लाभ स्थिति के वर्चस्व, बेहतर ग्राहक सेवा, अद्वितीय पेटेन्ट अधिकार, साझेदारों का व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा अन्य इसी तरह के कारणों से उत्पन्न होती है।

किसी फर्म में ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता निम्नांकित परिस्थितियों में होती है—

(a) जब साझेदारों के मध्य लाभ वितरण अनुपात परिवर्तित होता है।

(b) जब नया साझेदार सम्मिलित होता है।

(c) जब साझेदार की निवृत्ति अथवा मृत्यु होती है।

(d) जब व्यवसाय का समापन या विक्रय होता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

ख्याति मूल्यांकन की चार विधियाँ हैं—

(1) औसत लाभ आधार

(2) आधिक्य लाभ आधार

(3) वार्षिक आधार

(4) पूँजीकरण आधार

4.1. ख्याति मूल्यांकन की विधियाँ (Methods for Goodwill Valuation)

(1) **औसत लाभ आधार**—इस स्थिति में, पिछले कुछ वर्षों के लाभों का औसत निकाला जाता है तथा भविष्य के किसी संभावित परिवर्तन के लिए समायोजित किया जाता है। परिस्थितियों के अनुसार, पिछले लाभों का औसत निकालने हेतु या तो साधारण औसत अथवा भारित औसत लगाया जा सकता है। यदि लाभों में स्पष्ट वृद्धिगत या कमी प्रवृत्ति दिखाई देती है तो यह बेहतर है कि पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में चालू वर्षों के लाभों को ज्यादा महत्व दिया जाए। किन्तु यदि लाभों की कोई स्पष्ट प्रवृत्ति न हो तो साधारण औसत निकालना बेहतर होगा। हम मान लेते हैं कि पिछले पाँच वर्षो में एक साझेदारी फर्म का लाभ ₹ 30,000 , ₹ 40,000, ₹ 50,000, ₹ 60,000 तथा ₹ 70,000 है। इस मामले में एक स्पष्ट वृद्धिगत प्रवृत्ति दिखाई देती है अतएव औसत लाभ उपयुक्त भार देकर निम्नांकित तरीके से निकाला जा सकता है।

Year	Profit	Weight	Weighted Profit
	₹		₹
1	30,000	1	30,000
2	40,000	2	80,000
3	50,000	3	1,50,000
4	60,000	4	2,40,000
5	70,000	5	3,50,000
		15	8,50,000

So Weighted Avrage Profit $= \frac{₹\ 8,50,000}{15} = ₹\ 56,667$

अतः भारित औसत लाभ $= \frac{8,50,000}{15} = ₹\ 56,667$ यदि ख्याति का मूल्यांकन तीन वर्षों के क्रय लाभ पर किया जाए, तो इस मामले में ख्याति का मूल्य ₹ 56,667 × 13 = ₹ 17,00,000 होगा। यद्यपि यदि पिछली लाभ राशियों से ऐसे कोई प्रवृत्ति दिखाई न दे तो (साधारण, औसत, लाभ की विधि से ख्याति का मूल्यांकन साधारण औसत लाभ की विधि से किया जाना चाहिए। हम मान लेते हैं कि एक साझेदारी फर्म के पिछले पाँच वर्षों के लाभ ₹ 30,000, 25,000, 20,000, 30,000 तथा ₹ 28,000 हैं। इस दशा में लाभों की कोई स्पष्ट घटती या बढ़ती प्रवृत्ति नहीं है। इसलिए औसत लाभ (साधारण औसत विधि से) ₹ 26,600 बनाता है। यदि ख्याति का मूल्यांकन 3 वर्षों के लाभ क्रम के आधार पर लगाने से ख्याति का मूल्य ₹ 79,800 होगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) **आधिक्य लाभ आधार**–औसत लाभ आधार विधि में ख्याति के मूल्यांकन हेतु औसत लाभ को कुछ वर्षों से गुणा किया जाता है। निहितार्थ यह है कि ऐसा लाभ कई वर्षों तक अनुरक्षित किया जा सकेगा तथा लाभ वितरण अनुपात के रूप में लाभ प्राप्त करने वाले साझेदारों द्वारा लाभ के ऐसे भाग हेतु Sacrificing साझेदार के प्रति अंशदान करना चाहिए। दूसरी ओर अति लाभ का अर्थ है, आधिक्य लाभ, जो इन्हीं परिस्थितियों में इसी प्रकार की फर्म द्वारा साधारणतः कमाए हुए सामान्य लाभ के ऊपर प्राप्त कर सकती है। इस विधि के अनुसार साझेदार जो लाभ वितरण अनुपात के अर्थों में लाभ प्राप्त करता है, वह केवल आधिक्य लाभ के लिए अंशदान करेगा क्योंकि वह किसी भी साझेदारी व्यवसाय में प्रवेश द्वारा सामान्य लाभ अर्जित कर सकता है। अति लाभ विधि के अंतर्गत एक साझेदारी फर्म कितना अधिक लाभ अर्जित कर सकती है इसका निर्णय पहले लिया जाना चाहिए। इस विधि में अपनाए जाने वाले चरण निम्नांकित हैं—

(a) साझेदारी फर्म द्वारा निवेशित पूँजी को पहचानना।

(b) पिछले कुछ वर्षों की राशियों पर आधारित साझेदारी फर्म द्वारा अर्जित औसत लाभ को पहचानना।

(c) उस स्थान पर संचालित ऐसी ही फर्मों हेतु प्रत्याय की सामान्य दर निर्धारित करना।

(d) सामान्य लाभ की गणना हेतु निवेशित पूंजी पर प्रत्याय की सामान्य दर लागू करना।

(e) फर्म के औसत लाभ से सामान्य लाभ को घटाना। यदि फर्म का औसत लाभ सामान्य लाभ से अधिक है, वहाँ अति लाभ एवं ख्याति मौजूद है।

हम मान लेते हैं कि साझेदारी फर्म द्वारा कुल निवेशित पूँजी ₹ 1,00,000 थी तथा उसका औसत लाभ ₹ 25,000 था, इन्हीं परिस्थितियों में संचालित अन्य फर्मों में सामान्य प्रत्याय की दर 22% है अतः सामान्य लाभ ₹ 20,000 तथा औसत लाभ ₹ 25,000 हुआ। साझेदारी फर्म ₹ 3,000 अति लाभ अर्जित करती है।

सामान्य तौर पर ख्याति का मूल्यांकन अति लाभ की राशि से विभिन्न वर्षों से गुणा करके किया जाता है जो अति लाभ की भविष्य में अनुरक्षण की संम्भावनाओं पर निर्भर करता है। ऐसा अपेक्षित होने पर कि अति लाभ आगामी पाँच वर्षों तक अनुरक्षित किया जा सकेगा तो ख्याति का मूल्य ₹ 3,000 × 5 = ₹ 15,000 लिया जा सकता है।

(3) **वार्षिकी विधि**–अति लाभ विधि के अंतर्गत मुद्रा के समय मूल्य पर विचार नहीं किया जाता यद्यपि यह माना जाता है कि अति लाभ आगामी पाँच वर्षो में अर्जित किया जाएगा फिर भी समय के अंतर के लिए मुद्रा के मूल्य में कोई अवमूल्यन नहीं किया जाता। वास्तव में जब मुद्रा भिन्न–भिन्न बिंदुओं पर प्राप्त की जाए तो ब्याज दर के आधार पर उसका मूल्य भिन्न होना चाहिए। यदि ब्याज दर को 15% उपयुक्त माना जाए, तो भिन्न आगामी वर्षों में अर्जित किए जाने वाले अति लाभ का मितिकाट मूल्य अग्र प्रकार होगा—

© The Institute of Chartered Accountants of India

Year	Super Profit	Discount Factor @ 15%	Discounted value of Super Profit
	₹	₹	₹
1	3,000	.8696	2,608.80
2	3,000	.7561	2,268.30
3	3,000	.6575	1,972.50
4	3,000	.5718	1,715.40
5	3,000	.4972	1,491.60
			10,056.60

अतः वार्षिक विधि में अतिलाभ का मितिकाट मूल्य ₹ 10,056.60 हो जाएगा न कि ₹ 15,000 जैसा कि अति लाभ विधि में होता है। वार्षिक शब्द को अति लाभ विधि में होता है। वार्षिकी शब्द को अति लाभ के समान वार्षिक राशि हेतु प्रयोग किया जाता है। अतः मितिकाट हेतु वार्षिक तालिका का संदर्भ लेना सम्भव है। वार्षिक तालिका के अनुसार 5 वर्षों तक प्रत्येक वर्ष के अंत में प्राप्त ₹ 1, 15% वार्षिक ब्याज दर पर 3.3522 होता है। अतः वार्षिक विधि में ख्याति का मूल्य ₹ 3,000 × 3.3522 = ₹ 10,056.60 होता है।

(4) **पूँजीकरण विधि**—इसके अंतर्गत संपूर्ण व्यवसाय के मूल्य की गणना सामान्य दर लागू करके की जाती है। यदि ऐसा मूल्य (सामान्य दर लागू करके निकाला गया) व्यवसाय की नियोजित पूँजी से अधिक है तो अंतर ख्याति होती है। इस विधि मे अपनाए जाने वाले चरण निम्न हैं—

(a) प्रत्याय की सामान्य दर का निर्धारण।

(b) साझेदारी फर्म का औसत लाभ ज्ञात करना, जिसके लिए ख्याति का निर्धारण करना है।

(c) साझेदारी फर्म की नियोजित पूँजी का निर्धारण जिसके लिए ख्याति का निर्धारण करना है।

(d) औसत लाभ को सामान्य प्रत्याय दर से विभाजित करके व्यवसाय का सामान्य मूल्य ज्ञात करना

(e) व्यवसाय के सामान्य मूल्य से औसत नियोजित पूँजी को घटाकर ख्याति का मूल्य निर्धारित करना।

हम मान लेते हैं कि साझेदारी फर्म की नियोजित पूँजी ₹ 1,00,000 है, उसका औसत लाभ ₹ 20,000 तथा सामान्य प्रत्याय दर 15% है।

व्यवसाय का सामान्य मूल्य = (20,000×100)/ 15 = ₹1,33,333

ख्याति का मूल्य = 1,33,333–1,00,000= ₹ 33,333

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **4**

ली और लेवसन बराबर के साझेदार हैं। वे विक्रय को ¼ भाग के लिए साझेदार बनाने में सहमत हैं। इसके लिए ख्याति का मूल्य निकालने का निर्णय लिया गया।

M/s ली और लेवसन के 2005-2008 के अर्जित लाभ निम्न प्रकार है।

Year	Profit
	₹
2005	1,20,000
2006	1,25,000
2007	1,30,000
2008	1,50,000

M/s ली और लेवसन द्वारा 31-12-2008 की विनियोजित पूंजी ₹ 5,00,000 है। सामान्य लाभ की दर 20% है।

निम्नलिखित विधियों से ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

समाधान (Solution)

Average Profit:

Year	Profit (₹)	Weight	Weighted Profit (₹)
2005	1,20,000	1	1,20,000
2006	1,25,000	2	2,50,000
2007	1,30,000	3	3,90,000
2008	1,50,000	4	6,00,000
		10	13,60,000

Weighted Average Profit = ₹ 1,36,000

विधि (1)— **औसत लाभ आधार**—

मान्यता—ख्याति को 3 साल के क्रय पर मूल्यांकित करना है।

ख्याति का मूल्यः ₹ 1,36,000 × 3 = ₹ 4,08,000

विधि (2)— **अधिलाभ आधार**—

	₹
औसत लाभ	1,36,000
सामान्य लाभ (5,00,000 पर 20%)	1,00,000
	36,000

मान्यता—ख्याति को 3 साल के क्रय पर मूल्यांकित करना है।

ख्याति का मूल्य =₹ 36,000 × 3 = ₹ 1,08,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

विधि (3)—वार्षिकी आधार—

मान्यता—

(अ) ब्याज की दर सामान्य लाभ की दर के बराबर है यानि 20% वार्षिक

(ब) ख्याति को 3 साल के क्रय पर मूल्यांकित करना है

ख्याति का मूल्य = ₹ 36,000 × 2.1065 = 75,834

विधि (4)—पूँजीकरण आधार

विनियोजित पूँजी का सामान्य मूल्यः

1,36,000 × 100/20	= ₹ 6,80,000
मेसर्स ली एंड लेवसन में विनियोजित पूँजी	= ₹ 5,00,000
ख्याति	= ₹ 1,80,000

4.2. लेखांकन उपचार (Accounting Treatment)

AS–10 'स्थायी संपत्तियों हेतु लेखांकन' का अनुच्छेद 16 व्यक्त करता है कि, पुस्तकों में ख्याति सिर्फ तब ही अभिलेखित हो सकती है जब इसके लिए मुद्रा या मौद्रिक मूल्य में कुछ प्रतिफल चुकाया गया है।

AS-26 'अमूर्त सम्पत्तियाँ' का अनुच्छेद 35 भी व्यक्त करता है कि, "आंतरिक उत्पन्न ख्याति" को एक संपत्ति के रूप में मान्यता नहीं देनी चाहिए। आंतरिक उत्पन्न (स्वयं अर्जित) ख्याति एक संपत्ति के रूप में मान्यता नहीं पाती है क्योंकि, यहाँ उपक्रम द्वारा नियंत्रित कोई पहचान योग्य संसधान नहीं है जिसे लागत पर विश्वसनीयता से माप सके।

इसलिए, सिर्फ क्रय की गयी ख्याति को ही पुस्तकों में अभिलेखित किया जाना चाहिए।

एक साझेदार के प्रवेश/अवकाश/मृत्यु की दशा में या साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन की दशा में, फर्म की पुस्तकों में ख्याति उत्पन्न नहीं की जा सकती क्योंकि इसके लिए मुद्रा या मौद्रिक मूल्य में कोई प्रतिफल नहीं चुकाया गया है। प्रवेश के मसय पर यदि कोई साझेदार उसके पूँजी अंशदान के अतरिक्त और अधिक कोई प्रीमियम (प्रब्याजि) लाता है, तो यह प्रीमियम (प्रब्याजि) अन्य मौजूद साझेदारों में वितरित किया जाना चाहिए।

कभी–कभी, फर्म के अंशदान में किसी परिवर्तन के समय पर (प्रवेश / अवकाश / लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन के माध्यम द्वारा) फर्म की ख्याति को मूल्यांकित किया जाता है। उस स्थिति में ख्याति का मूल्य पुस्तकों में नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि यह अंतर्निहित ख्याति है। बल्कि ख्याति के मूल्य को साझेदारों के पूँजी खातों के माध्यम से समायोजित किया जाना चाहिए।

एक साझेदार के प्रवेश की दशा में ख्याति का लेखांकन उपचार

उदाहरण (Illustration) **5**

ए और बी बराबर के साझेदार हैं। वे सी को तीसरे साझेदार के रूप में लेना चाहते हैं तथा इस उद्देश्य हेतु ख्याति का मूल्य ₹ 1,20,000. था। साझेदारों के पूँजी खातों के माध्यम से ख्याति के मूल्य के समायोजन हेतु पंजी प्रविष्टियाँ होंगी :

C's Capital A/c	Dr.	₹ 40,000	
To A's Capital A/c			₹ 20,000
To B's Capital A/c			₹ 20,000
(Adjustment for goodwill)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

The net effect in partner's capital accounts is shown on the basis of profit sacrificing ratio :

A	$= \frac{1}{6} \times$ ₹ 1,20,000 =	₹ 20,000 (Cr.)
B	$= \frac{1}{6} \times$ ₹ 1,20,00 =	₹ 20,000 (Cr.)
C	$= \frac{2}{6} \times$ ₹ 1,20,000 =	₹ 40,000 (Dr.)

उदाहरण (Illustration) **6**

अ और ब बराबर साझेदार हैं। वे 'सी' को $\frac{1}{6}$ भाग का साझेदार बनाना चाहते हैं जो ख्याति के ₹ 60,000 लाया, नया लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 होगा, लाभ-त्याग अनुपात की गणना निम्न प्रकार की गई।

Partners	Old share	–	New share	=	Share sacrificed	Share gained
A	$\frac{1}{2}$	–	$\frac{1}{2}$	=	0	
B	$\frac{1}{2}$	–	$\frac{2}{6}$	=	$\frac{1}{6}$	
C			$\frac{1}{6}$			$\frac{1}{6}$

इसलिए ख्याति को B के पूँजी खाते में जमा करना चाहिए।

Cash A/c	Dr.	₹ 60,000	
To B's Capital A/c			₹ 60,000

(Goodwill brought in by C credited to B's Capital A/c in the profit sacrificing ratio)

लाभ–हानि अनुपात बदलने की दशा में ख्याति का लेखांकन उपचार (Accounting treatment of goodwill in case of change in the profit sharing ratio)

लाभ–बटवारा अनुपात में परिर्वतन होने की दशा में, ख्याति मूल्य ज्ञात करना चाहिए तथा प्राथमिक तौर पर साझेदारों के पूँजी खातों के माध्यम से लाभ-त्याग अनुपात के आधार पर समायोजित होना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) **7**

अ, ब और स बराबर के साझेदार हैं। वे लाभ बटवारा अनुपात को 4 : 3 : 2 में बदलना चाहते हैं। ख्याति का ₹ 30,000 पर मूल्यांकन किया गया।

आवश्यक लेखा प्रविष्टि बनाइए ।

इस दशा में लाभ–बटवारा अनुपात में परिवर्तन के कारण।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Journal Entries

		₹	₹
A's Capital	Dr.	10,000	
To C's Capital A/c			10,000
(Being adjusting entry passed for change in profit ratio)			

In this case, due to change in profit sharing ratio

A's gain is = 4/9 less 1/3= 1/9

B's gain is = 1/3 less 1/3= 0

C's loss is = 1/3 less 2/9= 1/9

इसलिए, ख्याति के हिस्से तक की क्षतिपूर्ति A द्वारा C को दी जानी चाहिए।

₹ 90,000×1/9 = ₹ 10,000

उदाहरण (Illustration) **8**

अ, ब और स साझेदार हैं तथा लाभ–हानि 4 : 3 : 3 में बाँटते हैं। वे लाभ बँटवारा अनुपात को 7 : 7 : 6 में बदलने का निश्चय करते हैं। फर्म की ख्याति ₹ 20,000 पर मूल्यांकित की गई। साझेदारों की प्राप्ति/त्याग ज्ञात कर आवश्यक लेखा प्रविष्टि कीजिए।

समाधान (Solution)

Partners	*New share*		*Old share*	*Difference*	
				Sacrifice	*Gain*
A	$\frac{7}{20}$	–	$\frac{4}{10}$	$\frac{1}{20}$	
B	$\frac{7}{20}$	–	$\frac{3}{10}$		$\frac{1}{20}$
C	$\frac{6}{20}$	–	$\frac{3}{10}$	–	–

इस प्रकार, ब की बढ़त (gain) $\frac{1}{20}$ हिस्से के लिए, अ की कमी $\frac{1}{20}$ हिस्से के लिए तथा सी की कोई बढत या कमी नहीं है।

उदाहरण (Illustration) **9**

A, B, C तथा D लाभ तथा हानि के समान विभाजन की साझेदारी में हैं। वे लाभ–विभाजन अनुपात को 3 : 3 : 2 : 2 में परिवर्तित करने के लिए परस्पर सहमत हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

A द्वारा बढ़त = $\frac{3}{10}-\frac{1}{4}=\frac{1}{20}$

B द्वारा बढ़त = $\frac{3}{10}-\frac{1}{4}=\frac{1}{20}$

C द्वारा हानि = $\frac{1}{4}-\frac{2}{20}=\frac{1}{20}$

D द्वारा हानि = $\frac{1}{4}-\frac{2}{10}=\frac{1}{20}$

इसीलिए, यदि ख्याति का मूल्य ₹ 20,000 है, A तथा B को प्रत्येक द्वारा ₹ 1,000 (यानि ₹ 20,000×) क्रमशः C तथा D को उनके त्याग हेतु क्षतिपूर्ति के रूप में चुकाना चाहिए।

समाधान (Solution)

जर्नल प्रविष्टि

		₹	₹
A's Capital Account	Dr.	1,000	
B's Capital Account	Dr.	1,000	
To C's Capital Account			1,000
To D's Capital Account			1,000

ख्याति के अभिलेखन का प्रश्न सिर्फ तभी उत्पन्न होगा, जब यहाँ साझेदारी फर्म का एकीकरण, परिवर्तन या विक्री है। यदि एक मौजूदा साझेदारी फर्म अन्य फर्म को अधिग्रहित करती है, और यदि क्रय प्रतिफल अधिग्रहित शुद्ध सम्पति से अधिक है, तो अन्तर हस्तान्तरित फर्म की पुस्तकों में ख्याति के रूप में प्रदर्शित होगा।

एक साझेदार के अवकाश या मृत्यु की दशा में ख्याति का लेखांकन उपचार (Accounting treatment of goodwill in case of retirement or death of a partner)—एक साझेदार के अवकाश की दशा में, सतत् साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात के रूप में बढ़त होगी। अतः वे अवकाशित साझेदार को फर्म मे उसके हिस्से की ख्याति हेतु बढ़त अनुपात में भुगतान करेंगे।

इसी समान, साझेदार की मृत्यु की दशा में, मृत साझेदार के उत्तराधिकारियों को देय ख्याति का हिस्सा सतत् साझेदारों को वहन करना चाहिए। इस उद्देश्य हेतु, मृत्यु या अवकाश की तिथि पर ख्याति का मूल्यांकन किया जायेगा तथा साझेदारों के पूँजी खाते इसके माध्यम से समायोजित होंगे।

A, B और C समान साझेदार हैं। C अवकाश निवृति चाहता है, इसके लिए ख्याति का मूल्य ₹ 90,000 निर्धारित किया गया। आवश्यक पंजी प्रविष्टि होंगी—

A's Capital A/c	Dr.	₹ 15,000	
B's Capital A/c	Dr.	₹ 15,000	
To C's Capital A/c			₹ 30,000
(C's share of goodwill adjusted to existing partners' capital accounts in profit gaining ratio)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustraton) **10**

Wise, Clever और Dull क्रमशः 4 : 3 : 3 के अनुपात में साझेकारी में शामिल हैं। फर्म के खाते प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बनाते साझेदारी अन्य बातों के साथ प्रस्तुत करता है कि साझेदार की मृत्यु पर ख्याति का मूल्यांकन 3 साल के क्रय के आधार पर मृत्यु की तिथि तक के 3 साल के औसत लाभ पर 8% पूँजी पर ब्याज और साझेदारों का उचित पारिश्रमिक घटाने के बाद यह मानना है कि लाभ पूरे वर्ष के एक रूप से अर्जित किया गया है।

30 जून, 2008, Wise की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु पर ख्याति का समायोजन पूँजी खाते से करना है। ख्याति की कोई भी राशि बिना चिट्ठे में दिखाए गये। वे ख्याति के मूल्यांकन के उद्देश्य हेतु वे सहमत थे कि प्रत्येक साझेदार द्वारा किए गये कार्य के लिए ₹15,000 प्रति वर्ष उचित पारिश्रमिक होगा, तथा ₹ 1,56,000 विनियोजित पूँजी रहेगी। Clever तथा Dull साझेदारी निरंतर रखेगे, Wise की मृत्यु के पश्चात लाभ तथा हानि बराबर बांटा जायेगा।

पूर्व वर्षों के लाभों की राशियाँ विनियोजित पूँजी पर ब्याज प्रभावित करने से पूर्त निम्नलिखित हैं :

	₹
2005	67,200
2006	75,600
2007	72,000
2008	62,400

आपसे अनुरोध है कि ख्याति के मूल्य की गणना करें तथा इन सभी समायोजनों को फर्म की पुस्तकों में प्रस्तुत करें।

समाधान (Solution)

ख्याति के मूल्य की गणना (Computation of the value of goodwill)—

(i) तीन वर्षों का औसत लाभ, 30 जून को, मृत्यु के पहले—

Year ending 30th June, 2006 :	₹	₹
1/2 of 2005 Profits	33,600	
1/2 of 2006 Profits	37,800	71,400
Year ending 30th June, 2007 :		
1/2 of 2006	37,800	
1/2 of 2007 Profits	36,000	73,800
Year ending 30th June, 2008 :		
1/2 of 2007	36,000	
1/2 of 2008 Profits	31,200	67,200
Total	2,12,400	
Average		70,800

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii)	**अधिलाभ**		₹
	Average profits earned		70,800
	Less : Partner's remuneration	45,000	
	Less : 8% on capital employed	12,480	57,480
			13,320
	Super Profits		
(iii)	ख्याति तीन वर्षों का क्रय मूल्य (13,320 × 3)		39,960

समायोजन प्रविष्टि ख्याति के लिएः–

Journal

		Dr.	*Cr.*
		₹	₹
Clever's Capital Account	Dr.	7,992	
Dull's Capital Account	Dr.	7,992	
To Wise's Capital Account			15,984
(Being goodwill valued @ ₹ 39,960 adjusted in the capital accounts of partners on the death of Mr. Wise)			

उदाहरण (Illustration) 11

वासुदेवन, सुंदरराजन और अग्रवाल एक साझेदारी में जिनका लाभ और हानि अनुपात क्रमशः 2: 5: 3 है। 31-12-2008 की साझेदारी फर्म का चिट्ठा निम्नांकित है।

Balance Sheet of M/s Vasudevan, Sunderarajan & Agrawal

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital A/cs		Sundry fixed assets	5,00,000
Vasudevan	85,000	Stock	1,00,000
Sunderarajan	3,15,000	Debtors	50,000
Agrawal	2,25,000	Bank	5,000
Sundry Creditros	30,000		
	6,55,000		6,55,000

साझेदारी द्वारा 2008 में ₹ 2,00,000 कमाये गये। इस साल साझेदारों द्वारा आहरण ₹ 1,50,000 किया गया। सामान्य वापसी दर (Rate of Return) 30% पाँच वर्षो के क्रय आधार पर अधिलाभ की गणना कीजिए। अधिलाभ की गणना के लिए औसत पूँजी का उपयोग कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Valuation of Goodwill:	₹
(1) *Average Capital Employed*	
Total Assets *less* Sundry creditors as on 31.12.2008	6,25,000
Add : 1/2 of the amount withdrawn by partners	75,000
	7,00,000
Less : 1/2 of the profit earned in 2008	1,00,000
	6,00,000
(2) *Super Profit :*	
Profit of M/s Vasudevan, Sunderarajan & Agrawal	2,00,000
Normal profit @ 30% on ₹ 6,00,000	1,80,000
Super Profit	20,000
(3) *Value of Goodwill*	
5 Years' Purchase of Super Profit (₹ 20,000 × 5) = ₹ 1,00,000	

5. लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन
(CHANGE IN PROFIT SHARING RATIO)

कभी–कभी फर्म के साझेदारों की संख्या में परिवर्तन किए बिना यानि किसी साझेदार का प्रवेश, मृत्यु, अवकाश ग्रहण किए बिना उसके लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन किया जाता है। जब लेखा परिवर्तन प्रभावी होता है तो एक या इससे अधिक साझेदार संस्था के व्यवसाय में दूसरे साझेदारों के हित ग्रहण (क्रय) करते हैं। इस प्रकार एक या अधिक साझेदारों द्वारा किया गया कुल त्याग दूसरे साझेदार या साझेदारों द्वारा प्राप्त कुल बढ़ते के बराबर होगा। इस प्रकार किए जाने वाले समायोजन जैसे कि लाभ–हानि अनुपात, सम्पत्ति और दायित्व का पुनर्मूल्यांकन, ख्याति का उपचार, संचय या साझेदार के पूँजी खाते, वैसे ही होंगे जैसे कि साझेदारों के अवकाश गुहण, मृत्यु, प्रवेश के समय किये जाते हैं।

इसमें केवल एक अपवाद यह होता है कि इसमें न तो कोई साझेदार आता है न कोई साझेदार जाता है। जब इस तरह के व्यवहारों को चिट्ठे में नहीं दिखाना हो तो केवल एक प्रविष्टि साझेदारों के पूँजी खाते को समायोजित करके की जाती है जिसमें साझेदारों के लाभ और त्याग अनुपात के आधार पर होती है।

उदाहरण (Illustration) **12**

साझेदार P. Q और R जिनका लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 है फर्म का ख्याति मूल्य ₹ 12,000 है। उन्होंने अपने लाभ-हानि अनुपात को 2 : 2 : 1 करने का निर्णय किया। जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

फर्म की बही में,

Journal

Date	Particulars		*Dr.* ₹	*Cr.* ₹
	Q's Capital A/c (Refer Working Note)	Dr.	800	
	R's Capital A/c	Dr.	400	
	To P's Capital A/c			1,200
	(Being the adjustment for goodwill through the Partners' Capital Accounts)			

कार्यप्रणाली नोट—

त्याग और बढ़त की गणना,

	P	Q	R
Old ratio (3 : 2 : 1)	$\frac{3}{6}$	$\frac{2}{6}$	$\frac{1}{6}$
New ratio (2 : 2 : 1)	$\frac{2}{5}$	$\frac{2}{5}$	$\frac{1}{5}$
	(Sacrifice) $\frac{1}{10}$.	(Gain) $\frac{2}{30}$	(Gain) $\frac{1}{30}$
	12,000 × 1/10	12,000 × 2/30	12,000 × 1/30

उदाहरण (Illustration) **13**

दिया गया चिट्ठा अनिल और विमल का है। ये दोनों 31-12-2008 को बराबर के साझेदार थे।

Liabilities		₹	Assets	₹
Capital Accounts :	Anil	12,000	Sundry Assets	28,000
	Bimal	6,000		
Reserves		6,000		
Creditors		4,000		
		28,000		28,000

1-1-2009 को साझेदारों ने अपना लाभ–हानि अनुपात 2 : 1 करने का निश्चय किया। फर्म की ख्याति जो चिट्ठे में दर्शायी नहीं गयी उसका मूल्य ₹ 6,000 है।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए एवं आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

In the books of the firm

Journal Entry

Particulars		Dr. ₹	Cr. ₹
Reserves A/c	Dr.	6,000	
To Anil's Capital A/c			3,000
To Bimal's Capital A/c			3,000
(Being reserve transferred to the Partners' Capital Accounts in the old ratio before change in the constitution)			
Anil's Capital A/c (Refer W.N.)		1,000	
To Bimal's Capital A/c			1,000
(Being the adjustment for goodwill made through the Partners' Capital Accounts)			

Balance Sheet of Anil and Bimal as at 1.1.2009

Liabilities	₹	Assets	₹
Capital Accounts:		Sundry Assets	28,000
Anil : ₹ (12,000+3,000 – 1,000)	14,000		
Bimal : ₹ (6,000+3,000+1,000)	10,000		
Creditors	4,000		
	28,000		28,000

कार्यप्रणाली नोट—

त्याग / बढ़त की गणना (Calculation of share of sacrifice/gain)—

	Anil	Bimal
Old ratio (1 : 1)	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{2}$
New ratio (2 : 1)	$\frac{2}{3}$	$\frac{1}{3}$
	(Gain) $\frac{1}{6}$	(Sacrifice) $\frac{1}{6}$
	6,000 × 1/6	6,000 × 1/6

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **14**

साझेदार Any और Many जिनका लाभ-हानि अनुपात $\frac{3}{4}$ और $\frac{1}{4}$ है और उनकी पूँजी क्रमशः 90,000 और 30,000 है। Any और Many ने निर्णय लिया कि उनका लाभ-हानि अनुपात, 1-04-2008 से $\frac{5}{8}$ और $\frac{3}{8}$ होगा। संलेख में यह लिखा हुआ है कि ख्याति का मूल्यांकन 2 वर्षों के आधार पर तीन वर्षों के लिए किया जायेगा और उनकी पूँजी को उनके लाभ–हानि अनुपात में बाँटा जायेगा। 31 मार्च, 2006 वर्ष के अंत में लाभ ₹ 42,000, 31-03-2007 में ₹ 39,000 व 31-03-2008 में ₹ 45,000 था। आवश्यक जर्नल प्रविष्ठि कीजिए।

समाधान (Solution)

		₹
Value of Goodwill: Total profits for 3 years :	2005-06	42,000
	2006-07	39,000
	2007-08	45,000
	Total	1,26,000
Average profit		42,000
Goodwill at 2 years' purchase		84,000

त्याग / बढ़त की गणना—

	Any	Many
Old ratio (3 : 1)	$\frac{3}{4}$	$\frac{1}{4}$
New ratio (5 : 3)	$\frac{5}{8}$	$\frac{3}{8}$
	(Sacrifice) $\frac{1}{8}$.	(Gain) $\frac{1}{8}$
	84,000 × 1/8 = 10,500	84,000 × 1/8=10,500

नयी आवश्यक पूँजी अनुपात बदलाव के बाद—

		₹
Total Capital	(90,000 + 30,000)	1,20,000
Any's capital	1,20,000 × 5/8	75,000
Many's capital	1,20,000 × 3/8	45,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Journal Entries

		₹	₹
Many's Capital Account	Dr.	10,500	
To Any's Capital Account			10,500
[The value of 1/8 share of goodwill (total value ₹ 84,000) which Many acquires from Any]			
Bank Account	Dr.	25,500	
To Many's Capital Account			25,500
[The sum required to make up Many's capital upto ₹ 45,000 after the debit of ₹ 10,500, i.e., ₹ 45,000 – (30,000 – 10,500)]			
Any's Capital Account	Dr.	25,500	
To Bank Account			25,500
[The sum to be returned to Any to bring his capital down to ₹ 75,000 i.e., ₹ (90,000 + 10,500 – 75,000).]			

6. नये साझेदार का प्रवेश

(ADMISSION OIF A PARTNER)

जब एक नया साझेदार साझेदारी व्यवसाय में प्रवेश करता है, तो सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन तथा दायित्वों का पुनर्निर्धारण किया जाता है। इस उद्देश्य हेतु एक पुनर्मूल्यांकन खाता ;अथवा लाभ–हानि समायोजन खाता) खोला जाता है। इस खाते को सभी सम्पत्तियों के मूल्य में कमी तथा दायित्वों में वृद्धि से डेबिट किया जाता है। खाते के दोनों पक्षों के मध्य अंतर लाभ–हानि दर्शायेगा। इनको पुराने साझेदारों के पुराने लाभ-हानि अनुपात में अंतरित कर दिया जायेगा। एवं निम्न प्रविष्टि की जाऐगी।

1.	Revaluation Account	Dr.	
	To the assets (Individually which show a decrease)		with the reduction in the value of the assets.
	To the Liabilities (Individually which have to be increased.)		with the increase in the liabilities.
2.	Assets Account (Individually)	Dr.	with the increase in the value of the assets.
	Liabilities Account (Individually)	Dr.	
	To Revaluation Account		with the reduction in the amount of liabilities

© The Institute of Chartered Accountants of India

3.	Revaluation Account	Dr.	with the profit in the old profit
	To Capital A/cs of the old partners		sharing ratio.
	Or,		
	Capital A/cs of the old partners	Dr.	with the loss in old profit sharing
	To Revaluation Account		ratio.

उपरोक्त की गयी जर्नल प्रविष्टि के कारण, पुराने साझेदारों के पूँजी खाते में बदलाव आयेंगे और सम्पत्ति एवं दायित्व को उनके उचित मूल्य पर समायोजित हो जायेगा और अब आर्थिक चिट्ठे में संशोधित मूल्य पर दिखाए जाऐंगे।

इसके अलावा यदि साझेदार सहमत हों तो सभी सम्पत्ति और दायित्व को उनके पुराने मूल्य पर अर्थिक चिट्ठे में दिखाया जाए, यानि संशोधित मूल्य पर न दिखाया जाए तो इसके लिए आवश्यक एक अतिरिक्त प्रविष्टि की जायेगी।

Capital A/cs	Dr.	With the amount of revaluation
(of all partners including newly admitted partner)		
To Revaluation A/c		Profit in the new profit sharing ratio.
Or		
Revaluation A/c	Dr.	With the amount of revaluation loss
To Capital A/cs		in the new profit sharing ratio.
(of all partners including newly admitted partners)		

इस दशा में 1 और 2 प्रविष्टियों की आवश्यकता नहीं है।

जब भी कोई नया साझेदार फर्म में प्रवेश करता है, तब कोई भी संचय आदि यदि चिट्ठे में मौजूद हो तो उनके पुराने साझेदार के पूँजी खाते में पुराने लाभ–हानि अनुपात में अंतरित कर दिया जाएगा। (परीक्षा में ऐसा किया जाना चाहिए, चाहे इसके बारे में कोई निर्देश न दिया गया हो)।

उदाहरण (Illustration) **15**

मैसर्स दलाल, बैनर्जी और मलिक एक साझेदारी फर्म है जिसका लाभ–हानि अनुपात क्रमशः 2 : 2 : 1 है। 31-03-2008 को उनका अर्थिक चिट्ठा नीचे दिया गया है।

Liabilities		₹	*Assets*	₹
Sundry Creditors		12,850	Land and Buildings	25,000
Outstanding Liabilities		1,500	Furniture	6,500
General Reserve		6,500	Stock of goods	11,750
Capital Account :			Sundry Debtors	5,500
Mr. Dalal	12,000		Cash in hand	140
Mr. Banerji	12,000		Cash at Bank	960
Mr. Mallick	5,000	29,000		
		49,850		49,850

© The Institute of Chartered Accountants of India

सभी साझेदार Mr. Mistri को फर्म का नया साझेदार बनाने के लिए राजी हैं 01-04-2008 से निम्नलिखित शर्तों पर—

(i) मि. मिस्त्री पूँजी के रूप में ₹ 5,000 नगद लायेंगे।

(ii) स्कंध का मूल्य ₹ 2,500 बढ़ा दिया जायेगा एवं फर्नीचर पर 10% ह्रास लगाया गया था कम किया जायेगा।

(iii) देनदारों के 10% का संदिग्ध देनदार संचय खाता बनाया जायेगा।

(iv) भूमि और भवन का मूल्य 20% से बढ़ा दिया जायेगा और ख्याति का मूल्य ₹ 15,000 स्थायी है।

(v) ख्याति का मूल्य ₹ 15,000 स्थायी है।

(vi) सामान्य संचय को साझेदारो के पूँजी खाते में अंतरित कर दिया जायेगा।

(vii) नया लाभ-हानि अनुपातः Mr. Dalal 5/15, Mr. Banerji 5/15,Mr. Mallick 3/15 and Mr. Mistri 2/15.

(viii) ख्याति को साझेदारों के नये लाभ–हानि अनुपात के आधार पर पूँजी खाते में अपलिखित किया जायेगा।

Mr. Sen के ₹ 100 जो अदत व्यय में सम्मलित हैं, Mr. Dalal द्वारा भुगतान का दिया गया है। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

बनाइये—(i) पुनर्मूल्यांकन खाता, (ii) साझेदारों के पूँजी खाते, (iii) फर्म का नया आर्थिक चिट्ठा। (जर्नल आवश्यक नहीं)

समाधान (Solution)

Revaluation Account

2008		₹	2008		₹
April	To Provision for bad and doubtful debts	650	April 1	By Stock in trade	2,500
	To Furniture and fittings	550		By Land and Building	5,000
	Capital A/cs				
	Profit on revaluation transferred				
	Dalal	2,520			
	Banerji	2,520			
	Mallick	1,260	6,300		
			7,500		7,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

Capital Accounts of Partners

Dr. Cr.

Particulars	Dalal	Banerji	Mallick	Mistri	Particulars	Dalal	Benerji	Mallick	Mistri
	₹	₹	₹	₹		₹	₹	₹	₹
To Dalal & Benerjii	-	-	-	2,000	By Balance b/d	12,000	12,000	5,000	-
To Balance c/d	19,120	18,120	7,560	3,000	By General Reserve	2,600	2,600	1,300	-
					By Cash	-	-	-	5,000
					By Mistri	1,000	1,000	-	-
					By Outstanding Liabilities	1,000	-	-	-
					By Revaluation A/c	2,520	2,520	1,260	-
	19,120	18,120	7,560	5,000		19,120	18,120	7,560	5,000

Balance Sheet of M/s Dalal, Banerji, Mallick and Mistri as on 1-4-2008

Liabilities		₹	*Assets*		₹
Sundry creditors		12,850	Land and Buildings		30,000
Outstanding Liabilities		500	Furniture		5,850
Capital Accounts			Stock of goods		14,250
of partners :					
Mr. Dalal	19,120		Sundry Debtors	5,500	
Mr. Banerji	18,120		*Less* : Provision	550	4,950
Mr. Mallick	7,560		Cash in hand		140
Mr. Mistri	3,000	47,800	Cash at Bank		5,960
		61,150			61,150

6.1 अनुमानित समानुपातिक पूँजी तथा ख्याति (Proportionate Capital and Goodwill Inference)

"समानुपातिक पूँजी का अर्थ है, कि लाभ-हानि वितरण अनुपात में सोझेदारों के पूँजी खाते का शेष"। दूसरे शब्दों में साझेदारों के पूँजी खाते का अनुपात उनके लाभ-हानि वितरण अनुपात के बराबर होगा। समानुपातिक पूँजी को सामान्य तथा निम्नलिखित स्थायी पूँजी पद्धति द्वारा बनाया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण के लिए, A और B साझेदार हैं, जिनका लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 है यदि कुल पूँजी ₹ 1,00,000 हो तब A का अंशदान ₹ 1,00,000 × 3/5 = ₹ 60,000 और B का ₹ 1,00,000 × 2/5= ₹ 40,000 होगा।

ख्याति का अनुमान लगाने का प्रश्न केवल समानुपातिक पूँजी की दशा में ही आता है। यदि नया साझेदार अपने लाभ-हानि अनुपात में उल्लेखित पूँजी से अधिक पूँजी लाता है, तब यह मान लिया जाता है कि उसने जो अधिक अंशदान दिया है। वह ख्याति के लिए दिया है, उदाहरण के लिए A और B साझेदार हैं और उनकी समानुपातिक पूँजी ₹ 60,000 और ₹ 40,000 है। अब वे नये साझेदार C को 1/5 भाग के लिए साझेदारी में शामिल करना चाहते हैं और C अपने भाग के लिए ₹ 30,000 लाता है। चूँकि कुल पूँजी ₹ 1,00,000 है, तब C का पूँजी भाग 1,00,000 × 1/5 = 20,000 है। लेकिन वह ₹ 30,000 का भुगतान करता है तो वह 1/5 भाग की ₹ 10,000 ख्याति का भुगतान करता है तब फर्म की कुल ख्याति का मूल्य ₹ 10,000 × 5 i.e., ₹ 50,000.

उदाहरण (Illustration) **16**

A और B दोनों साझेदारी में हैं। 31-12-2008 को मै A B का आर्थिक चिट्ठा निम्न है–

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital A/cs :		Sundry Fixed Assets	60,000
A	45,000	Stock	30,000
B	45,000	Bank	20,000
Sundry Creditors	20,000		
	1,10,000		1,10,000

1-1-2009 को C को 1/3 का साझेदार बनाने के लिए राजी हो गये और कुल पूँजी को बढ़ाकर 1,35,000 कर दिया। C ₹ 60,000 देने को राजी हो गया। आवश्यक जर्नल पृविष्ठियाँ दर्शाइए। साझेदार पूँजी खाता व आर्थिक चिट्ठा बनायें 1-1-2009 का।

समाधान (Solution)

In the Books of M/s A, B and C

Journal Entries

		₹	₹
Bank A/c	Dr.	60,000	
To C's Capital A/c			60,000
(Cash brought in by C for 1/3rd share)			
C's Capital A/c	Dr.	15,000	
To A's Capital A/c			7,500
To B's Capital A/c			7,500
(Inferred value of goodwill adjusted in the books through capital accounts)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

A's Capital A/c	Dr.	7,500	
B's Capital A/c	Dr.	7,500	
To Bank			15,000
(To keep capital intact by ₹ 1,35,000, excess capital (due to goodwill) withdrawn)			

Working Notes :

(1) Old profit sharing ratio - 1:1

(2) New profit sharing ratio - 1:1:1

(3) C's share of Capital = ₹ 1,35,000 × $\frac{1}{3}$ = ₹ 45,000

(4) Goodwill : ₹ 60,000 – ₹ 45,000 = ₹ 15,000 for 1/3rd share.

Total Goodwill : ₹ 15,000 × 3 = ₹ 45,000

Partner's Capital A/cs

Dr. Cr.

Particulars	*A*	*B*	*C*	*Particulars*	*A*	*B*	*C*
	₹	₹	₹		₹	₹	₹
To A & B	-	-	15,000	By Balance b/d	45,000	45,000	-
To Bank	7,500	7,500	-	By Bank	-	-	60,000
To Balance c/d	45,000	45,000	45,000	By C	7,500	7,500	-
	52,500	52,500	60,000		52,500	52,500	60,000

Balance Sheet of M/s A, B & C as on 1-1-2009

Liabilities		₹	*Assets*	₹
Capital A/cs :			Sundry Fixed Assets	60,000
A	45,000		Stock	30,000
B	45,000		Bank	65,000
C	45,000	1,35,000		
Sundry Creditors		20,000		
		1,55,000		1,55,000

7. साझेदार का अवकाश ग्रहण

(RETIREMENT OF A PARTNER)

- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर सभी सम्पत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन किया जाना उसी तरह आवश्यक है जिस तरह साझेदार के प्रवेश के समय किया जाता है।
- यदि पुनर्मूल्यांकन में हानि होती है, तो इसको सभी साझेदारों में (अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को सम्मिलित करते हुए) उनके वर्तमान लाभ–हानि अनुपात में बांट दिया जायेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- यदि पुनर्मूल्यांकन में लाभ होता है, तो उसको भी सभी साझेदारों (अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को सम्मिलित करते हुए) में उनके वर्तमान लाभ-हानि अनुपात में बाँटा जायेगा।
- सम्पत्तियों और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ-हानि की गणना करने के लिए पुनर्मूल्यांकन खाता तथा लाभ–हानि समायोजन खाता खोला जाता है।
- पुनर्मूल्यांकन खाते या लाभ–हानि खाते का शेष (लाभ या हानि) साझेदारों के खातों में अंतरित करने के बाद पुनर्मूल्यांकन तथा लाभ-हानि खाता स्वतः ही बंद हो जायेगा।
- यदि यह निर्णय किया जाता है कि सम्पत्तियों और दायित्वों को आर्थिक चिट्ठे में नहीं दिखाया जायेगा, तब अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय या वसूल राशि की गणना करते हुए एक जर्नल प्रविष्टि की जायेगी जिसे शेष साझेदार बढ़त लाभ-हानि अनुपात में बांटेंगे।
- प्रथम दृष्टकोण में जब पुनर्मूल्यांकन खाते का लाभ–हानि आर्थिक चिट्ठे में दर्शाया जायेगा, को वितरित करने की पंजी प्रविष्टि निम्न प्रकार से की जायेगी—

Revaluation A/c Dr.

To Partners' Capital A/c'

(For profit on revaluation)

Or

Partners' Capital A/c Dr.

To Revaluation A/c

(For loss on revaluation)

अब हम देखेंगे, कि कैसे उस स्थिति में सरोकार (Deal) करेंगे जब पुनर्मूल्यांकन का लाभ या हानि आर्थिक चिट्ठे में नहीं दिखाया जायेगा।

यादि A, B और C जिनका लाभ–हानि अनुपात बराबर है, यहाँ पर पुनर्मूल्यांकन का लाभ ₹ 30,000 की गणना A के अवकाश ग्रहण करने पर की गई। तब A का ₹ 1000 देय होते हैं जो B और C में बराबर वहन किये जायेंगे। तब निम्न पूँजी प्रविष्टि की जायेगी।

		₹	₹
B's Capital A/c	Dr.	5,000	
C's Capital A/c	Dr.	5,000	
To A's Capital A/c			10,000

वैकल्पिक तौर पर यह भी संभव है कि सम्पत्तियों के मूल्यों में वृद्धि तथा दायित्वों के मूल्यों में कमी को संबंधित दायित्वों सम्पति खाते को नाम (Dr.) तथा साझेदार के पूँजी खाते को जमा (Cr.) किया जायेगा। उनके वर्तमान लाभ–हानि अनुपात के आधार पर। इसके साथ–साथ ही, शेष बचे साझेदारों के पूँजी खाते को नाम (Dr) तथा सम्बन्धित सम्पति तथा दायित्व खातों को जमा (Cr.) किया जायेगा उनके नये लाभ–हानि अनुपात में तो स्थायी सम्पत्ति के मूल्य मे 10,000 की वृद्धि तथा दायित्व में 2,000 की कमी दर्शाते हुए अग्रलिखित प्रविष्टियाँ की जायेंगी।

© The Institute of Chartered Accountants of India

			₹	₹
(1)	Sundry Fixed Assets A/c	Dr.	10,000	
	Sundry Creditors A/c	Dr.	2,000	
	To A's Capital A/c			4,000
	To B's Capital A/c			4,000
	To C's Capital A/c			4,000
	(Distribution of Revaluation Profit amongst the existing partners at the profit sharing ratio)			
(2)	B's Capital A/c	Dr.	6,000	
	C's Capital A/c	Dr.	6,000	
	To Sundry Fixed Assets A/c			10,000
	To Sundry Creditors A/c			2,000

इस दशा में अलग से पुनर्मूल्यांकन खाता खोलने की आवश्यकता नहीं है।

साझेदार के अवकाश ग्रहण करते समय यदि चिट्ठे मे कोई अवितरित लाभ–हानि संचय है, तो उसको साझेदारों के पूँजी खाते में पुराने अनुपात में बांटा जायेगा। वैक्लपिक तौर पर केवल अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के पूंजी खाते में भाग अंतरित किया जायेगा। यदि शेष साझेदारों का लाभ-हानि अनुपात समान रहे।

उदाहरणत् A, B और C साझेदारी में हैं, जिनका लाभ-हानि अनुपात 5:3:2 है। अवकाश ग्रहण करने पर B और C अपना लाभ–हानि अनुपात 3:2 करने का निर्णय लेते हैं। संचय शेष ₹ 10,000 है। इस स्थिति में निम्नलिखित पंजी प्रविष्टियाँ की जायेंगी।

			₹	₹
(1)	Reserves A/c	Dr.	10,000	
	To A's Capital A/c			5,000
	To B's Capital A/c			3,000
	To C's Capital A/c			2,000
	(Transfer of Reserve A/c to partners' Capital A/cs in 5:3:2 ratio on A's retirement)			
	Or			
(2)	Reserves A/c	Dr.	5,000	
	To A's Capital A/c			5,000
	(Transfer of A's share of reserve to his Capital Account on his retirement)			

ध्यान दें, विकल्प (2) का भी वही प्रभाव होगा, जो कि शेष साझेदारों A और B का लाभ-हानि अनुपात 3:2 है। जैसा कि A के अवकाश ग्रहण करने के पहले था।

© The Institute of Chartered Accountants of India

एक अन्य उदाहरण लें, X, Y और Z तीनों बराबर के साझेदार हैं। Z ने अवकाश ग्रहण करने का निश्चय किया। X और Y ने लाभ-हानि अनुपात 3:2 करने का निर्णय किया। Z के अवकाश ग्रहण करने पर ₹ 9,000 का संचय था। इस स्थिति मे Z के भाग का समायोजन पर्याप्त नहीं है क्योंकि X और Y के बीच सम्बन्ध बदल चुके हैं।

X's gain : $\frac{3}{5}-\frac{1}{3}=\frac{9-5}{15}=\frac{4}{15}$

Y's gain : $\frac{2}{5}-\frac{1}{3}=\frac{6-5}{15}=\frac{1}{15}$

Gaining Ratio : X : Y

4 : 1

बढ़त अनुपात : X : Y 4 : 1 यह 1 : 1 अनुपात से भिन्न है तो विकल्प (1) का उपयोग किया जायेगा।

		₹	₹
Reserve A/c	Dr.	9,000	
To X's Capital A/c			3,000
To Y's Capital A/c			3,000
To Z's Capital A/c			3,000

(Transfer of Reserve on Z's retirement)

यदि शेष साझेदार संचय को चिट्ठे में दिखाना चाहते हैं तो निम्न पंजी प्रविष्टि की जायेगी—

		₹	₹
X's Capital A/c	Dr.	2,400	
Y's Capital A/c	Dr.	600	
To Z's Capital A/c			3,000

(Adjustment entry for Z's share of reserve)

7.1. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का अंतिम भुगतान (Final payment to retiring partner)

पूँजी खाते में निम्न समायोजन किये जाने आवश्यक हैं :

(i) संचय का अंतरण

(ii) ख्याति का अंतरण

(iii) पुनर्मूल्यांकन का लाभ–हानि का अंतरण

उपरोक्त दिये गये तथ्यों के समायोजन के पस्चात् अवकाश ग्रहण करने करने वाले साझेदार के पूँजी खाते का जमा शेष (Cr. Balance) उसे चुकायी जाने वाली राशि को दर्शाता है। शेष साझेदार अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के दावे को चुका सकते हैं तब निम्न प्रविष्टि होगी :

Retiring Partner's Capital A/c Dr.

To Bank A/c

© The Institute of Chartered Accountants of India

कभी–कभी अवकाश ग्रहण करने वाला साझेदार अपने दावे के कुछ भाग को फर्म में ऋण के रूप में रखता है। तब निम्न प्रविष्टि होगी—

Retiring Partner's Capital A/c Dr.
To Retiring Partners' Loan A/c
To Bank A/c

उदाहरण (Illustration) **17**

Fairbrother, Greatbatch और Kristen साझेदार हैं। जिनका लाभ–हानि अनुपात 2 : 2 : 1 है। Kristen 31-12-2003 को अवकाश ग्रहण करना चाहते हैं। साझेदारी में तुलन पत्र के साथ ही अन्य जानकारी नीचे दी गई है—

31-12-2008 का तुलन पत्र

Balance Sheet as on 31-12-2008

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital A/cs.		Sundry Fixed Assets	1,50,000
Fairbrother	1,20,000	Stock	50,000
Greatbatch	80,000	Debtors	50,000
Kristen	60,000	Bills Receivable	20,000
Reserve	10,000	Bank	50,000
Sundry Creditors	50,000		
	3,20,000		3,20,000

Fairbrother और Greathbatch भविष्य में अपना लाभ और हानि अनुपात 3 : 2 बाँटने के लिए सहमत हो गये। ख्याति का मूल्यांकन ₹ 50,000 किया गया है। विविध स्थायी सम्पत्ति को ₹ 30,000 तथा स्कन्ध का मूल्य ₹ 10,000 बढ़ाया गया है। ₹ 5,000 प्राप्य विपत्रों का अनादरण हो गया लेकिन उनकी किताबों में प्रविष्टि नहीं की गई। बिलों का अनादरण ग्राहक के दिवालिया होने के कारण हुआ है। Fairbrother और Greathbatch, Kristen का दावा देने के लिए आवश्यक रोकड़ लाने को सहमत हैं। अपनी पूँजी खातों के अनुपात में और वह बैंक शेष ₹ 75,000 रखना चाहते हैं कार्यात्मक पूंजी के लिए और वे ख्याति को तुलन-पत्र में नहीं दिखाना चाहते। मैसर्स Fairbrother और Greathbatch का तुलनपत्र बनाइए तथा आवश्यक पंजी प्रविष्टि कीजिए।

समाधान (Solution)

Journal Entries

			₹	₹
(1)	Reserve A/c	Dr.	10,000	
	To F's Capital A/c			4,000
	To G's Capital A/c			4,000
	To K's Capital A/c			2,000
	(Transfer of Reserve to Partners' Capital A/cs on K's retirement)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2)	Sundry Fixed Assets A/c	Dr.	30,000	
	Stock A/c	Dr.	10,000	
	To Profit and Loss Adjustment A/c			40,000
	(Increase in the value of Sundry Fixed Assets and Stock recorded)			
(3)	Profit and Loss Adjustment A/c	Dr.	5,000	
	To Bills Receivable A/c			5,000
	(Loss arising out of dishonoured bill recorded)			
(4)	Profit and Loss Adjustment A/c	Dr.	35,000	
	To F's Capital A/c			14,000
	To G's Capital A/c			14,000
	To K's Capital A/c			7,000
	(Profit on revaluation transferred to Partners' Capital A/cs on K's retirement)			
(5)	F's Capital A/c	Dr.	10,000	
	To K's Capital A/c			10,000
	(Adjusting of the value of goodwill in the profit sacrificing ratio of partners)			
(6)	Bank A/c	Dr.	1,04,000	
	To F's Capital A/c			70,000
	To G's Capital A/c			34,000
	(Cash brought in by F and G as per agreement)			
(7)	K's Capital A/c	Dr.	79,000	
	To Bank A/c			79,000
	(Payment made to K on retirement)			

Balance Sheet

(After K's retirement)

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital A/cs		Sundry Fixed Assets	1,80,000
F	1,98,000	Stock	60,000
G	1,32,000	Debtors	50,000
Sundry Creditors	50,000	Bills Receivable	15,000
		Bank	75,000
	3,80,000		3,80,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Working Notes :

1. Partner's Capital A/c

	F	G	K		F	G	K
	₹	₹	₹		₹	₹	₹
To K	10,000	–	–	By Balance b/d	1,20,000	80,000	60,000
To Balance				By E	–	–	10,000
c/d	1,28,000	98,000	79,000	By P & L Adj. A/c	14,000	14,000	7,000
				By Reserve	4,000	4,000	2,000
	1,38,000	**98,000**	**79,000**		**1,38,000**	**98,000**	**79,000**
To Bank			79,000	By Balance b/d	1,28,000	98,000	79,000
To Balance				By Bank	70,000	34,000	–
c/d	1,98,000	1,32,000	–				
	1,98,000	**1,32,000**	**79,000**		**1,98,000**	**1,32,000**	**79,000**

2. Total capital

	₹
Sundry Fixed Assets (₹ 1,50,000 + 30,000)	1,80,000
Stock (₹ 50,000 + ₹ 10,000)	60,000
Debtors	50,000
Bills Receivable (₹ 20,000– ₹ 5,000)	15,000
Bank	75,000
	3,80,000
Less: Sundry Creditors	50,000
	3,30,000
F's Share (₹ 3,30,000 × 3/5)	1,98,000
G's Share (₹ 3,30,000 × 2/5)	1,32,000

3. Bank A/c

	₹		₹
To Balance b/d	50,000	By K's Capital A/c	79,000
To F's Capital A/c	70,000	By Balance c/d	75,000
To G's Capital A/c	34,000		
	1,54,000		**1,54,000**

© The Institute of Chartered Accountants of India

अधिकांशतः अवकाश ग्रहित साझेदार के दावे पूरी तरह चुकाये नहीं जाते, बल्कि उसके दावे की कुछ राशि व्यवसाय के ऋण के रूप में रखी जाती है। इस व्यवस्था के अनुसार इस ऋण को निवल ब्याज के साथ किस्तों में चुकाया जाता है। कभी-कभी साझेदारों के दावे की पूर्ति के लिए संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी भी ली जाती है।

8. साझेदार की मृत्यु

(DEATH OF A PARTNER)

किसी साझेदार की मृत्यु पर उत्पन्न होने वाली समस्या किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के समान होती है। इस दशा में भी सम्पत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करके प्राप्त लाभ-हानि को सभी साझेदार के (मृत साझेदार को सम्मिलित करते हुए) पूँजी खातों में अंतरित कर दिया जाता है।

ख्याति का उपचार भी उस तरह से ही किया जायेगा जिस तरह से साझेदार के अवकाश ग्रहण करते समय किया जाता है। अतिरिक्त बात यह होती है कि मृत्यु किसी भी दिन हो सकती है। मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी, वर्ष के प्रारम्भ से लेकर साझेदार की मृत्यु की तिथि तक का फर्म से लाभ प्राप्त करने के हकदार होते हैं। मृतक साझेदार को देय राशि का निर्धारण हो जाने के पश्चात उसको मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी के खाते में क्रेडिट कर देना चाहिए।

मृतक साझेदार को देय राशि पर आपसी सहमति पर ब्याज दिया जाता है। किसी अनुबन्ध की अनुपस्थिति में मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी के पास यह विकल्प होता है कि वह 6% की दर से ब्याज ले सकता है या मृतक साझेदार के देय हिस्से के बराबर अर्जित लाभ प्राप्त कर सकता है।

मृतक साझेदार को देय राशि तथा अवकाश ग्रहण में मूल अंतर मृतक साझेदार के प्रतिनिधि को दिये जाने वाले अंतिम भुगतान से है लेकिन ख्याति का मूल्यांकन जैसे अवकाश ग्रहण करते समय किया जाता है वैसे ही किया जाता है। इसके अलावा, मृतक का प्रतिनिधि, मृत्यु की तिथि तक लाभ में हिस्सा पाने का अधिकारी है।

A, B और C साझेदारी में हैं जिनका लाभ-हानि अनुपात 2:2:1 है। 15 अप्रैल, 2008 को A की मृत्यु हो जाती है। फर्म अपने खाते प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बंद करती है। अतः A का प्रतिनिधि 3½ माह के लिए लाभ प्राप्त करने का अधिकारी हैं यदि A का हिस्सा तुरन्त चुका दिया जाता है तो वर्ष 2008 में 3½ महीने के लाभ की गणना, वर्ष 2007 के आधार पर की जाएगी। यदि Mr. A, B और C ने 2007 में ₹ 96,000 लाभ कमाया तब 3½ महीने का लाभ ₹ 28,000 हुआ। A का भाग ₹ 28,000 × 2/5 = ₹ 11,200 आय।

Journal entry is :

Profit and Loss Suspense A/c	Dr.	11,200	
To A's Capital A/c			11,200

(Share of A in 3½ months profit in 2008
in transferred to his Capital Account on death)

Students are advised to see CPT study material Chapter 8. Unit 5 for details.

© The Institute of Chartered Accountants of India

9. कुछ मामलों में अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का अनुगामी लाभों में भाग का अधिकार

(RIGHT OF OUTGOING PARTNER IN CERTAIN CASES TO SHARE SUBSEQUENT PROFITS)

भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 37 के प्रावधानों के अनुसार—

जहाँ किसी फर्म के किसी साझेदार की मृत्यु हो जाती है या वह किसी अन्य कारण से फर्म का साझेदार नहीं रहता और जीवित साझेदार या शेष साझेदार फर्म की सम्पत्ति से व्यवसाय चलाते हैं बिना किसी अंतिम निपटान के जो उनके तथा मृतक साझेदार के मध्य होता है तब किसी विपरीत अनुबन्ध के बिना जाने वाले साझेदार के विकल्प पर या मृतक साझेदारों के प्रतिनिधि के विकल्प पर फर्म में अपनी सम्पत्ति पर प्राप्त लाभ या ब्याज प्राप्त कर सकता है।

जहाँ साझेदारों के बीच अनुबन्ध के अनुसार, जीवित तथा शेष साझेदारों को मृतक या जाने वाले साझेदारों का हित खरीदने का विकल्प दिया जाता है और उस विकल्प का विधिवत् प्रयोग किया जाता है चाहे मृतक साझेदार या जाने वाला साझेदार, जैसा भी मामला हो, किसी अन्य लाभ या भाग का अधिकारी नहीं होगा।

परन्तु यदि कोई साझेदार इस धारा का उपयोग करता है और इस धारा की किसी शर्त का पालन नहीं करता तो वह इस धारा के पूर्वगामी प्रावधानों के अधीन उत्तरदायी होगा। इस तरह, बहिर्गामी साझेदार को यह विकल्प होगा कि वह अपनी अंतिम निपटान न की गई राशि पर कमाये गये लाभ में हिस्सा या 6% वार्षिक दर से ब्याज प्राप्त करे जब तक कि उसकी बकाया राशि का भुगतान नहीं किया जाता। इसके विपरीत किसी अनुबन्ध की अनुपस्थिति में यहाँ यह उल्लेख किया जाता है कि जाने वाला साझेदार तब तक चुनाव नहीं कर सकता जब तक उसके देय लाभ के हिस्से का निर्धारण न कर दिया जाए।

उदाहरणतः A, B तथा C बराबर हिस्से के साझीदार हैं जो बराबर हिस्से में लाभ-हानि बांटते हैं। 31 अक्टूबर, 2008 को C अवकाश ग्रहण करता है। सभी समायोजनों के पश्चात साझेदारों की पूँजी क्रमशः ₹ 50,000, 75,000 तथा 1,20,000 है। A, B व्यवसाय को चालू रखना चाहते हैं। C के भाग का निपटान किए बिना। C का अंतिम निपटान 1 फरवरी, 2009 को किया गया। तीन महीने की अवधि में ₹ 28,000 लाभ कमाया गया। साझेदारी अधिनियम की धारा 37 के अनुसार, C निम्नलिखित में से कोई एक विकल्प चुन सकता है :

(i) Share in subsequent profits of firm :

Profit made—₹ 28,000

$$\text{C's share} — 28{,}000 \times \frac{1{,}20{,}000}{2{,}45{,}000} = ₹\ 13{,}714$$

(ii) Interest at 6% p.a.

$$1{,}20{,}000 \times \frac{6}{100} \times \frac{3}{12} = ₹\ 1{,}800$$

विकल्प (i) C के लिए ज्यादा फायदे में है। निश्चित तौर पर वह लाभों में अपना आनुपातिक भाग ही लेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **18**

रोहन, सोहन तथा मोहन साझेदार हैं जिनका साझेदारी अनुपात 2 : 2 : 1 है। 01-01-2008 को उनका तुलन-पत्र निम्न है :

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹
Capital Accounts :			Fixed Assets	1,00,000
Rohan	50,000		Stock	25,000
Sohan	40,000		Debtors	35,000
Mohan	30,000	1,20,000	Cash and bank	10,000
Reserves		10,000		
Creditors		40,000		
		1,70,000		**1,70,000**

1 जुलाई, 2008 को मोहन की मृत्यु हो गयी। उसका प्रतिनिधि निम्न के लिए सहमत है :

(i) फर्म की ख्याति का मूल्य ₹ 50,000

(ii) स्थायी सम्पत्ति को ₹ 10,000 से अपलिखित किया जायेगा।

(iii) लाभ के स्थान पर, मोहन की पूँजी पर 01-01-2008 को 25% की दर से ब्याज दिया जायेगा।

चालू वर्ष में (2008) ह्रास घटाने के बाद लाभ ₹ 9,500 है। (₹ 5,000 पहली छमाही से सम्बन्धित है) वर्ष के अन्त में स्कन्ध, देनदार, लेनदार, रोकड़ और बैंक की राशि क्रमशः ₹ 23,000, 19,000, 35,000 और ₹ 4,377 हे। उनके आहरण की जानकारी निम्न है—

	Upto 1-7-2008	April 1-7-2008
	₹	₹
Rohan	4,125	5,000
Sohan	4,125	5,000
Mohan		1,750

31 दिसम्बर, 2008 के लिए तुलन पत्र बनाइए।

समाधान (Solution)

		₹
(a)	Profit after Depreciation	40,500
	Add : Depreciation	9,500
	Profit before Depreciation	**50,000**
(b)	Profit for the 1st half (assumed : evenly spread)	25,000
	Less : Depreciation with respect to 1st half	5,000
	Post Depreciation profit	**20,000**
(c)	Profit for the 2nd half	25,000
	Less : Depreciation for the 2nd half	4,500
	2nd half profit after Depreciation	**20,500**

© The Institute of Chartered Accountants of India

(d) **Profit and Loss Appropriation A/c**
(for the first half)

Dr.						Cr.
		₹	₹			₹
To	Interest on Mohan's Capital (30,000 × 25% for 6 months)		3,750	By	Profit	20,000
To	Rohan	8,125				
	Sohan	8,125	16,250			
			20,000			**20,000**

(e) **Capital Account as on 1-7-2008**

Dr.							Cr.		
		Rohan	Sohan	Mohan			Rohan	Sohan	Mohan
To	Revaluation Loss				By	Balance b/d	50,000	40,000	30,000
	of Fixed Assets	4,000	4,000	2,000	By	Reserves	4,000	4,000	2,000
To	Drawings	4,125	4,125	1,750	By	Rohan &			
To	Mohan	5,000	5,000	–		Sohan	–	–	10,000
To	Executors A/c	–	–	42,000	By	Profit and Loss			
To	Balance c/d	49,000	39,000	–		Appn. A/c	8,125	8,125	3,750
		62,125	**52,125**	**45,750**			**62,125**	**52,125**	**45,750**

(f) **Application of Section 37 of the Partnership Act**

Either

(i) Interest of $42,000 \times \frac{6}{100} \times \frac{6}{12} = ₹ 1,260$

Or

(ii) Profit earned out of unsettled capital

$$20,500 \times \frac{42,000}{(49,000 + 39,000 + 42,000)} = ₹ 6,623$$

(g) साझेदारों के बीच उपरोक्त विषय पर किसी विशिष्ट समझौते की अनुपस्थिति में, मृत साझेदार के प्रतिनिधि को यह विकल्प है कि वह 6% वार्षिक दर से ब्याज प्राप्त करे या वह मृतक साझेदार को देय राशि के आनुपातिक भाग के लाभ का हिस्सा प्राप्त करे। इस मामले में यह माना गया है कि प्रतिनिधि ₹ 6,623 प्राप्त करने का विकल्प चुनेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(h) **Profit and Loss Appropriation A/c for the second half**

Dr.						Cr.
			₹			₹
To	Executors A/c		6,623	By Net Profit		20,500
To	Rohan	6,938				
	Sohan	6,939	13,877			
			20,500			**20,500**

(i) **Capital Accounts as on 31-12-2008**

Dr.					Cr.
	Rohan	Sohan		Rohan	Sohan
	₹	₹		₹	₹
To Drawings	5,000	5,000	By Balance b/d	49,000	39,000
To Balance c/d	50,938	40,939	By Profit & Loss Appn. A/c	6,938	6,939
	55,938	**45,939**		**55,938**	**45,939**

(j) **Executors Account**

Dr.			Cr.
	₹		₹
To Bank	48,623	By Mohan's Capital A/c	42,000
		By Profit & Loss Appn. A/c	6,623
	48,623		**48,623**

(k) **Balance Sheet as on 31-12-2008**

Liabilities	₹	₹	**Assets**	₹	₹
Capital Accounts			Fixed Assets	1,00,000	
Rohan	50,938		*Less* : Written down	10,000	
Sohan	40,939	91,877		90,000	
Creditors		35,000	*Less* : Depreciation	9,500	80,500
			Debtors		19,000
			Stock		23,000
			Cash and Bank		4,377
		1,26,877			**1,26,877**

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- साझेदारी को उन व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध के रूप में परिभाषित किया जाता है जो किसी व्यवसाय को उनमें से सभी या किसी एक के द्वारा चलाया जाता है द्वारा अर्जित लाभ-हानि के आपस में बँटवारे से है।
- लेखांकन की दो विधियाँ—
  - स्थायी पूँजी विधि
  - अस्थिर पूँजी विधि
- ख्याति किसी फर्म की प्रतिष्ठा का मूल्य होती है अपेक्षित लाभ के सम्बन्ध में कि अधिक लाभ की दर रहेगी भविष्य में।
- ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता निम्नलिखित मामलों में उत्पन्न होती है :
  - सभी साझेदारों के लाभ-हानि अनुपात में बदलाव होने पर।
  - नये साझेदार के प्रवेश करने पर।
  - किसी साझेदार की मृत्यु या जाने पर।
  - साझेदारी व्यवसाय के बंद, दिवालिया या बेचने पर।
- ख्याति की गणना के तरीके—

1. औसत लाभ के आधार पर—

$$\text{औसत लाभ} = \frac{\text{कुल लाभ}}{\text{वर्षों की संख्या}}$$

ख्याति = औसत लाभ × कुल वर्षों की संख्या

विचारणीय लाभ को असामान्य हानियों, असामान्य लाभों, अशुद्धियों तथा गैर-व्यापारिक निवेशों पर प्रभाव के साथ समायोजित करना होगा।

2. अधि लाभ आधार—

नियोजित पूँजी की गणना

सम्पत्ति	xxxxxx
घटायें—दायित्व	xxxxxx
नियोजित पूँजी	xxxxxx

- सामान्य प्रत्याय की गणना
- सामान्य लाभ = नियोजित पूँजी × सामान्य प्रत्याय की दर
- औसत वास्तविक लाभ की गणना
- अधिलाभ = औसत वास्तविक लाभ – सामान्य लाभ
- ख्याति की गणना = अधिलाभ × क्रय वर्षों की संख्या

3. वार्षिकी आधार—

ख्याति = अधिलाभ × वार्षिकी संख्या

4. पूँजीकरण आधार—

$$\text{ख्याति} = \frac{\text{अधिलाभ}}{\text{प्रत्याय की सामान्य दर}}$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चुनाव करें—

1. सीता और गीता साझेदार हैं जिनका लाभ-हानि अनुपात 4:1 है। मीता मैनेजर है जो साझेदारी से ₹ 4,000 प्रतिमाह वेतन लेती है इसके अलावा शुद्ध लाभ पर 5% कमीशन (लाभ में से कमीशन घटाने के बाद) लेती है। इस साल का लाभ ₹ 6,78,000 वेतन देने से पहले है। मीता का पारिश्रमिक ज्ञात कीजिए।

   (a) ₹ 78,000

   (b) ₹ 88,000

   (c) ₹ 87,000

   (d) ₹ 76,000

2. X, Y और Z एक फर्म में साझेदार हैं। विघटन के समय तीन वर्षों का लाभ तीनों साझीदारों को अंतरित कर दिया। साझेदारों की पूँजी पर ब्याज देने से पहले लाभ ₹ 6,000 था और Y को 24% प्रतिवर्ष की दर से उसके ऋण 80,000 पर ब्याज देना है यहाँ उनके बीच कोई समझौता नहीं है। क्रमशः X, Y और Z को देय राशि की गणना कीजिए।

   (a) प्रत्येक साझेदार को ₹ 2,000

   (b) X को ₹ 4,400 की हानि तथा Y & Z ₹ 14,800 घर ले जायेंगे।

   (c) X को ₹ 400, Y के लिए ₹ 5,200 तथा Z को भी ₹ 400

   (d) ₹ 2,400 प्रत्येक साझीदार को।

3. अंतिम तीन वर्षों का लाभ क्रमशः ₹ 42,000, 39,000 और 45,000 था। 2 वर्षों के क्रय आधार ख्याति की गणना कीजिए।

   (a) ₹ 42,000

   (b) ₹ 84,000

   (c) ₹ 1,26,000

   (d) ₹ 36,000

4. दी गई जानकारी का उपयोग करते हुए पूँजीकरण विधि से फर्म की ख्याति की गणना कीजिए।

   फर्म में कुल विनियोजित पूँजी ₹ 8,00,000

   प्रत्याय की उचित दर 15%

   वर्ष का लाभ ₹ 12,00,000

   (a) ₹ 82,00,000

   (b) ₹ 12,00,000

   (c) ₹ 72,00,000

   (d) ₹ 42,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

5. X और Y 2 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि का विभाजन करते हैं। उन्होंने Z को नये साझेदार के रूप में प्रवेश दिया और नया लाभ-हानि अनुपात 3 : 2 : 1 होगा। Z ख्याति के लिए ₹ 4,500 प्रीमियम लाता है। ख्याति का कुल मूल्य होगाः
   (a) ₹ 4,500
   (b) ₹ 18,000
   (c) ₹ 27,000
   (d) ₹ 24,000

6. X, Y और Z साझेदार हैं जिनका लाभ–हानि अनुपात 5:3:2 में वितरण करते हैं। भविष्य में उन्होंने अपना लाभ-हानि अनुपात 2:3:5 में वितरित करने का निर्णय लिया। उस तिथि पर स्थिति विवरण में दिये गये कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष का लेखांकन उपचारः
   (a) साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बँटवारा
   (b) साझेदारों में नए लाभ विभाजन अनुपत में बँटवारा
   (c) साझेदारों में पूँजी अनुपात में बँटवारा
   (d) बगैर किसी समायोजन के नए चिठ्ठे में ले जाया जाएगा।

7. A और B साझेदार हैं जिनका लाभ-हानि अनुपात 5:3 है। उन्होंने C को लाभ का 3/10 लाभ पर प्रवेश दिया। यदि C 1/3 भाग A से तथा 1/10 भाग B से प्राप्त करता है तो नया लाभ-हानि अनुपात होगा।
   (a) 5 : 6 : 3
   (b) 2 : 4 : 6
   (c) 18: 24 : 38
   (d) 17: 11: 12

8. जाने वाला साझेदार भविष्य के लाभों को बचे हुए साझेदारों के लिए छोड़ने पर क्षतिपूर्ति प्राप्त करेगा। इस क्षतिपूर्ति की राशि को बचे हुए साझेदार किस अनुपात में अंशदान करेंगे।
   (a) बढ़त अनुपात
   (b) पूँजी अनुपात
   (c) त्याग अनुपात
   (d) लाभ विभाजन अनुपात

9. A, B और C जिनकी पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000, 75,000 और 50,000 है तथा उनका लाभ-हानि अनुपात 3:2:1 है। B अवकाश ग्रहण करता है। A और B के बीच नया अनुपात 3:1 है। A और C की पूँजी ज्ञात कीजिए।
   (a) ₹ 1,50,000 तथा ₹ 1,00,000
   (b) ₹ 1,46,250 तथा ₹ 42,000
   (c) ₹ 1,56,250 तथा ₹ 68,750
   (d) ₹ 86,250 तथा ₹ 46,250

© The Institute of Chartered Accountants of India

10. उचित समझौते के अभाव में, मृतक साझेदार का प्रतिनिधि मृतक साझेदार के भाग को निम्न मदों को प्राप्त करने का अधिकारी है।

(a) तिथि तक का लाभ, ख्याति, पूँजी पर ब्याज, पुनर्मूल्यांकित सम्पत्तियों तथा दायित्वों में हिस्सा

(b) पूँजी, ख्याति, पूँजी पर ब्याज, पुनर्मूल्यांकित सम्पत्तियों तथा दायित्वों में हिस्सा

(c) पूँजी, तिथि तक का लाभ, ख्याति, पूँजी पर ब्याज, पुनर्मूल्यांकित सम्पत्तियों तथा दायित्वों में हिस्सा

(d) पूँजी, तिथि तक का लाभ, ख्याति, पुनर्मूल्यांकित सम्पत्तियों तथा दायित्वों में हिस्सा

[**उत्तर** (Answer)—1. (a); 2. (c); 3. (b); 4. (c); 5. (c); 6. (a); 7. (d); 8. (a); 9. (c); 10. (d)]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

11. नये साझेदार के प्रवेश के समय सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्य में समायोजन करना क्यों जरूरी है।

12. पुनर्मूल्यांकन खाता क्या है ? इससे किस उद्देश्य की पूर्ति होती है ?

13. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए—

(i) बढ़त अनुपात

(ii) पूँजी अनुपात

(iii) त्याग अनुपात

14. नये साझेदारों के प्रवेश के समय ख्याति के लेखांकन उपचार समझाइए जब ख्याति को साझेदारों के पूँजी खातों से समायोजित किया जाता है।

III. दीर्घ उत्तीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

15. साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर ख्याति का लेखा पुस्तकों में क्या उपचार होता है? वर्णन कीजिए।

16. ख्याति की गणना की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

17. राम और रहीम बराबर के साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 2008 को राम ने अवकाश ग्रहण करने का निर्णय लिया और उसका बेटा सुरेश 1 जनवरी, 2009 से साझेदारी में प्रवेश करेगा। उसका लाभ का भाग 1/3 है।

फर्म का 31 दिसम्बर, 2008 का तुलन पत्र नीचे दिया गया है।

दायित्व	**राशि**	**सम्पत्ति**	**राशि**
विविध लेनदार	14,700	ख्याति	15,000
पूँजी—		भूमि तथा भवन	40,050
राम	54,300	मोटर कार	12,000
रहीम	48,000	उपस्कर	9,300
		विविध देनदार	24,150
		रोकड़ तथा अधिकोष	16,500
	1,17,000		**1,17,000**

© The Institute of Chartered Accountants of India

साथ ही निम्न निर्णय भी लिए गए—

(i) ख्याति को बढ़ाकर ₹ 20,000 कर दिया।

(ii) राम द्वारा मोटर कार पुस्तकीय मूल्य पर ली जाएगी।

(iii) भूमि और भवन का मूल्य ₹ 8,280 से बढ़ा दिया जाएगा।

(iv) रहीम तथा सुरेश हस्त रोकड़ तथा अधिकोष में ₹ 7,350 की राशि को रखने तथा नये साझेदार की पूँजी उनके लाभ-विभाजन अनुपात में समानुपातिक करने के पश्चात् राम की पूँजी के भुगतान हेतु पर्याप्त राशि लायेंगे।

(v) सुरेश के द्वारा लायी गयी पूँजी उसके पिता राम द्वारा उसे तोहफे में दी गई।

(vi) नये साझेदारों ने ख्याति को तुलन-पत्र में नहीं दिखाने का निर्णय लिया।

ऊपर दी गई व्यवस्थाओं का साझेदार के पूँजी खाते तथा नये साझेदार के आने के बाद तुलन-पत्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

18. गोपाल और गोविन्द साझेदार हैं जिनका लाभ-हानि अनुपात 60:40 है। 31.03.2008 को फर्म का तुलनपत्र निम्न है :

दायित्व	**राशि**	**सम्पत्ति**	**राशि**
पूँजी खाते		स्थायी सम्पत्ति	3,00,000
गोपाल	1,20,000	निवेश	50,000
गोविन्द	80,000	चालू सम्पत्ति	2,00,000
दीर्घ अवधि ऋण	2,00,000	अग्रिम एवं ऋण	1,00,000
चालू दायित्व	2,50,000		
	6,50,000		6,50,000

वित्तीय कठिनाइयों के कारण, उन्होंने 01.04.2008 को निम्न शर्तों पर गुरु को फर्म में साझेदार बनाने का निर्णय लिया।

गुरु को फर्म का 40% लाभ दिया जाएगा।

गुरु अपने भाग की पूँजी के लिए ₹ 1,00,000 लायेगा। उन्होंने निर्णय लिया कि फर्म की ख्याति की गणना 3 वर्षों के सामान्य औसत लाभ के आधार पर 2 वर्षों के क्रय से की जाएगी। गुरु अपने भाग की ख्याति के लिए रोकड़ लायेगा और यह भी निर्णय लिया गया कि साझेदारों द्वारा उनके भाग की ख्याति का आहरण नहीं किया जायेगा और न ही उसको फर्म की बही में दिखलाया जाएगा।

पिछले तीन वर्षों का लाभ निम्न है—

31.03.2006 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ₹ 20,000 (₹ 40,000 का बीमा दावा सम्मिलित करते हुए)

31.03.2007 को समाप्त होने वाले वर्ष की हानि ₹ 80,000 (स्वैच्छिक सेवानिवृत क्षतिपूर्ति ₹ 10,000 को सम्मिलित करते हुए)

31.03.2008 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ₹ 1,05,000 (सम्पत्ति विक्रय पर लाभ ₹ 25,000 सम्मिलित करते हुए)

© The Institute of Chartered Accountants of India

31.03.2008 को सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन मूल्य निम्न है—

	₹
स्थायी सम्पत्ति शुद्ध	4,00,000
निवेश	NIL
चालू सम्पत्ति	1,80,000
अग्रिम एवं ऋण	1,00,000

गुरु के साझेदार बनने के बाद नया लाभ–हानि अनुपात 35:25:40 है।

साझेदार के प्रवेश की पंजी प्रविष्टि कीजिए। ख्याति की गणना कीजिए। पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइए तथा गुरु के प्रवेश के पश्चात् साझेदार पूँजी खाता तथा तुलनपत्र 01.04.2008 को बनाइए।

19. 31.03.2008 को मैसर्स राम, राहुल और रोहित जो अपना लाभ-हानि पूँजी अनुपात में बांटते हैं। उनका तुलनपत्र निम्न है :

	₹	₹		₹
पूँजी खाते			भूमि एवं भवन	2,00,000
राम	3,00,000		संयंत्र	2,00,000
राहुल	2,00,000		अंतिम स्कन्ध	1,00,000
रोहित	1,00,000	6,00,000	विविध देनदार	2,00,000
विविध लेनदार		2,00,000	रोकड़ एवं अधिकोष	1,00,000
		8,00,000		**8,00,000**

31.03.2008 को राम ने अवकाश ग्रहण करने का निर्णय लिया। शेष साझेदारों ने फर्म को जारी रखने का निर्णय लिया। निम्नलिखित आधार पर सम्पत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करने का निर्णय लिया।

1. भूमि एवं भवन को 30% से बढ़ाया जायेगा।
2. संयंत्र को 20% से ह्रासित किया जायेगा।
3. अंतिम स्कन्ध का मूल्य ₹ 80,000 किया गया।
4. अशुद्ध ऋण के लिए 5% प्रावधान बनाया जायेगा।
5. विविध लेनदारों का पुराना जमा (Credit Balance) ₹ 10,000 को वापस लिखा जाना है।
6. फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 1,80,000 है। राम के भाग की ख्याति को राहुल और रोहित के पूँजी खातों से समायोजित किया जायेगा जो अपने भविष्य के लाभों को बराबर बाँटेंगे। ख्याति खाता नहीं बनाया जायेगा।
7. फर्म की पूँजी अवकाश ग्रहण से पहले जितनी थी उतनी ही रहेगी। व्यक्तिगत पूँजी उनके लाभ अनुपात में होगी।

© The Institute of Chartered Accountants of India

8. राम पर देय राशि का निम्न प्रकार से निपटान किया जायेगा—

(a) 50% अवकाश ग्रहण पर।

(b) शेष 50% एक साल के भीतर।

पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाता, राम का ऋण खाता, रोकड़ खाता और 01.04.2008 को मैसर्स राहुल और रोहित का तुलनपत्र बनाइए।

20. दिया गया तुलनपत्र Om & Co. का है जिसमें 31.03.2008 को X, Y और Z साझेदार हैं जिनका लाभ–हानि अनुपात 1:2:2 है। 31-10-2008 को Z की मृत्यु हो गई। उनका खाता निम्न प्रकार से निपटान किया गया।

Om & Co. का 31-03-2008 को तुलनपत्र

दायित्व		₹	सम्पत्ति	₹
विविध लेनदार		20,000	ख्याति	30,000
अधिकोष ऋण		50,000	भवन	120,000
सामान्य संचय		30,000	संगणक	80,000
पूँजी खाते —			स्कन्ध	20,000
X	40,000		विविध लेनदार	20,000
Y	80,000		अधिकोष में रोकड़	20,000
Z	80,000	2,00,000	निवेश	10,000
		3,00,000		**3,00,000**

ख्याति की गणना तीन वर्षों के औसत लाभ के आधार पर दो क्रय वर्षों से की जाएगी। तीन वर्षों के लाभ–हानि निम्न प्रकार से हैं—

	लाभ / हानि
31-03-2008	30,000
31-03-2007	20,000
31-03-2006	(10,000) हानि

01-04-2008 से 31-12-2008 तक की अवधि के लाभ की गणना पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के आनुपातिक की जाएगी।

31-03-2008 के अन्त में एक कार जो 01-04-2007 को ₹ 40,000 की खरीदी थी उसको यात्रा व्यय में नाम (Dr.) कर दिया जिस पर 20% वार्षिक पर ह्रास की गणना की जाएगी। इस सम्पत्ति को खातों में उसके ह्रासित मूल्य पर लाना है।

अन्य सम्पत्तियों का मूल्य निम्न प्रकार से है :

स्कन्ध ₹ 16,000, भवन ₹ 1,40,000, संगणक ₹ 50,000, निवेश ₹ 6,000, विविध देनदार सारे अच्छे हैं।

आपको साझेदारों का पूँजी खाता एवं 31-12-2008 को Om & Co. का तुलनापत्र यह मानते हुए बनाना है कि अन्य सम्पत्तियां और दायित्व पहले जैसे ही हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

21. A और B एक फर्म में साझेदार हैं जिनका लाभ-हानि अनुपात 2 : 1 है। उन्होंने निर्णय लिया कि 01-01-2008 से वे अपना लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 में बाँटेंगे परन्तु यह निर्णय 2008 के लाभ ₹ 30,000 को पुराने अनुपात में वितरित करने के बाद लिया गया। निर्णय के प्रभावी होने की तिथि के पूर्ववर्ती दो वर्षों में कुल लाभों पर ख्याति को मूल्यांकित किया गया। 2005, 2006, 2007 का लाभ क्रमशः 15,000, 20,000 और 25,000 है। यह निर्णय लिया गया कि ख्याति खाता न खोलकर सारे आवश्यक समायोजन पूँजी खातों में ही किये जायेंगे। 31-12-2008 को A का शेष ₹ 50,000 तथा B का ₹ 30,000 है। आवश्यक पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

15

कम्प्यूटरीकृत परिवेश में लेखांकन

[ACCOUNTING IN COMPUTERISED ENVIRONMENT]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **कम्प्यूटरीकृत पर्यावरण में लेखांकन सम्बन्धी मुख्य विशेषताएँ तथा उनके महत्त्व जानने में।**
- **खातों के समूहीकरण एवं वर्गीकरण को समझने में।**
- **खाताबहियों के वर्गीकरणों के साथ परिचित होने में।**
- **लेखांकन पैकेज के अर्थ एवं महत्त्व एवं उनके चयन हेतु विचारों को समझने में।**

1. परिचय

(INTRODUCTION)

अब तक विद्यार्थी लेखांकन की अवधारणाओं तथा विभिन्न स्थितियों में लेखांकन की विभिन्न विधियों को कैसे अपनायें, के साथ परिचित हो गये होंगे। अब हम सब कम्प्यूटरीकृत परिवेश में लेखांकन को देखेंगे। पहली तथा महत्वपूर्ण बात को याद रखें कि, लेखांकन के मूल सिद्धांतों में कोई बदलाव नहीं होता है चाहे लेखे की पुस्तकें हस्तचलित रखी जाएँ या कम्प्यूटरीकृत हों। डेबिट तथा क्रेडिट के वही सिद्धांत समान रूप से एक कम्प्यूटरीकृत परिवेश में लागू होते हैं, जैसे कि हम हस्तचलित (manual) लेखांकन प्रणाली में आय या व्यय, संपत्ति के क्रय या विक्रय या दायित्वों की उत्पत्ति या मुक्ति के अभिलेखन हेतु लागू करते हैं। हालांकि, बाद में हार्ड कॉपी दस्तावेजों की तुलना में अभिलेखन माध्यम कुछ अलग होते हैं और कम्प्यूटरीकृत परिवेश में जब लेखांकन किया जाता है, तब तथ्यों (Data) के इनपुट, प्रक्रियागत तथा आउटपुट हेतु साफ्टवेयर पर पर्याप्त निर्भरता रखते हुये कुछ निश्चित एहतियात, कार्य-प्रणालियों एवं तकनीकों को अपनाया जाता है।

2. कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ

(SALIENT FEATURES OF COMPUTERISED ACCOUNTING SYSTEM)

कम्प्यूटर सूचना प्रणाली परिवेश मौजूद होता है, जब किसी भी प्रकार या आकार के एक या अधिक कम्प्यूटर लेखांकन सूचनाओं की प्रक्रिया, मात्रात्मक तथ्यों (Data) सहित अंकेक्षण हेतु महत्व के

© The Institute of Chartered Accountants of India

मौजूद हैं, चाहे वे कम्प्यूटर्स संस्था द्वारा या किसी तीसरे पक्ष द्वारा इसलिए एक कम्प्यूटर लेखांकन परिवेश में निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ होंगी :

1. वित्तीय सूचनाओं की प्रक्रिया एक या अधिक कम्प्यूटर द्वारा होगी।
2. कम्प्यूटर या कम्प्यूटरों का संचालन संस्था द्वारा या किसी तीसरे पक्ष द्वारा किया जा सकता है।
3. एक या अधिक कम्प्यूटर साफ्टवेयर्स की सहायता के साथ कम्प्यूटर साफ्टवेयर्स की सहायता के साथ कम्प्यूटर द्वारा लेखांकन सूचनाओं को प्रक्रियागत किया जा सकता है जैसे कि टैली।
4. एक कम्प्यूटर साफ्टवेयर में सम्मिलित कोई कार्यक्रम (Program) या दस्तूर (Routine), जो कि इच्छित कार्यों (Function) या कार्यों के समूह को प्रदर्शित करते हैं और उन कार्यक्रम या दस्तूरों को वर्णित एवं कायम रखने हेतु आवश्यक विपत्र शामिल हैं।
5. लेखांकन प्रणाली हेतु प्रयुक्त कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, अधिगृहीत सॉफ्टवेयर हो सकता है या व्यवसाय हेतु विकसित किया जा सकता है।
6. अधिगृहीत सॉफ्टवेयर, किसी स्प्रेडशीट (spread sheet) पैकेज से मिलकर बना हो सकता है या प्री-पैकेज एकाउण्टिंग सॉफ्टवेयर से भी बनाये जा सकते हैं। बड़े व्यावसायिक संगठन ERP पैकेज का प्रयोग निम्न कर सकते हैं :
   (i) Developing a customised accounting package is an option that some organisation prefers so as to suit the peculiarities of their business function.
   (ii) Outsourcing of the accounting system is also becoming popular where an organisation is having the financial accounting processed from a third party.

3. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली का महत्त्व
(SIGNIFICANCE OF COMPUTERISED ACCOUNTING SYSTEM)

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली का महत्त्व आज तक व्यवसाय में कम्प्यूटरों के अधिकारिक प्रयोग होने से यह स्वाभाविक है कि पहले जो लेखे हस्तलिखित रूप में तैयार किये जाते थे। धीरे-धीरे कम्प्यूटरीकृत लेखांकन के द्वारा हटा दिया जायेगा। लेखे तैयार करने की तीव्रगति में वृद्धि से अब कई गुना उच्चतर गति से लेखे तैयार हो सकते हैं।

साधारण खाता बही तथा सहायक खाता बही में ठीक पोस्टिंग, तलपट के शेष मिलान जैसी उत्पन्न होने वाली प्रारम्भिक कठिनाइयाँ अब बीते दिनों की बात हो गई है। आजकल कम्प्यूटर पर लेखे करते समय किसी भी व्यक्ति को इस पर ध्यान देना नहीं पड़ता कि जगह व्यय सम्बन्धी प्रविष्टि नगद भुगतान सूचना पट पर अंकित होने से रह गई है और सम्बद्ध खाताबही खतौनी में व्यय की खतौनी उचित प्रकार से हुई है या नहीं। इसी तरह तलपट की शेष राशियों को अपने आप मिल जानी चाहिए जब तक कि प्रारम्भिक शेषों के अभिलेखन में कोई त्रुटि न हुई हो। वर्तमान में चिन्ता का विषय केवल यह है कि कम्प्यूटर के अन्दर हाईप्रिन्ट में ही नहीं, बल्कि सॉफ्ट कॉपी में भी अधिक-से-अधिक सूचना संग्रहित की जाये। कम्प्यूटर प्रणाली के नियंत्रण, सुरक्षा एवं समग्रता की वृद्धि को बढ़ा दिया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्थायित्व क्षेत्रीय नेटवर्क अथवा इन्टरनेट के सहायक से कम्पनी तिरकों में हॉकिन्स द्वारा कम्प्यूटर प्रचलन में आँकड़ों की अवधिकृत अभिवृद्धि एक सम्भावित धमकी है।

4. खातों के वर्गीकरण एवं समूहीकरण

(CODIFICATION AND GROUPING OF ACCOUNTS)

एक हस्तचलित लेखा प्रणाली जहाँ खाता कोड (कूट) शायद ही इस्तेमाल किया जाता है। इसके विपरीत एक कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली अक्सर एक अच्छी तरह से परिभाषित कूट (कोडिंग) प्रणाली का उपयोग करते हैं, लेकिन इसका निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि कम्प्यूटरीकृत लेखों में खाते कोड होना आवश्यक है।

ऐसे बहुत से लेखांकन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जो कि कूट (कोड) रहित लेखांकन प्रणाली को सार्थकता प्रदान करते हैं। यहाँ पर खातों के अलग-अलग शीर्षक हैं तथा जटिलता भी उच्च है, जिसके कारण वहाँ कोडित लेखा प्रणाली अधिक सुविधाजनक एवं अनुकूल है तथा इस प्रणाली में इस बात की संभावना भी कम हो जाती है कि एक ही खाता जो कई नामों से जाना जा रहा है, जिसका करण वर्तनी में गलती या लघुरूप हो।

वर्तनी की अशुद्धि या लघु रूप के प्रयोग के कारण विभिन्न नामों से मौजूद हो।

एक उचित संहिताकरण के लिए (लेखों) एक व्यवस्थित समूहन की आवश्यकता है। बड़े समूहों या शीर्षकों जैसे सम्पत्तियों, दायित्वों, राजस्व रसीदों, पूँजी रसीद, राजस्व व्यय, पूँजी व्यय हो सकते हैं। उप समूहों अथवा लघु शीर्षकों के अन्तर्गत नगद रोकड़, प्राप्त बिल अथवा देय बिल आदि हो सकते हैं। समूहन और संहिताकरण संगठन के प्रकार और उपविभाजन की सीमा तक लाभ केन्द्रों या उत्पादन लाइनों के आधार पर रिपोर्ट करने के लिए की आवश्यकता पर निर्भर है।

यहाँ पर वर्गीकरण भौगोलिक स्थिति पर ही आधारित हो सकता है।

(a) खातों में वर्गीकरण की मुख्य इकाई प्रमुख होना चाहिए, जो मामूली शीर्षक में विभाजित किया जाना चाहिए, जिनमें से प्रत्येक सहायक शीर्षक की एक संख्या होनी चाहिए, जो कि सामान्यतया उप प्रमुख के रूप में दिखाया गया है।

इन्हें आगे विस्तार के शीर्षक में विभाजित किया जाता है। कभी-कभी प्रमुख शीर्षक को उप प्रमुख शीर्षकों में उनमें विभाजन के पहले (सहायक) लघु शीर्षकों में विभाजित किया जाता है।

प्रमुख शीर्षक, लघु शीर्षक, अति लघु शीर्षक तथा विस्तार परस्पर मिलकर मुख्य प्रारूप की वर्गीकरण की चतुर्थ श्रेणी व्यवस्था का निर्माण करते हैं।

(b) लेखों के मुख्य शीर्षक, आगम खातों के अंदर उतरते हुए कंपनी के व्यापार की विभिन्न गतिविधियों के अनुरूप करते हैं। जैसे—कारों का निर्माण, कारों का शोधन करना, कारों की मरम्मत तथा रख-रखाव करना। जबकि उन्हें लघु शीर्षक उन्हें अधीनस्थ शीर्षक विशेष विनिर्माण गतिविधियों की पहचान करता है। जैसे—बड़ी कार का निर्माण, अतिरिक्त पुर्जे आदि का निर्माण करना। एक बड़ी कार के निर्माण में कई गतिविधियाँ मौजूद होती हैं। जैसे—चेसिस, दरवाजे, फ्रन्ट पैनल, रियर पैनल आदि का निर्माण होता है। ये सब कार निर्माण की प्रक्रिया के मुख्य कार्य हैं। प्रतिनिहित लघु शीर्षक के नीचे सहायक शीर्षक के सम्बद्ध होंगे।

(c) एक विस्तृत शीर्षक अक्सर एक वस्तु वर्गीकरण के रूप में जाना जाता है। उपरोक्त उदाहरण में व्यय लेखा पर विचार करते समय सविस्तार शीर्षक का मुख्य उद्देश्य एक मद के आधार संबंधी व्यय को नियंत्रित करने के साथ ही उसी समय विषयों का समूह या वर्ग उनकी प्रकृति के अनुसार बनाना है। ऐसे सविस्तार शीर्षकों के उदाहरण वेतन, कार्यालय व्यय, विक्रय प्रतिनिधि व्यय, कार्यशाला, उपरिव्यय आदि हो सकते हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(d) सभी लेखा अभिलेखनों के अंतर्गत प्रदर्शित प्रमुख तथा लघु शीर्षक का क्रम, जिनमें उन्हें रखा गया है तथा लेखा शीर्षकों का विस्तृत वर्गीकरण, व्यावसायिक संस्थान के उच्चतर प्रबंधन से अनुमोदित होना चाहिए तथा कम्प्यूटरीकृत लेखांकन परिवेश के अन्तर्गत उसके समाविष्ट कराने से पहले अंकेक्षक द्वारा उस पर पुनर्विचार आवश्यक है।

5. खाता बहियों के सोपानात्मक संगठन का रख-रखाव

(MAINTAINING THE HIERARCHY OF LEDGERS)

एक बार खातों का विभिन्न समूहों में वर्गीकरण पूर्ण होने तथा प्रमुख, लघु, उप एवं विस्तृत शीर्षक के गठन के बाद संहिताकरण करके उन्हें कम्प्यूटर प्रणाली में डाला जाना आवश्यक है। खातों की नियमावली एवं विवरण सहित एकाउन्ट मास्टर की फाइल (दस्तावेज) बनाई जाती है।

कुछ लेखांकन सॉफ्टवेयर मुख्य खाता-बहियों से पूरक खातों एक खातों को बनाने की सहमति देते हैं। सहायक खातों बही को पुनः उप-सहायक खाता बही में विभाजित किया जा सकता है, जिनका विभिन्न लाभ केन्द्रों के अन्तर्गत समूहीकरण होता है। ये विशेष रूप से वहाँ उपयोग होते हैं, जहाँ खातों का रख-रखाव बिना नियमावली (कोड) के किया जाता है। संहिताकरण (नियमावली) प्रणाली में प्रमुख, लघु, उप तथा विस्तृत शीर्षकों को कोड आवंटन के द्वारा तथा उसके बाद इन संहिता (कोड, नियमावली) पर आधारित रिपोर्ट आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

सामान्य खाता बही तथा सहायक खाता बही (अतिरिक्त, उप या सहायक) खाता बही जैसा कि कुछ सॉफ्टवेयर में उपलब्ध है। अन्य खाताबहियों जो प्रामाणिक लेखांकन सॉफ्टवेयर द्वारा स्वतः ही बनाई होती है। ये देनदारी खाता तथा लेनदारी खाता है। लेखा शीर्षक को बनाते समय कुछ लेखा शीर्षक इस प्रणाली में रोकड़ खाता, बैंक खाता, देनदारी खाते तथा लेनदारी खाते के रूप में निर्देशित किए जाते हैं। इसके बाद जब भी कोई प्रविष्टि रोकड़ खाते तथा बैंक खाते में करने पर कम्प्यूटर स्वतः ही उसे प्रतिवेदन में प्रति करता है। इसी तरह जब विक्रय सौदे होते हैं, तो उसका प्रभाव देनदार खातों में तथा क्रय-सौदे होते हैं, तो उसका प्रभाव लेनदार खातों में प्रदर्शित होता है। दूसरी महत्वपूर्ण खाता बही, माल-तालिका सूची है, जो सर्वाधिक प्रामाणिक लेखांकन पैकेज के भाग का ही एक रूप है। सामान्य लेखांकन सॉफ्टवेयर्स में ये केवल विवरण सूची में उल्लिखित मदों (विवरण सूची में उल्लिखित सामग्री के मूल्यांकन किये बिना संबंधी गतिविधि की जानकारी दे सकती हैं यद्यपि अनेकों पैकेज औसत भारित आदि FIFO, LIFO जैसे कास्टिंग सेट की विधि पर आधारित माल तालिका सूची में उल्लिखित सामग्री के मूल्यांकन का विकल्प।

6. लेखांकन पैकेजों के चयन पर विचार

(ACCOUNTING PACKAGES AND CONSIDERATION FOR THEIR SELECTION)

(क) जैसा कि हमें पहले से ज्ञात है कि कम्प्यूटरीकृत परिवेश में खाते स्प्रेड शीट पैकेज प्रयोग करके भी बनाए जा सकते हैं।

(ख) ऐसा करने के लिए प्रयोगकर्ता की स्प्रेड शीट, सॉफ्टवेयर के आँकड़ों पर नियंत्रण करने हेतु अपने ज्ञान एवं कुशलता का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) विशिष्ट स्प्रेडशीट नियंत्रणों जिनमें भौतिक स्प्रेड शीट, नियंत्रणों, जैसे—पासवर्ड सहित सूत्रों एवं पासवर्ड संरक्षित सैलों तथा पढ़ने-लिखने संबंधी गति नियंत्रण एवं प्रतिबंधित गति नियंत्रण समेत संरक्षित शेयर ड्राइव पर तालाबंद स्प्रेड शीट प्रयोग किये जाने चाहिए।

(घ) स्प्रेडशीट सॉफ्टवेयर खातों के समूह, कक्ष की सामग्री, सूत्रों तथा मैक्रोज, टेबल धुरी, गणना और कार्य जो खातों के रख-रखाव में मदद की प्रतिकृति अनुमति देते हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ङ) एक स्प्रेडशीट की सीमाओं हो सकता है कि दोहरी प्रविष्टि स्वचालित रूप से नहीं पूरा हो गया है जिससे उपयोगकर्ताओं को सूत्रों या अन्य साधनों का सेट करने के लिए दोहरी प्रविष्टि को पूरा करने के लिए की आवश्यकता है। इसके अलावा, जहाँ डेटा की बड़ी संख्या शामिल है स्प्रेडशीट सॉफ्टवेयर काम नहीं कर सकते, यह भी एक लैनवातावरण में जहां उपयोगकर्ताओं को एक साथ एक स्प्रेडशीट का उपयोग की आवश्यकता हो सकती है मुश्किल हो सकता है।

लेखांकन के साधन के रूप में स्प्रेड शीट सॉफ्टवेयर के सारांश रूप में लाभ—

(1) ये प्रयोग करने में सरल तथा समझने में आसान हैं।

(2) बहुत से आम पदवी जैसे—गणनायें करना, सेटिंग सूत्रों, सूत्रों के स्थापन में क्रॉस, कक्ष सामग्री की प्रतिकृति आदि स्प्रेडशीट के अंतर्गत आसानी से किया जा सकता है।

(3) खातों का समूहीकरण एवं पुनर्समूहीकरण किया जा सकता है।

(4) प्रस्तुति विभिन्न रूपों में जिसमें भौगोलिक प्रस्तुतियाँ जैसे बाट, डायग्राम, हिस्टोग्राम, पाई चार्ट आदि शामिल है।

(5) मूलभूत संरक्षण जैसे प्रतिवदित प्रवेश एवं पासवर्ड की सुरक्षा कोष्ठिका प्रयोग में लाई जाती है, जिससे बचाव मिलता है स्प्रेडशीट के आँकड़ों को।

लेखांकन साधन के रूप में स्प्रेडशीट संबंधित हानियाँ—

(1) इसमें आँकड़ों की सीमा निर्धारण है जो पैकेट पर निर्भर है। ये केवल विशिष्ट सीमा तक ही आँकड़े स्वीकार करते हैं।

(2) नेटवर्क पर समकालिक प्रवेश संभव नहीं है। आधुनिक वर्तमान सॉफ्टवेयर्स तालिका का ताला जब अचेतन करने की जगह ले रही है, जबकि स्प्रेडशीट में यह संभव नहीं है।

(3) दोहरी प्रविष्टि स्वतः अपने आप नहीं हो सकती। सूत्र और अन्य साधन अपनाये जाते हैं दोहरी प्रविष्टि पूरी करने के लिए।

(4) रिपोर्ट स्वतः अपने आप उत्पन्न अथवा तैयार नहीं होती है, बल्कि प्रयोगकर्ता को नियंत्रित करना होता है। हर बार एक प्रतिवेदन को मुद्रित किया जाता है, सैटिंग्स को चेक करना पड़ता है तथा आँकड़ों के क्षेत्र को सेट करना पड़ता है। कई लेखांकन सॉफ्टवेयर में इस स्वचालित रूप में प्रोग्राम के द्वारा होता है।

7. प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर

(PRE-PACKAGED ACCOUNTING SOFTWARE)

इस समय बाजार में अनेकों प्री-पैकेज लेखांकन सॉफ्टवेयर उपलब्ध है, जो अधिकाधिक लघु एवं मध्यम आकार के व्यावसायिक प्रयोग करने में आसान है। इन सॉफ्टवेयर का अपेक्षाकृत सस्ती एवं आसानी से प्रयोग करना था। इन सॉफ्टवेयर्स की स्थापना अत्यन्त सरल है। सॉफ्टवेयर के साथ एक स्थापन डिस्कैट अथवा सीडी दी जाती है जो पर्सनल कम्प्यूटर पर सॉफ्टवेयर की स्थापना करने में प्रयोग की जाती है।

इन सॉफ्टवेयर का नेटवर्क वर्जन भी सामान्यतया उपलब्ध है जिसको विवरण कर्ता के अवस्था वित्त करना आवश्यक होता है और जिस पर विभिन्न-विभिन्न work stations या सर्वर से जुड़े हुए Nodes पर कार्य किया जा सकता है। सॉफ्टवेयर के साथ ही प्रयोगकर्ता को मैनुअल दिया जाता है,

© The Institute of Chartered Accountants of India

जो प्रयोगकर्ता को सॉफ्टवेयर का प्रयोग करना बताता है। सॉफ्टवेयर को स्थापन करने के बाद प्रयोगकर्ता को सॉफ्टवेयर का वर्जन चेक करना आवश्यक हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसे आधुनिकतम नई सामग्री दी गई है।

विक्रेता सामान्यतया आपूर्ति किये जाने वाले में नये कानूनों सम्बन्धी परिवर्तनों के साथ नवीनतम फीचर्स को जोड़ने का ध्यान रखकर नियमित अपडेट्स प्रदान करता है।

इन सॉफ्टवेयर्स में सामान्यतः एक सैक्शन होता है, जो एक कम्पनी के निर्माण संबंधी जानकारी देता है। इसमें कम्पनी का नाम, पता, फोन नम्बर तथा अन्य विस्तृत विवरण जैसे—वैट पंजीकरण संख्या, पैन तथा टैन नम्बर आदि प्रणाली में भरी जाती है। लेखांकन अवधि वित्तीय वर्ष के प्रथम तथा अंतिम दिन सम्मिलित करके सेट कर दी जाती है।

इस सॉफ्टवेयर के प्रयोग का अगला चरण खातों का निर्माण होता है। ऐसा मास्टर फाइलों में अनेक संहिता नियमावली में खातों को जोड़कर किया जाता है। प्रत्येक खाता संपत्ति अथवा दायित्व या आय अथवा व्यय खातों के तौर पर वर्गीकरण किया जाता है। संबंधित खाते के अन्तर्गत अन्य सहायक खातों को इस प्रणाली में निर्देशित किया जाता है।

मास्टर फाइल फाइलों में प्रा. शेषों को भी दिखाया जाता है। कम्पनी पैरामीटर्स को अवधि के ऐसे बिन्दु पर सेट किया जाता है कि खाते जो नगद रोकड़, बैंक, राशि, विविध, देनदारों, विविध लेनदारों की जानकारी इस प्रणाली को हो सके कि ग्राहकों के नाम, पते तथा अन्य प्रारम्भिक विस्तृत विवरण भी कस्टमर मास्टर फाइल में अंकित किये जाते हैं। इसी प्रकार, लेनदारों संबंधी विस्तृत विवरण भी क्रेडिटर मास्टर फाइल फाइलों में दर्ज किया जाता है। उत्पादक संबंधी विस्तृत विवरण भी उत्पादक मास्टर फाइल में अंकित होता है। यहाँ परिमाप की इकाई और प्रारम्भिक रहतियों की मात्रा जिसमें उसका मूल्यांकन की प्रणाली जैसे FIFO, LIFO भारित औसत आदि प्राडक्ट मास्टर फाइल फाइलों में परिभाषित किये गये हैं।

एक बार प्रारम्भिक पैरामीटर्स सेट होने पर एवं मास्टर फाइल्स अपडेट होने पर प्रणाली कार्य शुरू करने के लिए तैयार हो जाता है।

किसी भी प्रामाणिक प्री-पैकेज साफ्टवेयर के संक्षिप्तीकरण हेतु निम्नांकित मास्टर फाइल स्क्रीन पर ये हैं—

- कम्पनी मास्टर फाइल
- लेख मास्टर फाइल
- सहायक खाता बही मास्टर फाइल
- ग्राहक मास्टर फाइल
- विक्रेता मास्टर फाइल
- उत्पादक मास्टर फाइल
- डिवीजन मास्टर फाइल

प्रविष्टि स्क्रीन एक से दूसरे सॉफ्टवेयर तथा एक विक्रेता से दूसरे विक्रेता के मामलों में भिन्न-भिन्न दिखाई तथा प्रतीत हो सकती है। तथापि मूलभूत प्रविष्टि स्क्रीन्स निम्नलिखित है—

- नकद प्राप्तियाँ एवं भुगतान प्रविष्टि
- बैंक प्राप्तियाँ एवं भुगतान प्रविष्टि
- लघु रोकड़ वाउचर प्रविष्टि
- पंजी प्रविष्टियाँ

© The Institute of Chartered Accountants of India

- क्रय आदेश, जी आर एन बिल, क्रय वापसी प्रविष्टि
- बिक्री आदेश, चालान, बीजक, बिक्री वापसी प्रविष्टि
- नामे नोट एवं जमा पत्र प्रविष्टि
- नकद बिक्री एवं क्रय ज्ञापन
- उत्पादन
- उपभोग
- स्कन्ध स्थानान्तरण

प्रत्येक स्क्रीन्स में जोड़ने, संशोधित करने या विलोप करने संबंधी विकल्प दिये जाते हैं। कुछ सॉफ्टवेयर्स में विशिष्ट विकल्प जैसे तिथि संशोधन एवं वाउचर संख्या संशोधन भी दिये जाते हैं।

सॉफ्टवेयर्स के दिये गये अन्य अनुभाग में रिपोर्ट सैक्शन जिसमें कि अधिकांशतः सॉफ्टवेयर्स की निम्नलिखित रिपोर्ट प्रचलित है—

- रोकड़ बही
- बैंक बही
- लघु रोकड़ बही
- क्रय बही
- विक्रय बही
- नकद विक्रय बही
- नकद क्रय बही
- विक्रय वापसी रजिस्टर
- क्रय वापसी रजिस्टर
- पंजी बही
- साधारण खाता बही
- सहायक खाता बही
- देनदार खाता बही
- लेनदार खाता बही
- नामे नोट रजिस्टर
- जमा पत्र रजिस्टर
- स्कन्ध खाता बही
- स्कन्ध शेयर आंदोलन रजिस्टर
- उत्पादन रजिस्टर
- उपभोग रजिस्टर

दस्तावेज मुद्रण विकल्पों जैसे क्रय आदेशों, चालानों एवं बिलों, विक्रय आदेशों, चालानों एवं बिलों, घोषणा प्रपत्र तथा वापसी प्रपत्र का मुद्रण।

- परीक्षण संतुलन
- लाभ एवं हानि खाता
- आर्थिक चिट्ठा

© The Institute of Chartered Accountants of India

कुछ सॉफ्टवेयर्स बैंक समाधान विवरण संबंधी विकल्प प्रदान करते हैं। प्रविष्टि स्क्रीन में शोधन तिथि अनुप्रवेशित की जा सकती है। गृह रख-रखाव विभाग के नाम से भी जाना जाता है। यह संभरण लक्षण प्रणाली भी प्रदान करता है। गृह रख-रखाव विभाग के अंतर्गत बैक अप एवं पुनःनिर्मित लिया जा सकता है।

सॉफ्टवेयर्स के विभाग में सॉफ्टवेयर्स की सफाई एवं पुनः सूची शामिल है।

7.1 प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर के लाभ—

(1) **सुगम प्रतिष्ठापन** : सीडी अथवा परिमाणी डिस्क को अनुप्रवेशित कराकर तथा सेट अप फाइल चलाकर प्रतिष्ठापन कार्य पूरा हो जाता है। कुछ पुराने डॉस (DOS) आधारित लेखांकन सॉफ्टवेयर में प्रयुक्त प्रणाली में सिस्टम-कानफिग्रेशन फाइल तथा सिस्टम बैच फाइल जोड़ी जाने जैसी कुछ व्यवस्था भी आवश्यक है। ये निर्देश सामान्यतः अप्रयोग पुस्तिका में दिये रहते हैं।

(2) **अपेक्षाकृत मितव्यापी** : आजकल यह पैकेजेस बहुत कम दामों में बिकती है।

(3) **प्रयोग में सरल** : अधिकांशतः मेन्यू विकल्पों की सहायता से संचालित होते हैं। तदुपरान्त सॉफ्टवेयर प्रयोग करने में प्रयोगकर्ता को आने वाली मुश्किलों के संबंध में ज्यादातर समस्याओं के समाधान प्रयोग पुस्तिका में दिये रहते हैं।

(4) **साधारण बैंक अप प्रक्रिया** : हाउस कीपिंग विभाग बैक अप हेतु एक मैन्यू देता है। यह बैक अप फ्लॉपी डिस्क, सी. डी. अथवा हार्ड डिस्क पर दिया जा सकता है।

(5) **लचीलापन** : कुछ सॉफ्टवेयर द्वारा उपलब्ध प्रतिवेदन प्रारूपों में निश्चित लचीलापन ये उपयोगकर्ता को बीजक, चालान बनाने देता है और GRNs को वैसे ही दिखाता है जैसा वे चाहते हैं।

(6) **छोटे और माध्यम आकार के व्यवसाय हेतु बेहद प्रभावी** : उनके ज्यादातर कार्य क्षेत्र को मानकीकृत पैकेजस के द्वारा समाहित किया जाता है।

7.2 प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर के दुष्प्रभाव (Disadvantages of Pre-packaged Accounting Software)

(1) **विशिष्ट व्यवसायों की विलक्षणता को समाहित नहीं करता है :** आजकल व्यवसाय ज्यादा-से-ज्यादा जटिल होता जा रहा है। एक मानकीकृत पैकेज शायद इन जटिलताओं का ध्यान नहीं रख पाए।

(2) सभी कार्यात्मक क्षेत्रों को समाहित नहीं करता है।

उदाहरण—उत्पादन प्रक्रियाएँ ज्यादातर प्री-पैकेज लेखांकन सॉफ्टवेयर द्वारा समाहित नहीं की जाती।

(3) **ज्यादातर इन सॉफ्टवेयरों में अनुकूलता संभव नहीं है :** इस सॉफ्टवेयर के विक्रेता किसी मौजूदा स्रोतों में अधिक बिक्री पर विश्वास करते हैं।

(4) **उत्पन्न प्रतिवेदन पर्याप्त नहीं होता या उद्देश्यपूर्ण नहीं होता :** आधुनिक दिनों की माँगें शायद प्रबंधन को विभिन्न अनेक प्रतिवेदनों के लिए प्रबंधन नियंत्रण की कसरत। ये प्रतिवेदन मानकीकृत पैकेज के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(5) **सुरक्षा की कमी :** कोई भी व्यक्ति सारी कम्पनी के आँकड़ों को एक सार्वजनिक पेठ संकेश शब्द से देख सकता है। पेठ नियंत्रण के चरण जो हम कई अनुकूलित लेखांकन सॉफ्टवेयर पैकेज में दृढ़ पाते हैं सामान्यतः प्री-पैकेज लेखांकन पैकेज में पाये नहीं जाते।

(6) **सॉफ्टवेयर में कीटाणु :** कुछ निश्चित कीटाणु सॉफ्टवेयर में ही रहते हैं और लम्बे समय तक सही नहीं हो पाते और सॉफ्टवेयर के शुरुआती सालों में सामान्य होते हैं।

7.3 प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर के चुनाव के लिए विचार

बाजार में कई लेखांकन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं संगठन के लिए सही लेखांकन सॉफ्टवेयर का चुनाव करना मुश्किल काम है। कुछ मानदण्ड चुनने के लिए ये हैं—

(1) **व्यवसाय आवश्यकताओं की पूर्ति**—कुछ पैकेजेस के पास दूसरे से ज्यादा कार्य ज्यादा होते हैं। उसके बाद भी आर एस रिपोर्ट बनने के लिये सभी अशुद्ध मदें से रिपोर्ट बनाई जाती है।

कुछ सॉफ्टवेयरों द्वारा विशेष रिपोर्ट भी जैसे नकद, बैंक संभरण रिपोर्ट, जो किसी भी तिथि जिस पर नकद रोकड़ अथवा बैंक द्वारा गलती से समाकलित शेष दिखा दिया हो की सुविधा भी दी जाती है।

इसके साथ ही एम आई एस रिपोर्ट जैसे देनदारों का काटन-प्रभावन, धीमी गतियुक्त एवं अचल स्कंध आदि भी है।

(2) **प्रयोग करने में आसानी**—कुछ पैकेज अधिक विस्तृत हो सकते हैं और दूसरों की तुलना में बोझिल हो सकते हैं।

(3) **लागत**—बजटीय सीमा निर्णय लेने में एक महत्वपूर्ण कारक हो सकती है। एक पैकेज अधिक सुविधाओं के बावजूद अत्यधिक लागत की वजह से शामिल नहीं किया जा सकता।

(4) **विक्रेता की प्रतिष्ठा**—विक्रेता का संबल किसी भी सॉफ्टवेयर के लिये आवश्यक है। प्रतिष्ठा और अच्छे ट्रेक रिकॉर्ड के साथ एक मजबूत विक्रेता को हमेशा प्राथमिकता दी जायेगी।

(5) **नियमित अद्यतन**—विधि बार-बार बदलती रहती है। एक विक्रेता जो अद्यतन देने के लिये तैयार है। वह हमेशा उस विक्रेता से आगे रहेगा जो अद्यतन देने के लिये तैयार नहीं है।

8. परम्परागत लेखांकन सॉफ्टवेयर

(CUSTOMISED ACCOUNTING SOFTWARE)

एक अनुकूलता लेखांकन सॉफ्टवेयर वह है, जिसमें व्यावसायिक प्रतिष्ठान द्वारा दिये गये आवश्यकता सम्बन्धी विशिष्टीकरण के आधार पर सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। कस्टमाइज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर का चयन व्यवसाय के विशिष्ट प्रकृति के होने अथवा वह कार्य जिसके कम्प्यूटरीकरण किया जाना है कि प्री-पैकेज्ड-लेखांकन सॉफ्टवेयर मे उपलब्ध नहीं होने के कारण किया जाता है। एक संगठन जिसे अधिकतर कार्यात्मक दो क्षेत्रों को समाहित करने वाले एकीकृत सॉफ्टवेयर पैकेज की आवश्यकता होती है। उसके पास सम्पूर्ण अनुकूलता प्रणाली के भाग के रूप मे वित्तीय मापांक हो सकते हैं। एक सॉफ्टवेयर के विकसित करने के निर्णय से पहले व्यावहारिक अध्ययन करना आवश्यक

© The Institute of Chartered Accountants of India

है। एक कस्टमाइज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर का जीवन चक्र व्यावसायिक प्रतिष्ठान के प्रयोगकर्त्ता को दी जाने वाली आवश्यकताओं के साथ शुरू होता है। इन प्रयोगकर्त्ता को दी जाने वाली आवश्यकताओं पर आधारित प्रणाली विश्लेषण एक आवश्यकता विशिष्टीकरण तैयार करते हैं, जो प्रयोगकर्त्ता प्रबन्धन द्वारा अनुमोदन हेतु दिया जाता है। आवश्यकता सम्बन्धी विशिष्टीकरण के बाद अनुमोदित होने पर रूपांकन प्रक्रिया शुरू होती है। विकास जीवन चक्र प्रणाली के अन्य अवयवों के अन्तर्गत विकास परीक्षण तथा उनको लागू करना शामिल होते हैं।

8.1 कस्टमाइज्ड लेखांकन पैकेज के लाभ (Advantages of a Customised Accounting Package)

एक कस्टमाइज्ड लेखांकन पैकेज के लाभ निम्नांकित हैं—

(1) कार्यात्मक क्षेत्र में अन्तर्गत न शामिल होने वाले अन्य कार्य क्षेत्र कम्प्यूटरीकृत किये जा सकते हैं।

(2) आँकड़े सम्बन्धी प्रविष्टि की सुगमता हेतु इनपुट प्रपत्रों से मिलते-जुलते दर्जी-निमित्त इनपुट स्क्रीन्स हो सकते हैं।

(3) रिपोर्ट व्यावसायिक प्रतिष्ठान के विशिष्टीकरण के अनुसार हो सकती है। रिपोर्टों की सूची में अनेकों अतिरिक्त एन आई एस रिपोर्टें शामिल की जा सकती हैं।

(4) एक व्यक्तिगत प्रतिष्ठान की विशेष आवश्यकताओं के किये उपयुक्त इनपुट डिवाइसेज के तौर पर बार-कोड स्केनर्स प्रयोग किये जा सकते हैं।

(5) प्रणाली कम्पनी के संगठनात्मक ढाँचे से मिलती-जुलती एवं उपयुक्त हो सकती है।

8.2 प्रथागत लेखांकन पैकेज के दोष (Disadvantages of a Customised Accounting Package)

प्रथागत लेखांकन पैकेज में निम्नलिखित दोष उत्पन्न हो सकते हैं

1. प्रथागत लेखांकन पैकेज एक अधूरी एवं दोषपूर्ण प्रणाली है जिसमें आवश्यक विशिष्टीकरण अधूरे या संदिग्धार्थक होते हैं।
2. अपर्याप्त जाँच के कारण सॉफ्टवेयर में कीटाणु (वायरस) रह जाते हैं।
3. प्रलेखीकरण अपूर्ण (अधूरे) होते हैं।
4. प्रणाली में लगातार अपूर्ण बदलाव की प्रक्रिया करने से प्रबन्ध प्रणाली को समझौते करने पड़ते हैं।
5. विक्रेता के वचनबद्धता के कारण वह सॉफ्टवेयर की सहायता प्रदान करने में अनिच्छा प्रदर्शित करता है।
6. विक्रेता एक कानूनी दस्तावेज के सोर्स कोड अथवा ऐंटर करने के प्रति अनिच्छा प्रकट करता है।
7. अपर्याप्त नियन्त्रण सीमा होती है।
8. विक्रेता की समस्या या अपर्याप्त परियोजना प्रबन्ध के कारण सॉफ्टवेयर को पूर्ण करने में देरी होती है।

प्रथागत लेखांकन पैकेज का चुनाव विक्रेता के प्रस्ताव के आधार पर किया जाता है। प्रस्ताव का मूल्यांकन उसकी उपयुक्तता, पूर्णता लागत एवं विक्रेता के प्रारूप से होता है। सामान्यतः जिस विक्रेता का डिलीवरेवल्स सम्बन्धी अच्छा अभिलेख मौजूद होता है, उसी को यह चुनाव दिया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

9. उद्यम संसाधन के एक रूप में लेखांकन सॉफ्टवेयर
(ACCOUNTING SOFTWARE AS PART OF ENTERPRISE RESOURCE PLANNING (ERP)

बड़े संगठन उद्यम संसाधन योजना को चुनते हैं। जहाँ वित्त निश्चियिका के तौर पर आता है। ई. आर. पी. एक एकीकृत सॉफ्टवेयर पैकेज है जो पूरे उद्योग के पार व्यवसाय प्रक्रिया की देख रेख करता है।

9.1 ई. आर. पी. के उपयोग के लाभ (Advantages of Using an ERP)

खातों को बनाए रखने के लिए ई. आर. पी. का उपयोग करके लाभ इस प्रकार हैं—

1. **मानकीकृत विधियाँ एवं प्रक्रियाएँ**—एक ERP एक सामान्यीकृत पैकेज जो कोई विशेष मॉड्यूल के आम कार्यकलापों के अधिकांश को शामिल किया गया है।
2. **मानकीकृत रिपोर्टिंग**—वांछित रिपोर्टों के बहुमत एक ERP पैकेज में उपलब्ध है। इन रिपोर्टों को उद्योग में मानकीकृत कर रहे हैं और आम तौर पर यह उपयोगकर्ता द्वारा स्वीकृत है।
3. **निरर्थकता नहीं**—यह एक एकीकृत पैकेज है जिसमें डेटा प्रविष्टि के दोहरेपन को दूर रखा जा सकता है।
4. **बेहतर जानकारी**—अधिकाधिक जानकारी पैकेज के माध्यम से उपलब्ध है।।

9.2 ERP के दोष निम्नलिखित हैं (Disadvantages of an ERP)

1. **कम लचीलापन**—उपयोगकर्ता के लिए समय पर उनके व्यापार प्रक्रिया को संशोधित करने के लिए प्रभावी रूप से ERP उपयोग कर सकता है।
2. **कार्यान्वयन में अड़चनें**—ERP का कार्यान्वयन कर सलाहकार से कोई को पूरी तरह से व्यवसाय प्रक्रिया की सराहना करने के लए ERP का एक अच्छा कार्यान्वयन करने में सक्षम हो सक्षम नहीं हो सकता।
3. **अधिक बहुमूल्य**—ई. आर. पी. सामान्य रूप से एक राशि है जो छोटे और मध्यम संगठन की पहुँच से बाहर है। तथापि कुछ ऐसे ERP हैं जो बाजार में मामूली कीमत में आए हैं तथा यह छोटे तथा मध्य उद्योगों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।
4. **सॉफ्टवेयर की जटिलता**—आम तौर पर एक ERP पैकेज से चुनने के लिए विकल्प की एक बड़ी संख्या है, आगे पैरामीटर की स्थापना और विन्यास यह सामान्य उपयोगकर्ता के लिए थोड़ा जटिल बना देता है।

9.3 ERP का विकल्प (Choice of an ERP)

ERP का विकल्प निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है :

1. **संगठन के कार्यात्मक आवश्यकता**—ERP दूसरों से अधिक चुना जाता है क्योंकि यह एक संगठन की आवश्यकताओं का अधिक समानबल है।
2. **ERP में उपलब्ध जानकारियाँ**—एक संगठन प्रतिवेदन आवश्यकताओं की कल्पना करता तथा ऐसे विक्रेताओं को चुनता है जो कि इन प्रतिवेदन आवश्यकताओं को पूरा कर सके।
3. **विक्रेता की पृष्ठभूमि**—सेवाओं और एक विक्रेता का वितरण योग्य रिकार्ड विक्रेता चुनने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. **लागत की तुलना**—बजट की कमी और एक उद्यम की निधि स्थिति अक्सर एक विशेष पैकेज को चुनने के लिए निर्णायक कारक बन जाता है।

10. लेखांकन कार्य सम्बन्धी आउटसोर्सिंग
(OUTSOURCING OF ACCOUNTING FUNCTION)

Recently a growing trend has developed for outsourcing the accounting function to a third party. The consideration for doing this is to save cost and to utilise the expertise of the outsourced party. The third party maintains the accounting software and the client data, does the processing and hands over the report from time to time.

10.1 लेखांकन कार्यों आउटसोर्सिंग के लाभ (Advantages of Outsourcing the Accounting Functions)

लेखांकन कार्यों की आउटसोर्सिंग के लाभ निम्नलिखित हैं—

1. संगठन है कि आउटसोर्सिंग व्यवसाय गतिविधि के कोर क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए समय बचाने के लिए सक्षम हैं।
2. संगठन तीसरे पक्ष की लेखांकन कार्य के उपक्रम में विशेषता का उपयोग करने में सक्षम है।
3. आँकड़ों का संग्रह एवं रख-रखाव ऐसे व्यावसायिक लोगों के हाथों में रहता है।
4. संगठन कुंजी लेखांकन स्थिति में संगठन छोड़ने वाले लोगों के बारे में संगठन को परवाह नहीं हैं।
5. ऐसा प्रस्ताव अक्सर आर्थिक रूप से समझदार सिद्ध होता है।

10.2 लेखांकन कार्यों की आउटसोर्सिंग सम्बन्धी हानियाँ (Disadvantages of Outsourcing the Accounting Functions)

(1) **संगठन के आँकड़ों को तीसरे पक्षकार के हाथों में सौंपे जाते हैं**—यह दो तरह के मामलों को उत्पन्न करता है, एक सुरक्षा का तथा दूसरा विश्वसनीयता का। यह तीसरी पार्टी के समंक केन्द्रों पाया जाता है।

(2) **अपर्याप्त सेवाओं का दिया जाना**—तीसरा पक्ष मानकों वांछनीय को पूरा करने में करने में असमर्थ हैं।

(3) लागत शुरू से अंत तक परिकल्पित हो सकती है।

(4) **सेवाएँ प्राप्ति में विलम्ब**—तृतीय पक्ष सेवा प्रदाताओं के प्रति प्राथमिकता के आधार के रूप में इस तरह के प्रसंस्करण के ग्राहकों की संख्या को पूरा कर रहे हैं।

आउटसोर्सिंग विक्रेता का चयन इन विक्रेताओं से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर किया जाता है। उक्त प्रस्ताव मूल्यांकित होते हैं और निर्णय अधिकतर निम्नलिखित कसौटी के आधार पर किए जाते हैं :

(1) दी गई सेवाओं की राशि तथा उपरोक्त सेवाएँ आवश्यकताओं से मेल खाती हैं।

(2) विक्रेता की पृष्ठभूमि तथा यश।

(3) विभिन्न प्रस्तावों की तुलनात्मक लागत।

(4) गुणवत्ता सम्बन्धी आश्वासन।

© The Institute of Chartered Accountants of India

कम्प्यूटरीकृत परिवेश के अन्तर्गत लेखांकन हेतु सम्भावित विकल्पों के बारे में विचार-विमर्श के पश्चात् यह समझना महत्वपूर्ण है कि विकल्पों जैसे—स्प्रेड शीट पैकेजेज, प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर, कस्टमाइज्ड लेखांकन पैकेज, ई आर पी (ERP) पैकेज तथा तीसरे पक्ष की लेखांकन कार्य की आउटसोर्सिंग सम्भावित आंकलन निम्नलिखित है—

(1) **व्यवसाय संचालन का आकार**—व्यवसाय संचालन का आकार छोटा अथवा मध्यम होने की दशा में व्यावसायिक प्रतिष्ठान प्री-पैकेज्ड एकाउण्टिंग सॉफ्टवेयर का विकल्प ले सकते हैं।

(2) **संचालन सम्बन्धी जटिलताएँ**—अनेकों कार्यात्मक क्षेत्रों सहित संचालन मिश्रित एवं जटिल होने की दशा में जिनके लिए कम्प्यूटरीकृत की आवश्यकता हो, उनके बारे में सामान्यतः अनुकूलिक सॉफ्टवेयर अथवा एक ई आर पी (ERP) पैकेज का चयन उपयुक्त है।

(3) **व्यावसायिक आवश्यकताएँ**—प्रतिष्ठान की अनेकों अमानक आवश्यकता होने की दशा में अनुकूलित सॉफ्टवेयर ही विकल्प हो सकता है।

(4) **बजट सम्बन्धी नियन्त्रण**—विशिष्ट विकल्प सम्बन्धी चयन हेतु लागत मूल्यांकन भी एक निर्णयात्मक तथ्य हो सकता है। आमतौर पर स्प्रेड शीट एवं प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर अपेक्षाकृत सस्ते हैं। अनुकूलित सॉफ्टवेयर एवं ई आर पी उच्चतर लागत मूल्यांकन वाले पैकेज हैं।

11. सॉफ्टवेयर से रिपोर्ट तैयार करना

(GENERATING REPORTS FROM SOFTWARE)

लेखांकन रिपोर्ट तैयार करने हेतु स्प्रेड शीट सॉफ्टवेयर्स का उपयोग किया जा सकता है। प्रयोगकर्त्ता द्वारा फारमेट्स को निर्धारित करके रिपोर्टों को देखने अथवा मुद्रित करने में प्रयोग किया जा सकता है।

एक प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर के अन्तर्गत रिपोर्ट पैकेज से तैयार की जाती है।

लेखांकन अवधि के अन्तर्गत किसी विशेष तिथि पर रिपोर्टें पूरी होनी चाहिए। सामान्यतः रिपोर्ट्स के सम्बन्ध में यह विकल्प रहता है कि वह स्क्रीन पर देखी जा सके अथवा प्रिन्टर के माध्यम से मुद्रित की जाये अथवा फाइल में सुरक्षित रख दी जाए। प्रयुक्त सॉफ्टवेयर पर निर्भर है कि सुरक्षित सॉफ्टवेयर से बनी रिपोर्ट ज्यादातर एक पूर्ण रखी जाए। प्रयुक्त सॉफ्टवेयर पर निर्भर है कि सुरक्षित सॉफ्टवेयर्स से बनी रिपोर्टें ज्यादातर एक पूर्व निर्धारित फॉरमेट में होती हैं, परन्तु फिर भी कुछ सॉफ्टवेयर्स रिपोर्ट के फॉरमेट्स की निश्चित अनुकूलित की अनुमति देते हैं। उदाहरणार्थ, कम्पनी

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- **लेखांकन का महत्व—**
  - गति, शुद्धता शुद्धता विस्तार
  - त्रुटि कम
  - काम की प्रतिलिपि निकालें
  - तत्काल जानकारी
- **लेखा पैकेज—**
  - एक फ्लैट शीट पैकेज के प्रयोग द्वारा असुरक्षित,
  - सुरक्षित साझा का उपयोग करें।
  - सीमा—दोहरा प्रविष्टि स्वचालित रूप से पूर्ण नहीं है।
- **लेखांकन में कम्प्यूटर की भूमिका—**
  - नियन्त्रण संचालन
  - संचालन का निर्णायक अनुक्रम
  - लेखांकन संचालन।
- **पूर्व पैकज लेखांकन सॉफ्टवेयर के लाभ—**
  - स्थापित करने के लिए आसान है।
  - अपेक्षाकृत सस्ती है।
  - आसानी से प्रयोग।
  - बैकअप प्रक्रिया सरल है।
  - बहुत छोटे और मध्यम आकार के व्यापारों के लिए प्रभावी होता है।
- **पूर्व पैकेज लेखांकन सॉफ्टवेयर की हानि—**
  - विशिष्ट व्यवसाय के विशेष लक्षण कवर नहीं करता है।
  - सभी कार्य क्षेत्र को कवर नहीं करती है।
  - कस्टम शुरुआत ऐसे सर्वाधिक सम्भव नहीं हो सकता है।
  - उद्देश्य पर्याप्य नहीं है उत्पन्न सूचना के लिए।
  - सुरक्षा का अभाव
  - सॉफ्टवेयर में वायरस।
- **पूर्व-पैकेज लेखांकन सॉफ्टवेयर के चयन के लिए विचार—**
  - व्यापारिक आवश्यकताओं की पूर्ति
  - सूचनाओं की पूर्णता
  - आसानी से प्रयोग
  - लागत
  - विक्रयी की प्रतिष्ठा
  - नियमानुसार अध्ययन
  - ई. आर. पी एकीकृत सॉफ्टवेयर पैकेज व्यापार प्रक्रिया का प्रबन्धन पूरे उपक्रम के पार करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

❐ **ERP के लाभ**
- मानकीकृत प्रक्रियाओं तथा कार्यप्रणालियों
- मानकीकृत सूचना
- डेटा प्रविष्टि की प्रतिलिपिकरण से बचना
- ग्रेटर जानकारी की उपलब्धि।

❐ **एक ERP की हानियाँ—**
- कमजोर लचीलापन
- कार्यान्वयन बाधाएँ।
- बहुत महंगा
- सॉफ्टवेयर की जटिलता
- एक ERP के विकल्प
- संगठन की कार्यात्मक आवश्यकता।
- ERP में उपलब्ध सूचनाएँ
- विक्रेताओं की पृष्ठभूमि

❐ **लेखांकन कार्यक्रम की आउटसोर्सिंग लागत तुलना—**
- तीसरी पार्टी द्वारा लेखांकन कार्यक्रम करना।

❐ **लाभ—**
- समय की बचत
- विशेषज्ञ ज्ञान का प्रयोग
- व्यावसायिक लोगों के हाथ में डेटा का रखरखाव होता है।
- आर्थिक

❐ **दोष—**
- संगठन के डेटा तीसरी पार्टी को सौंपते है।
- अपर्याप्त प्रदत्त सेवाओं।
- उच्च लागत।
- सेवाएँ प्राप्त करने मैं विकल्प।

स्व-परीक्षण प्रश्न
(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त जबा ढूँढ़िए—

1. इनमे से एक को छोड़कर बाकी सब एक स्प्रैड शीट सॉफ्टवेयर के लाभ हैं :
   (अ) यह इस्तेमाल करने तथा समझने में आसान है।
   (ब) स्प्रैड शीट में गणना आसानी से की जा सकती है।
   (स) खातों का समूहीकरण तथा पुनः समूहीकरण करना
   (द) दोहरा लेखन प्रविष्टि स्वतः पूर्ण नहीं होती।

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. प्री-पैकेजेड लेखांकन सॉफ्टवेयर :
   (अ) विशिष्ट व्यवसाय की विशेषता को समाहित नहीं करता है।
   (ब) कार्यात्मक क्षेत्रों को समाहित नहीं करता है।
   (स) आसानी से स्थापित होता है।
   (द) ऊपर के सभी
3. ई. आर. पी. (ERP) :
   (अ) मानकीकृत प्रतिवेदन
   (ब) महंगा है
   (स) कम लचीला है
   (द) ऊपर के सभी

   [उत्तर 1. (द); 2. (द); 3. (द)।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

4. एक कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली का क्या महत्व है।
5. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली कैसे एक हस्तचलित प्रणाली से अलग है? संक्षिप्त में समझाएं?
6. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में नियमावली (संहिताकरण, कोड) क्यों पसन्द की जाती हैं?
7. कम्प्यूटर में समूहीकरण कैसे किया जाता है।
8. प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर का कैसे चुनाव करेंगे?
9. आप एक अनुकूल लेखांकन सॉफ्टवेयर कैसे चुनेंगे?

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

10. कम्प्यूटरीकृत खाता रखने के लिए एक उपकरण के रूप में स्प्रैड शीट के क्या लाभ और हानियाँ हैं?
11. प्री-पैकेज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर के क्या लाभ और हानियाँ हैं?
12. एक अनुकूलित लेखांकन सॉफ्टवेयर के लाभ और हानियाँ क्या हैं?
13. ई. आर. पी. पैकेज के क्या लाभ और हानियां हैं?
14. बाहरी स्रोत लेखांकन प्रणाली के क्या फायदे और नुकसान हैं?
15. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन (प्री-पैकेज्ड, अनुकूलित, ई.आर.पी. अथवा बाहरी स्रोत) निम्नलिखित में से सबसे उपयुक्त में क्या और क्यों होगा?
   (अ) लघु व्यापार उद्यम मुख्य रूप से व्यापार कर रहे हों।
   (ब) बड़े आकार की सिलाई दुकान
   (स) रोग की प्रयोगशला
   (द) भूमण्डलीय व्यवसाय करने वाली कम्पनी
   (य) शेयर दलाल
   (र) दवाइयों की दुकान।

© The Institute of Chartered Accountants of India